TABLE OF CONTENTS.

No.	Subjects.	Pages.
1.	Preface	1—18
2.	Exposition of Agamas Part I containing extracts with Vernacular translation	1—41
3.	Do. Part II containing extracts without translation	42-100
4.	Do. Part III containing notices of various topics connected with the system	101-116
5.	Supplement containing further extracts with annotations	117-172
6.	Part IV containing condemnatory remarks & opinions expressed by old & living Pundits	1—9
7.	Index to the work	11—24

आगम प्रकाश

एटले

तांत्रिक धर्मनो खुलासो



नि० प्र० कर्ताए

धर्म सुधारणा इछिनारना उपयोग वास्ते

बनावी प्रसिद्ध कर्यो.

अमदावाद मध्ये

फतासानी पोळमां समशेर बाहादुर छापखानामां

सवाइभाई रायचंदे छाप्यु.

संवत १९३०—सन १८७४.

प्रस्तावना.

आगमशास्त्रने मंत्रशास्त्र एवुं कहेछे ए शिवाय एने वाममार्ग पण कहेछे अने तंत्रमार्ग अने कौलमार्ग पण कहेछे. ए मार्गमां कर्म, उपासना, अने ज्ञान ए त्रणे छे, अने आ मार्गना ग्रंथ घणुं करीने शीवना नामथी रचेलाछे, अने केटलाएक नाथ संप्रदायना लोके रचेला छे. तेमां न्यास, मुद्रा, जप, पूज्या इत्यादिक कर्म बतावेलुं छे अने अनेक प्रकारनी देवताओ देवी, भैरव, इत्यादि वर्णन करीछे. केटलाएकने पंचांग एटले सहस्त्र नाम, स्तवराज, कवच, हृदय, अने पंजर ए पांचने पंचांग कहेछे अने तेनो पाठ करेछे. शिवाय पुरश्चरण विधी छे ते प्रमाणे नाना प्रकारनां गायत्रीनां अने नाना प्रकारना मंत्रनां पुरश्चरण थायछे. प्रथम जे आ मार्गमां माणस आवेछे तेने दिक्षा अपायछे तेनुं नाम पूर्णाभिषेक ने पट्टाभिषेक कहेछे. आ मार्गमां मुख्य जप, अजपाजप, एटले जे माणसना मोहोडामांथी श्वासोश्वास चालेछे तेमां सोहं, एवो शब्द थायछे ते २१६०० वार थाय छे एवी गणतरी छे. शिवाय पूजा विधीनांस्थल अने पद्धती घणीओ लखेलीछे. तेमां केटलेएक ठेकाणे वैदिक मंत्रनो उपयोग कर्योछे पण कर्मनी रीती जुदी जुदी छे. तेमां दमनक पूजा, दुतीयाग, कुमारी पूजा, योगीनीपूजा, मीथुनपूजा, पात्र स्थापन, तंतुविधान, इत्यादिक कर्म आव्येछे. केटलाएक ग्रंथ तंत्र नामना छे, केटलाएक रहस्य नामना छे, केटलाएक यामल, अने केटलाएक आम्नाय, केटलाएक कल्प नामना छे, आ बधाय ग्रंथ मेळवीए तो वेद, शास्त्र, पुराण,

मळी जेटला थशे तेटला छे, केटलाएक अनुष्टानमां सिद्धि लखीछे, जेम के जारण, मारण, उच्चाटण इत्यादि. अने ए बधाय अनुष्टानमां, मद्य, मांस, मत्स्य, अने स्त्री, अवस्य जोइए. अने मद्य मांस पात्रमां मुकीने तेनो विधी करीने भक्षण करेछे. तंत्रशास्त्रमां एवुं लख्युंछे के, मद्यने ब्रह्मशाप, कृष्णशाप, अने शुक्रशाप, थयाछे माटे पीवानुं बंध थयुं, पण तेनो शापोद्धार करवानो विधी लख्योछे, ते प्रमाणे करीए तो पीवामां पाप नथी. शिवाय तंत्रना परिभाषामां केटलाएक बीज मंत्र छे ते एक अक्षरनोज मंत्र थायछे. मंत्रशास्त्रीनुं बधुं कर्म जुदी प्रकारनुं छे एमना वरस, महीना, वार जुदा, योग जुदा, पुजा जुदी प्रकारनी, श्राध, गुरु तर्पण, दिक्षा, अंत्येष्टि ए सर्व जुदु छे अने देश परत्वे पुस्तको पण जुदां छे. जेवा के गौडपाठ, आंध्रपाठ, क्रेरलपाठ, गुर्जरपाठ इत्यादि जुदा जुदा थायछे. मुख्य पुस्तक चंडीपाठ ते मार्कंडेय पुराणमां अने कात्यायनी तंत्रमां छे ते पुस्तक लेइने तेना उपर नवचंडी, शतचंडी, सहस्त्रचंडी इत्यादिक होम मार्जन, तर्पण, जप, इत्यादिक प्रकारे करेछे, तंत्रमां दश महाविद्या ए मुख्य देवता गणायछे. अने कुंड मंडप करवाना ग्रंथ घणा छे ए प्रकरण बधु महादेवे उत्पन्न कर्युंछे. एवुं कहेवायछे. अने कर्ममां केटलाएक लोक त्रण प्रकार गणेछे, एक वैदिकी, तांत्रिकी, ने मिश्र, जेमां कांइ तांत्रिकी ने कांई वैदिकी आवेछे तेने मिश्र कहेछे, ब्राह्मण लोको ए तंत्रनी पोताना कर्ममां शेळभेळ एटली करीछे के, ते भाग जुदो काहाडवानो मुशकेल छे. नाना प्रकारनां मंत्रो अने मंत्रो दक्षण मार्गमां शेळभेळ थइ गयाछे. तेथी एम जणायछे के तंत्र मार्ग साथे ब्राह्मणोने वांधो

महोतो; वांधो होततो ब्राह्मण तंत्रमांनु कांई लेत नही पण तेम थयुं नथी, अजे तंत्र मार्ग एटले कौल मार्ग हिंदुस्तानमां घणे ठेकाणे चालेछे. अने ब्रह्मचारी, संन्यासी अने परमहंस अने अग्निहोत्री शास्त्री, पंडित इत्यादि घणा लोक गामोगाम ए मार्गमां छे पण तेमनो आचार गुप्त छे, तेथी ते प्रसिद्ध थता नथी, तेनो घणो तपास करीए त्यारे मालुम पडेछे, अमदावादमां बसें चारसें माणस शाक्त मार्गवाळा छे. तेज प्रमाणे नडीयादमां, वडोदरामां, भरुचमां, सुरतमां, पुनामां, सतारामां, करवीरमां पण ए लोक घणाछे काशीमां हजारो ब्राह्मण कौल अने शाक्त मार्गवाळाछे काश्मीरमां, बंगाळामां अने द्रवीड देशमां लाखो ब्राह्मण ए मार्गमांछे ज्यांहां ज्यांहां देवीनुं स्थानकछे त्यांहां त्यांहां एज मार्ग चालेछे अने मद्य, मांसनुं, नैवेद्य धरायछे बेचराजी, अंबाजी, काळका, हींगळाज, तुळजापुर, विंध्यावासिनी, कामाक्षी, मातापुर, कलकत्तानी काळी इत्यादी ठेकाणे ए धर्म चालेछे, वैष्णव लोक मद्य-मांसनो द्वेष करेछे माटे ते आवा ठेकाणे जता नथी पण गोसावी, अतीत, नाथ पंथी लोक ए ठेकाणे जायछे स्वामीनारायणनी शीक्षापत्रीमां जे देवने मद्य मांसनुं नैवेद्य थाय ते ठेकाणे दर्शन करवुं नहीं एवुं स्पष्ट रीते लख्युंछे. ते प्रमाणे सत्संगी लोक दर्शन करता नथी तोपण घणाएक लोक कार्य साधवाने वास्ते श्रद्धा राखेछे. रजवाडामां मंत्रशास्त्रीने अनुष्टान करावाने वास्ते राखेछे. कोई देशीराज्यमां मंत्रशास्त्री नथी एमतो नथी. ए मंत्रना अनुष्टान उपर लाखो रुपीया खर्च थायछे.

माटे आ आगम शास्त्रना अंदर शुंछे अने केवी प्रकारनुं भजन छे

अने केवा प्रकारना देवछे अने तेनी परीभाषा अने ग्रंथोनां नाम अने ते ग्रंथोमांथी काहाडेलुं तारण ए ग्रंथ कोणे करेला तेनां नाम अने सीद्धीनो प्रकार मुद्रा, अने बीज, विषे जेटलु मालम पडयु तेटलुं आ ग्रंथमां बताव्युछे ते उपरथी ध्यानमां आवशे.

हाल वैदिक कर्ममां, तांत्रिक कर्म बहु सेळभेळ थयुंछे. मूळ ग्रंथमां ए सेळ भेळ नथी, एटले ब्राह्मण अथवा सूत्र काढीने जोइए तो तेमां तांत्रिक विषय नथी, पण पाछळथी प्रयोगकीर थया तेमणे तंत्रनो विधी कर्म कांडमां दाखल कर्योछे, हालनी ब्राह्मणनी संध्या पद्धती जोइए तो तेमां न्यास. मुद्रा आसन विधी ने अर्ध्य प्रदान: इत्यदिक तंत्रमांथी लीधांछे प्राणायाम इत्यादिक योगशास्त्रमांथी लीधांछे जप. उपस्थान इत्यादिक वेदमांथी लीधांछे अने नाम स्मरण इत्यादिक पुराणमांथी लीधांछे हवे आ बधु जुदु काढवुं घणुं मुष्केलछे, तेज प्रमाणे कुंड मंडप विधी. लघुन्यास अने महाषोढान्यास इत्यादिक तांत्रिक विधीछे.

एम कहेछे के तंत्रना कर्ता नवनाथने चोराशी सिध आगळ थइ गयो तेमणे आ मार्ग चलाव्यो अने लाखो गंथ आ मार्ग उपर जे थयाछे तेथी एम मालुम पडेछे के घणा वर्ष सुधी ए काम चालतुं हतुं अने ए मार्गमां देव प्रसन्न थायछे अने मंत्र सिद्ध थायछे अने तेथी अनेक मन कामना पुरी थायछे एवी समजण घणा लोकोनेछे तेथी असलथी ए मार्ग साथे कांई ब्राह्मण लोकोए असलथी वेर बांधेलुं नही शंकराचार्य स्वामी पण शाक्त हता एवुं शंकरविजयथी मालम पडेछे कारण ग्रंथमां श्री चक्र पुजानी बहु तारीफ करीछे अने शंकराचार्ये स्थापन

करेलां श्री चक्र एमना मठ शृंगेरी वगेरे ठेकाणेछे द्वारकांमां पणछे एथी शकराचार्यना पेहेलां ए मार्ग चालतो हतो एम जणायछे केटलाएकनुं मत एवुंछे केज्यारे बौध अवतार थयो त्यारे तेमना उपदेशथी लोक त्यागी थइ गया ते एटला सुधी के कोई परणे नहीं, कोई लढे नहीं, कोई खेती करे नहीं, कोई शिक्षा करे नहीं सर्व व्यवहार बंध पड्यो केटलाएक तो हाथ पग बांधीने कर्म त्यागीने उपवास करीने एमने एम मरी गया एटले केवळ पाम्या ते वखत लोकोनी रुची व्यवहार तरफ करवा विशे शिवजीए कौल मार्ग कहाड्यो तेमां मद्य, मांसनी छुट आपी स्त्री एज परब्रह्म एम ठराव्युं भागवतमां लख्युंछे के.

विशां तु शिव दीक्षायां यत्रदैवं सुरासवम् ॥
नष्ट शौचामूढधीयो जटा भस्मास्ति धारिणः॥
भागवत स्कं. ४ अ. २ श्लोक. २

जेमना भजनमां मुख्य विषय सुरापान छे पद्म पुराणमां पाखंडोत्पतिना बे अध्याय छे तेमां शीव बोल्या छे के आ मार्ग लोकोने भ्रष्ट करवा वास्ते कर्योछे. कदापि ए वचन वैष्णव लोकोए लख्युं हशे तोपण एटलुं मालम पडेछे के बौध मत पछी ए नीकल्युं हशे, अने बहु दहाडा सुधी चाल्युं हशे, नहींतो लक्षावधी ग्रंथ क्यांथी आवे, आ मत चाल्या पछी फरी कुमारीलभट्टे पूर्व मिमांसा एटले वैदिक कर्म करावानो मत चलाव्यो तेमां केटलाएक कर्म जेमां बहु हिंसा हती ते काम्यकर्म ठरावी रद कर्या अने केटलाएक राख्या, अने ए कर्म कर्याथीज मोक्ष थायछे एवुं ठराव्युं. ए मार्ग केटलाएक वर्ष

सुधी चाल्यो त्यारपछी शंकरस्वामी आचार्य थया तेमणे उत्तर मिमांसानो उद्धार कर्यो अने एवुं ठराव्युं के आत्मा एज ब्रह्म छे अने कर्म कर्याथी मोक्ष यतो नथी पण ज्ञानथी थायछे. माटे कर्मथी ज्ञान मोटुं छे, कर्मनुं फळ स्वर्ग छे पण मोक्ष नथी. घणा एक भागे वेदांत अने कौलमत मळी आवेछे. कौलने राज्ययोग कहेवायछे, पांतजलीनुं योगशास्त्र छे तेने हटयोग कहेछे अने वेदांतने ज्ञानयोग कहेछे. अने गीतामां जे मत छे तेनुं नाम कर्म योग ए चार योगमां अंतर एटलु के राज्ययोगमां भोग करीने मोक्षे जवानी इछा राखेछे अने हटयोगमां देहने दंड करीने समाधी वीगरे साधन करीने मोक्षनी इछा राखेछे ज्ञानयोगमां वैराग्यथी मोक्षनी इछा राखेछे. अने कर्म योगमां जे कर्म वर्णाश्रम धर्मथी प्राप्त थयुं होय ते करतां मोक्ष थाय ए प्रमाणे ए चार योगना भेद छे. पद्म पुराणमां एवी कथा छे के पाखंड मत फेलावा वास्ते शीव अवतरशे, हवे ए कथा केटलाएक कहेछे के, वाममार्गने लागुछे, अने केटलाएक वैष्णव छे, ते अेम कहेछे के शंकराचार्यने लागुछे, कारण आत्माने ब्रह्म कह्यो अेथी मोटुं पाखंड कर्युं अेवुं मध्व संप्रदायना वैष्णवलोक कहेछे. बधाय वैष्णवनो मत अेवो छे के आत्मा अे ब्रह्म नथी पण परमेश्वरे निर्माण करेलो पदार्थ छे माटे तेणे परमेश्वरनी सेवा करवी अने परमेश्वरने धणी समजवो, अे मत विरुध जेटला मत एटला पाखंड छे, कौलीक धर्ममां बीजा बधायने पशु अने कंटक कहेछे अने आत्माने ब्रह्म रुप जाणेछे. अने जेटला विधी निषेधछे ते न मानवा अने केवळ स्वछंद वर्तणुक करवो अने बधाय पाश मुकी देवा अेवुं बताव्युं छे, सन्यासी परमहंसनो मत पण

एज छे. एज प्रमाणे अघोरीनो मत छे ते लोक हाल थोडा छे, पण आगळ ए घणा हता अने जंगलमां रहेता अने मुत्र विष्टा पण खाता. सिधपुर पासे एक अवघडनि स्थळी करीने गाम छे, त्यांहां जे अघोरीनो महंत हतो तेनुं कर्म एवुं हतुं के एक माटलामां वींछी, गरोळी, घो, सर्प इत्यादिक जनावर जे हाथमां आवे ते मारीने ए माटलामां मुकतो अने ते एनी मेळे कोही जाय, तेनो रस एक माणसना मडदानी कोपरीमां लेइने पीतो, ने माटलामां हाडकां रहे ते नांखी देई बीजां जनावर लावे. केटलाएक बळतां मुडदां कहाडीने तेनुं मांस खायछे अने केटलाएक मंत्र साधवा वास्ते दाटेली स्त्रीनुं मडदु काढीने स्मशानमां तेनुं आसन करेछे. एम कोइ करे नहीं माटे आज ज्यां मडदां दाटेछे त्यां चोकी बेसाडेछे, एज प्रमाणे मंत्रशास्त्री ढेड, भंगीना मडदां स्मशानमांथी काढेछे, एवी वात चालेछे. एवा अनेक आचार बिभित्स अने भयंकर अने धर्मशास्त्र विरुध मंत्रशास्त्रमां छे. मुख्यत्वे करीने शीव अने शक्ति अने तेमना नाना प्रकारना अवतारनुं भजन ए लोक करेछे. अने वेदमंत्रनु सामर्थ गयुं पण तांत्रिकमंत्रनुं हजु सामर्थ छे एम समजीने ए उपासना चालेछे, विष्णु ए शक्ति रुप छे एवुं ए मानेछे. हाल जे शीवनी प्रतिमा योनी लींग रुपे स्थापन करेछे ते मूळ तंत्रमांथी लीधेलीछे ते विषे पुराणमां अनेक कथा लखी छे. पण तेनुं मूळ तंत्रमां जणायछे, कारण प्रजोत्पादक अवयनी प्रत्यक्ष पूजा लखीछे, अने कुंड गोलांमृत ए एमना पंचमकारमां छे तेथी ए चाल पडी हशे माटे वैष्णव शीवनी पूजा करता नथी, ने तिर्थ प्रसाद लेता नथी. शीवनी मूर्ति होय तो मात्र दर्शन करेछे, वाम

मार्गनुं कर्मकांड बधु जुदु छे. प्रातःस्मरण, स्नानविधी, त्रिपुंड्रधारण भूशुद्धी, भूतशुद्धी, प्राणायाम, संध्या, जप, पुरःश्चरण, वारांगन्यास, अंतर मात्रीका, बहिर्मात्रिका, चित्रांन्यास, नाथादीविद्या, नित्यादीविद्या, मूलविद्या, तत्वन्यास, द्वारपूजा, तर्पण, दशविद्या न्यास, पात्र निर्णय, नित्य पूजा, सूर्यार्ध्य, तिर्थ संस्कार, गुर्वादि पूजन, दिक्षा, प्रायश्चित, निब पुष्प पूजा, दमनक पूजा, वसंत पूजा, श्री चक्र पूजा, दिक्षाकाळ, दिक्षा भेद, सर्वतो भद्र, पुण्याह वाचन; नांदी श्राध, कुर्म चक्र, नवयोनी, कौलश्राध, मंत्र शोधन, मंत्रोद्धार, नाथ पारायण, तत्व पारायण, नाम पारायण, पंचांबान्यास, महाशोढा न्यास, महा न्यास, संमोहन न्यास, सौभाग्य वर्धन न्यास, अंत्येष्टि, इत्यादिक कर्म वैदिक कर्मथी जुदुं छे, ते गुप्तपणे केटलाएक करेछे. अमदावादमां काकरीआ उपर भैरवनाथनी जगा छे, ते ठेकाणे वाममार्गनां कर्म थायछे, आवी जगाओ दरेक शहेरमां होयछे. ए कर्मकांडमां केटलाएक हाथना चाळा छे, तेने मुद्रा कहेछे, तेनुं नाम मच्छमुद्रा, कुर्ममुद्रा, महायोनी, कुश, तार्क्ष, धेनु, विद्रावणी, वशकरी, खेचरी, बाण, पाश, मुसल, शंख, कौस्तुभ, श्रवित्स, इत्यादि अनेक मुद्रानां नामछे. शाक्त लोक तीलक पण जुदी रीतनुं करेछे बे आंख वचे कुंम् कुंमनो पटो करेछे अने शाक्त शाक्तने मळे तो मद्य मांस अने माछलानी भेट करेछे ए प्रमाणे प्रसीद्ध रीते करता नथी तेथी शाक्त कोणछे ने कोण नथी ए मालम पडतु नथी पण मोटा मोटा शास्त्री, पंडित, वैदिया, ग्रहस्त सन्यासी, परमहंस, घणाएक ए मार्गमांछे केटलाएक कहेछे के एमना सामर्थ्यथी मद्यनु दुध करी बतावेछे, ने मांसनां फुल करी बता-

वेछे, अने माछलांनां केळां करी बतावेछे सीद्धाइनो अने करामतनो दावो ए लोक घणा राखेछे, आगळ जे गोपीचंद राजा हता तेणे मार्चेद्र नाथना उपदेशथी बधु राज्य अने राणीयोनो त्याग कर्यो अने एज प्रमाणे गोरखनाथे मुडदा जीवतां कर्यां एवी वातो लोको बोले छे.

वाम मार्गमां जे लोक होयछे ते देवी अने शीव वगर बीजा देवने नमता नथी ते एम कहेछे के अमे कोई देवने के माणसने नमस्कार करीशु तो ते तत्काल मरी जशे अने वैताल, भूत, यक्ष, यक्षणी, दत्त, हनुमान, इत्यादि सर्व देवता एमना ताबामा रहेछे, अने धारे तेने मारी शके मंदवाड लावे, चित्तभ्रम करे, एवुं कहेवायछे ते भोळा अने अज्ञानी मानेछे. भास्कराचार्य करीने काशीमा एक शाक्त हतो तेणे घणा ग्रंथ बनाव्याछे तेने कोइए जमवा बोलाव्यो नहीं तेथी बीजा लोकोने जमवा वास्ते जे रसोई तैयार थइ हती ते बधु नर्क थइ गयुं त्यारे नारायण दिक्षित पाटणकर आवीने नम्या अने भास्कराचार्यने लेईने घेर गया त्यारे ए बधु अन्न हतु तेवुं थइ गयुं एवी दंत कथाछे ए भास्कराचार्ये हाथी उपर मद्यना कुंभ चडावी अने वरघोडो काहाडीने काशी विश्वेश्वरने नवराव्या आज केटलाएक ब्राह्मण भांगनुं पाणी काढीने शविना उपर अभिषेक करेछे अने दक्षणमां शिवाजी राजा थया तेमना गुरु गणेशदेव करीने हता तेमनुं मंदिर माहुली क्षेत्रमां हाल पण छे एमनो संप्रदाय सतारा प्रांतमां चालेछे अने भास्कराचार्यनो संप्रदाय काशीमां चालेछे शाक्त लोकोनी पूजामां मद्य अने मांस इंडा अने मछ स्त्रीओ इत्यादि लाव्या विना पूजन थाय नहीं,

जे प्रमाणे वैदिक कर्ममां शरीर शुध्यर्थ प्रायश्चित करवाने वास्ते पंचगव्य एटले गायनुं छांण, मूत्र, दुध, घी, दही, एकत्र करीने पीएछे ते प्रमाणे देह शुध्यर्थ मद्य वीगेरे पीवामां आवेछे, तेनुं मार्जन तिर्थ समजीने बधाय अनुष्ठानमां करेछे दिक्षा, श्राध, पूजा, अंत्येष्ठि इत्यादि मद्य विना थती नथी मद्यने तीर्थ कहेछे. मांसने शुद्धि कहेछे मछने कदाले कहेछे. मद्यादिकने परम पवित्र गणेछुछे अने लेवाथी देवी प्रसन्न थायछे एवुं तंत्रशास्त्रमां लख्युंछे संस्कृत भाग आ पुस्तकने जोडेलोछे ते वांचतां आ बधी बाबतनो खुलासो थशे बधा वचननो अर्थ लखतां ठीक न पडे माटे ते भाग संस्कृत भाषामां राख्योछे तेना नमुना दाखल थोडां वचनोनो अर्थ प्रथम भागमां बताव्योछे.

जे लोक धर्मनी सुधारणा करवा चाहाय छे तेमना उपयोगने वास्ते आ ग्रंथ रच्योछे तेनो सार असार विचार तेमने करवो जोइए.

केटलाएक ब्राह्मण अनादि काळथी उपासक छे तेमना कुळमां परंपरागत ए उपासना चालेछे, अने केटलाएक राजा मंत्रशास्त्री ब्राह्मणना शिष्य थायछे, अने तेथी एम समजेछे के आपणुं बहु कल्याण थशे. गायकवाड सरकारना गणेश शास्त्री नाशिकर मल्हारराव माहाराजना दानाध्यक्ष हता, ए प्रसिद्ध उपासक हता. अने तेज प्रमाणे वडोदराना केटलाएक दीवान पण उपासक हता, अने नेटीव सरकारमां अनुष्टानी लोक घणा राखेछे. सयाजीराव महाराज पासे लाडबाभगत करीने दक्षणनो कडीयो हतो अने तेनी पासे बे चार द्रावीड ब्राह्मण हता, तेमणे महाराजने घणीएक सिद्धी बताव्याथी

लोकने राजा पाळेछे तेथी ए मार्ग चालेछे, दरेक शहेरमां ब्राह्मणनो एक चतुर्थांश शाक्त मार्गमां छे. तेथी ए मार्गनी क्रिया छानी गुप्त जगामां मध्य रात्रिने वखते करेछे. अने राजानो टेको मळे तो प्रसिद्ध पण थायछे, अने कोइ ब्राह्मण उपर मद्य प्राशननो आरोप आव्यो, तो जे लोक हमेश मद्य पीनारा तेज श्रेष्ट गणायछे अने तेज तेने प्रायश्चित आपेछे ए जोइने बहु आश्चर्य लागे छे. कह्युंछे केः—

वेश्यावेश्मसुसिंधुगंधिललतावक्त्रासवासोदिते ॥
शीलानिर्भरमन्मथोत्सवरसैरुन्निद्रचंद्रक्षपाः ॥
सर्वज्ञाइतिदिक्षिताइतिचिरंप्राप्ताग्निदावाइति॥
ब्रह्मज्ञाइतितापसाइतिदिवाधूर्तैर्जगद्वंचते. ॥

ज्यारे देशमां घोरतीमीर, निबिड, अंध्य, अने दारुण अज्ञान उत्पन्न थायछे त्यारे पाखडनुं धर्म थायछे, अने धर्मनुं पाखड थायछे, अने भोळा लोक वंचक गुरुथी छेतरायछे. आ गुजरातमां पूर्वे वैदिक धर्म हतो, पछी शाक्त धर्म चाल्यो, त्यारपछी वाममार्ग चाल्यो, त्यारपछी शैव धर्म चाल्यो, त्यारपछी वैष्णव धर्म चाल्यो. एवुं महीमनस्तोत्रमां कह्युंछे केः—

त्रयीसांख्यंयोगंपशुपतिमतंवैष्णवमिति ॥

हाल ए बधा धर्म उपर पाणी फरी वळ्युंछे, अने कोइ जाणतु नथी के मारो धर्म शो छे. त्यारेशी राजा अने प्रजा बेउ अज्ञानमां पड्यांछे, धर्म संबंधी पोताने मालम मळतुं नथी, आचार्य नथी, बधाय धर्मनां पुस्तको संस्कृतमां छे ते कोइना जाणवामां आवतां नथी

अर्थनो अनर्थ थयोछे. तेथी धूर्त अने धुतारा लोकोने घणुं फावेछे.

हालना घणाएक वैद अने जोशी इत्यादिक एम कहेछे के अमे उपासक छीए, तेथी अमने देवता प्रसन्न छे, एवुं कह्या विना राजा वगेरे मोटा लोक दवा लेता नथी अने एवुं ज्यारे कहे त्यारे तेने देवस्तान प्रसन्न छे अने आपणे तरत गुण आवशे एम समजेछे. तेथी ए लोक तथा शास्त्री, पंडित, मांत्रीक लोकोने गुरु करीने दिक्षा ले छे. तेमानां केटलाएक राजा लोकोने यंत्रो, तावीजो, अंगारा, तइयार करी आपेछे, ते बांध्याथी आपणुं कल्याण थशे एम राजा समजेछे.

मंत्रशास्त्रने बंगाली विद्या पण कहेछे एनुं कारण बंगाळमांथी गौड ब्राह्मण गुजरातमां अने दक्षणमां आवी ए विद्यानो प्रसार करता तेथी ए नाम पडयुंछे आजे मंत्रशास्त्रना ग्रंथ घणाएक बंगाळामांछे, अने केरल देशमांछे, ते हजी आणी तरफ आव्या नथी, गुजरातमां डभोई, पावागढ, अमदावाद, पाटण, ए ठेकाणे काळीकानुं स्थापन कर्युंछे ते बंगाळी ब्राह्मण हिंदु राजाना वखतमां आ देशमां आव्या तेमणे केटलाएक चेला कर्या अने केटलाएक ग्रंथ प्रसीद्ध कर्या, तेमणे काळीकानुं स्थापन कर्युं, मंत्रशास्त्रना ग्रंथमां अनेक जनावरनी हिंसा लखीछे पण गायनी हिंसा कोई ठेकाणे लखेली जणाती नथी पण वेदमां ए घणे ठेकाणे लखेलीछे तेथी एम जणायछे के कळीयुगमां गोवधनो नीषेध थयो त्यारबाद मंत्रशास्त्र उत्पन्न थयुं हशे ए शास्त्रना अभिमानी जे लोकोछे तेमने एक गुप्त जगो अने एक शक्ति एटले स्त्री अवस्य जोइए तेथी एमना बद्धा अनुंष्ठान चालेछे. पंचम-

कारने प्रथमा, द्वितीया, त्रितीया, चतुर्थी, पंचमी एम पण कहेछे. वधा पदार्थ कोक वखत प्राप्त न थाय त्यारे एक प्रकार एटले प्रथमा लेईने कर्म करेछे. कोई वखत बे प्रकार त्रण प्रकार मळता होय तो तेटलाज लेइने कर्म करेछे. पंचमी जेने अमृत कहेछे ते शक्तिथी उत्पन्न थायछे. माटे स्त्री संगने पद्म कहेछे एनुंचनाम दुतीयाग. शिव ए मार्गनु आचार्यछे एम मानेलुछे. तंत्र मार्गना ग्रंथ सर्व शिवोक्तछे तेथी एक प्रश्न उत्पन्न थायछे के शिवजीए आ पाखंड केम उत्पन्न कर्युं. न्याय एवोछे केः—

॥ अकारणमनुद्दिश्यनमंदोपिप्रवर्तते ॥

अर्थः—कारण विना मूढ पण कर्म करतो नथी. त्यारे कया कारणथी आवुं पाखंड उत्पन्न थयुं हशे ? अने लोके ए मान्य केम कर्युं ? अने जेणे पाखंड चलाव्युं ते देव के माणस समजवो ?

सर्व धर्मशास्त्र, नीति, सदाचारथी वाममार्ग विरुद्ध छे, एमां ज्ञातिभेद मानता नथी एटलुज नही पण विवाह विधि मानता नथी. स्त्री पुरुष छुटा थईने घट कंचुकीनो विधी करेछे तेमां गमे ते पुरुष गमे ते स्त्रीने लेइ जायछे. नग्न स्त्रीनी पूजा करेछे ते स्त्री ऋतुमति होय के भंगीण जातनी होय तो वधारे पुण्य गणेछे. तेनी पुजा, उछिष्ट भक्षण, अंगराग, करेछे.. भक्ष्या भक्ष्यनो विचार बिलकुल राखता नथी. वाममार्गी ग्रंथमां आवु कर्याथी मोटो लाभ थायछे एम लख्यु छे. ते उपर जनर रार्णाने आ धर्ममां लोक पेसे छे, ए उपरथी एम पण समजायछे, के लाभनी आशाथी माणस क्यांहां सुधी नीचू नायछे तेनु ठेकाणु नथी. लाभ थशे एवी समजण गमे ते लरी के

खोटी रीते थाय त्यारे अति नीच कर्म करतां पण माणस विहितु नथी. एवा बद्धाय माणस स्वभावथी नीचछे. अने हीणाछे. इतिहासमां एवां उदाहरणो घणां छे के एक माणसे थोडा लाभने वास्ते हजारो माणसनो वस्तिनु गाम कतल कर्यु, के बाळ्यु, के लुटयुं, अने लक्षा वधी माणसने दुःख सागरमां नांख्या. एवा दुष्ट जीव थयाछे ते प्रमाणे लक्षावधी जीवने सुख आपनारा, पण महात्मा थयाछे. मनुष्यने उछे-रवाने वास्ते घणो प्रयत्न लागेछे. पारका छोकराने कोई हजारो रुपैया आपतां पण उछेरे नहीं ते काम माबापना स्वभावमां ईश्वरनी प्रेरणा छे तेथी ए मुषकेल काम पार पडेछे अने हजारो माणस उछरीने मोटा थायछे अने ते एटला वधी पडेछे. के घणाएकनु पोषण थतु नथी एनुं कारण घणाएक लोक पैसा लंबाखावामां लग्न कार्यमां बगाडेछे अने प्रजा निरुपयोगी उछेरेछे, बद्धाय माबाप पोतानी प्रजा सद्गुणी बळवान् अने उपयोगी पडे एवी उछेरे तो दुनीयामां सारा माणस घणा थशे अने सारा माणसनी खामी बहुछे. कशा कामना नथी एवा नीरुपयोगी लोक हाल बहुछे ते रखडता फरेछे अने पेटने वास्ते गमे ते कर्म करवामां विहिता नथी. माटे केळवणीनु धोरण एवु जोईये के लोक उपयोगी अने सद्धर्मी थाय अने बद्धाय लोकोने केळवणी पोहोंचे एवी विस्तीर्ण जोइये. आ देशमां केळवणी समुळदी न होवाथी अनेक पाखंड चाल्यां अने प्रजा दुष्ट थई एमनो मोटो पराक्रम एटलोज के आपसमा लढउ अने एक बीजाने दुःख देउ, एक बीजानो इतबार नथी. वडोदरा जेवुं मोटुं राज होय तेमां मुछदी का-मदार, दरकदार, सरदार विगेरे एक बीजाने साथे वेर बांधिने एक

बीजानो नाश करेछे. बे जणानुं एक चित्त नथी. एज प्रमाणे न्यात जातमां पण वेर एटलुं थयुंछे के सुधारो कशो थतो नथी, एक बीजाने मारी खराब करीने स्वार्थ करेछे आ देशना लोक पशुथी नीचा थयाछे ए लोकमां जेटलु वेर अने दुष्ट बुद्धीछे तेटले जनावरोमां देखाति नथी. आवी स्थीती केम थई? ए विषे विचार करतां एटलुज मालुम पडेछे के विचार समुळदो गयो अने अविद्या एटले अज्ञान वध्यू एनो घटाडो थाय अने सद्धर्मनी वृद्धी थाय एम करवु जोईए.

देवी मानमां तिथिने तल कहेछे. मारने नाथ कहेछे महीनाना दिवस ३६ थायछे तेनो उच्चार "फमासे खयुगेप परिवृते" ए प्रमाणे करेछे. पारायण पांच प्रकारना छे. नित्यनाथ, चतुरंग, हंस, चक्र, देव, तेनुं पाळ एवूं छे केः—

निऱ्यापारायणमितिसर्वसिद्धिप्रदायकं ॥
हंसपारायणमितिपरमार्थप्रदंमहत्. ॥१॥
सौभाग्यरत्नतंत्र.

केटलाएक मंत्रने आगळ पाछळ बीज लगाडेछे. जे कामनार्थे मंत्रनो पाठ करेछे तेनो उच्चार फरी फरी करेछे. तेने संपुटि पाठ कहेछे. ए प्रमाणे चंडिपाठनो साधारण पाठ करे त्यारे ब्राह्मण बे आना लेछे अने संपुटिपाठ सपल्लव करे तो भणतर घ्वारघणु थायछे. माटे आठ आना प्रतिपाठे लेछे. ए प्रमाणे नव करे तो नवचंडि केहेवाय अने सो वार करे तो शतचंडि केहेवाय. ए सर्व कर्म तंत्रोक्त छे अने केटलाएक ब्राह्मन तंत्र मार्गने निदेछे तो पण एवां ता

कर्म करेछे. असलथी गोठवण एवी छे के ईश्वरनि के बीजा देवनी प्रार्थना करवी होय तो ते ब्राह्मणना मोहथी करवी. बीजी ज्ञातनो माणस करे तो ते प्रार्थना ईश्वर के बीजो देव सांभळतो नथी. अने कोई ज्ञातना लोक स्वता प्रार्थना करे तो ते फळदायक थती नथी तेथी सर्व ज्ञातना तर्फथी प्रार्थना करवी होय तो ब्राह्मण द्वारे करे. ते पुण्य के प्रार्थना ब्राह्मण यजमानने आपेछे. कोकना घरमां मूळ नक्षत्र उपर छोकरु अवतर्युं होय तो मुळशांति करेछे. एटले ब्राह्मणने बोलावी तेमनी प्रार्थना करेछे के आ मूळ नक्षत्र उपर छोकरु थयुं तेथी बीमछे एवु तमे कहोछो माटे तमे बेशिने आ विघ्न टाळवानो उपाय करो एनु नाम "वरुणी" आ प्रमाणे विनंति कर्यापछि शांतिना पुस्तकमां जे देव नेमेलो होय तेनु "आवाहन" एटले बोलावीने तेने पुजा जप होम अर्पण करीने संतुष्ट करेछे तेथी यजमान समजेछे के आपणू विघ्न गयुं. कदापि यजमान न माने एवो होय तो ब्राह्मण घरनी स्त्रीयोने कहेछे के मूळ उपर छोकरो आव्यो तेथी धणीने मोटू विघ्नछे अने पैशा सामु जोइने शांति न करशो तो तमे जाणो थोडामां करवी होय तो च्यार ब्राह्मण तेडावीने पांच रुपैया खर्च करो तो सर्व शुभ थाय तमने छोकराने वद्धायने सारुं. ए सांभळीने स्त्री काची बुद्धिनी होय तो धणीने त्रास आपेछे अने खर्च करावेछे. ए प्रमाणे लग्नमां पण अनेक शांतिओ शुरु करावेछे, वर कन्यानु टिपणू जोइने मंगळ अनिष्ट छे तेनी शांति करीने लग्न करो एम बतावेछे. ए प्रमाणे वद्धाय काममां गोरनो लागो लागेलोज होयछे.

शांति छे, ते करता ते रोग छुटि जायछे. अने पर्जन्य पडेछे ए प्रमाणे ग्रंथोमां लखेलुंछे. पण ए सर्व कर्म ब्राह्मण मार्फत करवुं जोइए, अने सर्व कर्मना अंते ब्राह्मण जमाडवा जोइए, नही तो करेलुं कर्म व्यर्थ जायछे. देवता पासे जे फिरयाद लै जवी होय तो ते ब्राह्मणने कहेवी एटले ते देव पासे दाखल करेछे. अने देव पण जे प्रमाणे ब्राह्मणनो संतोष राखे ते प्रमाणे जवाब देछे. माटे वधारे ब्राह्मण जमाडे अने वधारे दक्षणा देतो सारुं. माटे पोतानी शक्ति प्रमाणे कसर न करवी. लख्युंछे केः—

॥ वित्तशाठ्यंनकुर्यात् ॥

ब्राह्मण धर्म जेवुं कोइ पण धर्ममा साधन नथी, जे पुछो तेनो जवाब शास्त्रमां छे. हाथथी दीवी पडे तो तेनी पण शांति छे, तेनुं नाम "दीपपतन शांति". मरती वखत ब्राह्मणने बोलावो तो पैसाथी लाख रुपैया खर्च करावीने मोक्षे मोकलि दे. गरीबने प्रमाणे. मोटांने मोटा प्रमाणे रस्तो बतावे, कोइ वातनी ना के चण नथी. तकरार के विचार करनार माणस मात्र न जुए, ते जवाब नथि. आ केम के एनुं कारण शुं ए पुछवानो शास्त्रमां हुकम नथी, एवुं पुछे तेने नास्तिक, शास्त्र निंदक कहेवो. तकरार विना सांभळो तो शास्त्रमां सर्व छे. बकरो होमवो होय तो ते पण चंडी पाठमां छे. कोळुं कापवुं होय ते पण छे. जप करवो होय तो ते पण छे. मार्जन करवुं होय तो ते पण छे, जे मागो ते छे. एवी कामोनु क्यांहां मळशे ! जे कहे ते सांभळवानो करार मात्र कायम राखो

आ प्रमाणे हिंदु शास्त्रनी स्थिती छे, अने विशेषे करीने आगममां ए धोरण बहुज वधारी दीधुंछे.

वैदिक कर्म करता दसपट वाममार्गीनुं कर्मछे. ए मार्गमां पूजाने याग कहेछे. कालियाग नामनु अनुष्ठानछे. तेमां कालिना सहस्र नामथी याग करेछे. वद्वाप अनुष्टानमां न्यास मुद्राजप घणोछे. केटलाएक अनुष्ठानमां प्रेतासन मर्चा अने भिलावानो होमछे. जे माणसना नामथी कर्म करेछे ते माणसनो पुतळो बनावीने तेना ककडा होमेछे तेना आंगमां सुरी घालिने तेनी आख फोडिने मंत्र भणेछे. तेनुं नाम मारण किंवा अभिचार कर्म कहेछे वेदमां श्येन यागछे ते शत्रु मारवा विषेछे. पण आगम ग्रंथमां हजारो एवा अनुष्ठानोछे ते सर्व भोळा लोको सत्य मानेछे अने पाखंडि मंत्र शास्त्री लाभ मेळवेछे. ए प्रमाणे आ बाबतमां घणू तोफान चालेछे, वडोदरा जेवा शेहेरमां जईने तपास करो तो बुद्द मालम पडशे.

तो

धर्ण



आगम प्रकाश.

भाग १ लो.

वेदने नीगम कहेछे अने तेना पेटामां स्मृती, शास्त्र, पुराण, इतिहास, एटले भारत काव्य एटले रामायण इत्यादी ग्रंथ गणेलाछे. ए एकंदरने दक्षण मार्ग केहेछे; वळी तेने कर्म मार्ग पण केहेछे. तेथी उलटो मार्ग स्थापन थयो तेने वाम मार्ग केहेछे अने जे ग्रंथोमां ए मार्ग वीशे लखेलुंछे तेने आगम केहेछे; तथा तेने तंत्र अथवा मंत्र शास्त्र पण केहेछे. आ मार्गनो स्थापक मुख्य शीव हतो एम कहेवायछे. अने केटलाक ग्रंथोमां शीव गवरीनो संवाद पणछे. अने एज कारण थी एने वाम मार्गी श्रुति पण गणेछेः—

वैदिकीतांत्रिकीश्चैवद्विविधाश्रुतिकीर्तिताः ॥

मनुटीकाकार कुल्लुकभट.

आ शास्त्रमां वेद करतां वधारे मंत्र छेः—

सप्तकोटिमहामंत्राउपमंत्रान्यनेकशः

आ मार्गनुं माहात्म नीचे प्रमाणे मुजब वर्णन करेलु छेः—

कृतेश्रुत्युक्तआचारः॥त्रेतायांस्मृतिसंभवः

द्वापरेतुपुराणोक्तं॥ कलौआगमकेवलं ॥

सोऽपिनःश्रोतमेवेदा॥वेदेभ्योऽप्यागमंपरं ॥

वैष्णवादुत्तमंशैवं॥शैवाद्दक्षिणमुत्तमं॥
दक्षिणादुत्तमंवामं॥वामात्सिद्धांतमुत्तमं॥
सिद्धांतादुत्तमंकौलं॥कौलात्परतरंनहि॥

अर्थ—कृतयुगमां श्रुती मुजब आचार चालतो हतो तथा त्रेता युगमां स्मृति प्रमाणे चालतो हतो. द्वापरमां पुराण प्रमाणे अने कळीयुगमां फकत आगम मुजबज चालवुं:—

सर्व मार्गमां उत्तम मार्ग वेदनोछे अने वेद करतां वैष्णवी मार्ग श्रेष्टछे अने ते करतां शिव मार्ग श्रेष्ट छे; अने बधा मार्ग करतां दक्षीण मार्ग श्रेष्टछे. अने ते दक्षीण मार्ग करतां पण वाम मार्ग श्रेष्टछे. अने ते करतां सीद्धांत मार्ग श्रेष्टछे. अने ते करतां कौल मार्ग श्रेष्टछे अने ते सीवाय बीजो श्रेष्ट मार्ग नथी.

कौल एटले शु ते वीशे एवु लखेलु छे:—

कुलास्याब्रह्मणःशक्तिअकुलंब्रह्मईरितः
कुलाकुलनियोगेनकौलइत्यभिधियते॥

अर्थ—कुल एटले शक्ती अने अकुल एटले ब्रह्म. अने जेमां कुल तथा अकुल बे बीशेनी उपासना छे तेने कौल मार्ग कहेलो छे.

शक्तीनां रुप दशछे तेने दश माहावीद्या कहेछे तेनां नाम:—

१ काळि—श्यामा.
२ तारा.
३ षोडशी—त्रिपुरा.

४ भुवनेश्वरी—मंजुघोषा.

५ मातावित्या.

६ बगलामुखी

७ छिन्नमस्तका.

८ मातंगी.

९ धुमावति,

१० वहिरवी.

सदरहु नाममां प्रथम काळी छे तेनी उपासना बंगाळामां चाले छे. अने बीजुं तारानी उपासना काश्मीरमां चालेछे. त्रीजुं त्रीपुरानी केरल एटले मलबार देशमां चालेछे. चोथी भुवनेश्वरीनी उपासना चीन देशमां चालेछे एवुं ग्रंथमा लखेलुंछे. परंतु हाल चीनमां ए मार्ग होय एम जणातुं नथी. जे वखत ग्रंथमां लख्युंछे ते वखत चालतो हशे तो हशे. तंत्र मार्गियोए उग्र अने अमंगळ देवतानी कल्पना करी तेनी उपासना ठरावायी ते उपासना पण उग्र ठरावी छे. उपर जे महाविद्या लखीछे तेमां छठी बगलामुखी छे तेनुं धड माणसनुं छे तथा मुख बगलानुं छे. सातमी छिन्नमस्तका छे, तेने बीलकुल माथु छेज नही, फकत धडज छे. तेज प्रमाणे आठमी मातंगी छे ते भंगीयण छे. नवमी धुमावती ते धुमाडा रुपीछे. अने दशमी भैरवी एटले भयंकर. आ देवतानां ध्यान नीचे बे त्रण लख्यो छे ते उपरथी ते देवतानुं अमंगळपणुं जणाशेः—

घोरास्याशिरसाम्रजासुरुचिरान्मुन्मुकके

शावालि ॥ सृष्टयासृग्प्रवहेस्मशाननिलया

भुसोःशवालंकृति॥ श्यामांगकृतमेखला
शवकरैर्देविंभजेत्कालिकां ॥

गंडभेरुंड देवनु ध्यान

वंदेहंघोरघोरप्रकटितमहागंडभेरुंडासिंह्वं॥
व्याघ्रार्धक्रोडशाद्याः खगवरमृगराट्भल्लु
कास्यष्टवक्त्रं॥ द्वात्रिंशत्कोटिबाहुंर्जलमुस्त
लगदाशंखचक्रादिहेतुं॥ बिभ्राणंभीमदंष्ट्रं
शरभमुखगणान्भक्षयंतिनृसिंह्वं॥

वाराहिनु ध्यान

वाराहिंचप्रवक्ष्यामीमाहिपोपरिसंस्थिताम्॥
कपालमालिनींदेवींमुंडमालाविभूपिताम्॥
गृध्रस्थावायवस्थावानिर्मांसाविनतोदरीं॥
करालवदनातद्वत्कर्तव्यासात्रिलोचना॥
चामुंडाब्रह्मघंटावाद्विपंचिमंधराशुभा॥
दिग्वासाःकालिकातद्वद्रासभस्थाकपालिनी॥
सुरक्तपुष्पाभरणार्वाधनीध्वजसंयुता॥

अर्थः— जेना वाळ छूटा छे, स्मशानमां रेहेछे, जेनुं रुप कालुछे, हाथमां मद्द छे, एवी काळीकादेवी छे, नरसिंहने भक्षण कर-नारो सिंह पक्षी अने तेना हाथ बत्रीशकरोड एवु ए देवनु

वर्णन छे. वाराहीनुं वाहन पाडो छे. कपालमालिनी देवीनुं वाहन ग्रिध्र अने कागडा छे, अने तेनी कोटमां रुंडमाळा एटले मडदांना माथां कापी तेनी करेली माळा पेहेरेछे, अने शरीर मांस विनानुं सुकुंछे, तथा पेट भुखथी बेशी जई अंदर पेशी गएलुं अने मोहो फाडेलुं; अने चामुंडादेवी कमरमां घंटा बांधी वाघनुं चामडुं पहेरी फरेछे. अने काळीका छे ते नागी गधेडा उपर बेसेछे, अने रुंडमाळा पेहेरी ते उपर लालफूलनी माळा पेहेरेछे, अने तेना उपर सावरणीनुं नीशान धरेलुं होयछे.

ए मुजब अनेक देवी देवतानी कल्पना करी तेनी उपासना लखीछे, वाममार्गि लोक एम कहेछे के विष्णु छे ते देवीनुं रुप छे अने शीव छे ते पुरुप रुप छे. ते निचेना वाक्यथी जणायछेः—

॥ विष्णुर्योनिंकल्पतां॥ पुरुषोवैरुद्रः ॥

तेथी विष्णुना दश अवतार छे, ते दश महाविद्याज छे. कृष्ण छे ते कालीनुं रुप छे, अने रामचंद्र छे ते तारानुं रुप छे. अने तेज मुजब बधा ब्राह्मण शाक्त छे एम कहेछे. कारण.—

सर्वेशाक्ताद्विजाःप्रोक्तानशैवानचवैष्णवाः॥
आदिदेवीचगायत्रिउपासकाविमोक्षदा.॥ १ ॥

भा.—तमाम ब्राह्मण गायत्रीना भक्त छे, अने गायत्री आद्यदेवी छे, तेथी ब्राह्मणो तमाम देवीभक्त छे. वैष्णव के शीव नथी.

देवीनी उपासना बीजी उपासना करतां श्रेष्ट छे ते रिते एम कहेछे.—

गणेशंपूजयेद्यस्तुविघ्नस्तस्यनबाधते॥
आरोग्यार्थेचयेसूर्यंधर्ममोक्षायमाधव॥
शिवंधर्मार्थमोक्षायचतुर्वर्गायचंडिका.॥१॥
॥ कलौचंडिविनायकः॥

अर्थ.—गणपतीनी पूजा करेथी विघ्न जायछे, सूर्यनी पूजा करेथी आरोग्यता मळेछे, अने विष्णुनी पूजा करेथी मोक्ष तथा धर्म ए बे पुरुषार्थ मळेछे, अने शीवनी उपासनाथी धर्म, अर्थ तथा मोक्ष ए त्रण पुरुषार्थ मळेछे. अने देवीनी उपासनाथी बधा चारे पुरुषार्थ मळेछे.

कळीयुगमां गणपती अथवा देवी बेनीज पूजा करवी, बीजानी करवानी जरुर नथी एम लखेलुछे अने शीवे करेला जे वाममार्गीना तत्र ते वेदशास्त्र करतां श्रेष्ट छे एम पण लखेलुछे —

वेदशास्त्रपुराणानिसमस्तागणिकायथा॥
एकैवशांभवीविद्यागुप्ताकुलवधूरीव॥
हटदीपीका.

अर्थ —वेदशास्त्र पुराण इत्यादिक सर्व शास्त्रो कीसबणो स्त्रीयो जेवा छे, अने शंकरनी विद्या ते गुप्त कुलीन स्त्री जेवीछे

तंत्रशास्त्रमां कल्पीत मंत्र, कवच इत्यादिक रच्याछे, तेनो जप कर्याथी मोटी सिद्धी थायछे एम केटलाक माणस जाणेछे. ते मंत्रनां नाम —

१ मंत्र. २ कवच. ३ पंजर ४ स्तवराज.

५ सहस्त्रनाम. ६ हृदय. ७ दुर्गा. ८ रक्षा.
९ रहस्य. १० पद्धति. ११ पटल.

उपर मुजबना मंत्रना प्रकार छे, तेमांना थोडा निचे मुजब:—

शत्रुस्तंभनंशत्रुमुखस्तंभनंशत्रुमतिस्तंभनं
शत्रुणांवाग्जिव्हास्तंभनंकुरु ॥
ओंनमोभगवतेदक्षिणामूर्तयेस्वाहा ॥
समस्तमंगलानिभवंतुप्रतिकुलंमेनश्यतुअनुकुलंमेअस्तु.

कवच.

शिरोरक्षंतुब्रह्माणींमुखंमाहेश्वरीतिच ॥
कंठंरक्षंतुकौमारीऐंद्रिपातुभुजद्वयं ॥
चामुंडाहृदयंरक्षेद्वाराहीकटिमार्गिणी ॥
वैष्णवीपादमाश्रित्यसर्वांगेपुशिवात्मिका ॥
तस्माद्रक्षमहादेवीभद्रकालीनमोस्तुते ॥१॥

आवाहन पद्धति.

श्रीभवानिस्वकामेश्वरसहितायै-सांगायै-
संपरिवारायै-सशक्तिकायै-सवाहनायै-
सायुधायै-सर्वावरणसहितायै-आवाहयामि- ॥
कामदेवाय-द्रावणबाणाय-संमोहनबाणाय-
वशीकरणबाणाय-संदिपनबाणाय-संतापन
बाणायनमः॥

आ शिवाय गायत्री प्रमाणे नवीन गायत्री रचीछे ते एछेः—

ज्वरगायत्रि.

भस्मायुधायविद्महेतीक्ष्णदंष्ट्रायधीमहि ॥

तन्नोज्वरःप्रचोदयात् ॥

सुधागायत्रि.

सुधादेव्यैविद्महेकामेश्वर्यैधिमही ॥

तंन्नोतुष्टिःप्रचोदयात् ॥

मीनगायत्रि.

जलेश्वरायविद्महेमच्छजालायधीमहि ॥

तन्नोमीनःप्रचोदयात् ॥

बलिगायत्रि.

पशुपाशायविद्महेशिरछेदायधीमहि ॥

तन्नोबलिःप्रचोदयात् ॥

योग त्रण प्रकारनाछे. १ हटयोग—जे पातंजली ऋषीए वर्णन करेलोछे. २ कर्मयोग—जे भगवत गीतामा वर्णन करेलोछे. अने ३ राजयोग ते कौलशास्त्रमां वर्णन करेलोछे. आमां शृंगार अने भक्तीरस ए बंने एक करी बांधोछे अने पोते पोताने शीवरुप मानी तथा स्त्रीने वीष्णु के मायारुप मानी तेनीज पूजा करेछे, अने आ शास्त्रमां ज्ञाती धर्म मानता नथी. अने ढेड के भंगीआनी जातनी स्त्री होय तोपण तेनी पूजा करेछे अने तेनु ऊचीट खायछे. अने जेम

नीची, जातनी स्त्री होय तेम तेने मोटु तीर्थ मानेछेः—

वारंगनाप्रयागश्चरजकीपुष्करस्तथा ॥
चर्मकारीभवेत्काशीसर्वतीर्थारजश्वला ॥

रुद्रयामले.

अर्थ—कसबणने प्रयाग मुजबनु तीर्थ समजवुं अने धोबणने पुष्कर राजनु तीर्थ समजवुं अने चमारनी स्त्रीने काशी मुजबनु तीर्थ समजवुं अने अटकाववाळी स्त्री होय तो ते तमाम तीर्थ बरोबर समजवुं.

आ मार्गना पूजनमां पांच द्रव्य आवेछे तेने पंच मकार कहेछेः—

द्रव्यंमधुतथामत्स्यंमांसंमुद्राचमैथुनं
मकारपंचसंयुक्तंपूजयेत्भैरवेश्वरं ॥

देवीरहस्य.

अर्थ—दारु, माछलां, मांस, मुद्रा, अने स्त्री एटलां सहीत शीवनी पूजा करवी.

बीजा ग्रंथमां पूजा करवाने वास्ते अने उच्छीष्ट भक्षणने वास्ते जे आठ स्त्रीयो लखेली छे ते निचे मुजबः—

चांडालिचर्मकारिचमातंगीमांसकारिणी ॥
मद्यकार्त्रिचरजकीक्षौरकीधनवल्लभा ॥
अष्टैतान्कुलयोगिन्यःसर्वसिद्धिप्रदायकः ॥

देवीरहस्य.

अर्थ.—भंगीयण, चामडीआनी स्त्री, ढेढण, खाटकीनी स्त्री, कलाल

नी स्त्री, धोबण, हजामडी, अने शाहुकारनी स्त्री ए आठ कुल योगिनी केहेवायछे.

कौल धर्ममां एवुं वर्णन कर्युंछे के ए मार्ग बहु गुप्त राखवो तेनी विगत:—

वामेरामारमणकुशलादक्षिणेचारुपात्रं॥ अग्रे
मुद्राचणकवटकाशौकरीचोष्णशुद्धिः ॥
स्कंधेवीणासरसकवितासत्कथासद्गुरुणां ॥
कौलेधर्मोपरमगहनोयोगिनामप्यगम्यः ॥
मुखेहालाकरेमालावामेरामासुकोमला ॥
हृदयेकालिकादेवीयज्ञशालागृहेगृहे ॥

कुलार्णव.

अर्थ.—१. डाबी बाजु उपर सुंदर स्त्री अने जमणी बाजु उपर मदीरा भरेलु वासण अने आगळनी बाजुए जेवानुं पतराळु मुकवुं तेमां भजीआं तथा भुंडनुं मांस अने खभा उपर रागनुं वाजींत्र अने गुरुनी कथा गावी एवो वीलास कौळ धर्ममां वर्णवेलोछे, ने मोटा योगी पण तेनु गुप्तपणु तथा हेतु जाणवाने समर्थ नथी.

२. मोढामां मदीरा अने हाथमां माळा अने डाबी बाजु उपर जुवान स्त्री अने ह्रदयमां काळीकादेवीनुं ध्यान ए मुजब राखीए तो घेर घेर यज्ञनु पुण्य थाय.

कौल, शाक्त, वाम, अघोर, अने औघड, परमहंस ए छनु मत एक प्रकारनुंछे. ए लोक भक्षाभक्ष, पानापान के ज्ञाती धर्मनो भेद

राखता नथी अने तेमनी पूजामा मदीरा अवश्य जरुरनीछे एम लखुछे –

सदाशिवादयोदेवाः सुरायैववरंददुः ॥
येपिबंतिपरंपानपरमानंदकारणं ॥
तेसर्वेयांतिपरमंपदंशाश्वतमव्ययं ॥
विनागौडिविनामाध्वीसुरांयःपूजयेछिवां ॥
शिवंनारायणंरुद्रंसभवेनिरयास्पदं ॥
अदीक्षितःपशुर्देवीदीक्षितोप्यसुरःपशुः ॥
पिष्टोद्भौडीतथामाध्वी-पैष्टिमासवमुत्तमं ॥
पानकंचशुभंसर्वपूर्वाभावेपरःपरः ॥

देवीरहस्ये.

अर्थ.–जे वखत समुद्र मथन थयु ते वखत शीवादीक तमाम देवोए सुराने वरदान कर्युछे के जे तने पीशे ते मोक्षे जशे अने मदीरा शीवाय जे शीव के वीष्णुनी पूजा करे ते नर्के जाय, अने शेर डीथी–महुडाथी अने धानमाथी जे मदीरा रस थायछे ते उत्तम छे तोपण एक करता एक वधारे उत्तम छे.

आ मार्गवाळानी पूजामा श्री चक्रनी पूजानी प्रशसा घणी करेलीछे अने शंकरवीजयमा एम लख्युछे के, शंकराचार्य स्वामीए चार दीशामा जे चार मठ बांध्या तेमा श्रीचक्रनी स्थापना करी अने श्री चक्रनी पूजा करेथी मोक्ष थायछे, एम लखेलुछे. तेथी शंकरस्वामीनो मार्ग पण शक्ती उपासनानो हतो श्रीपर पृथ्वी देवोनी मूर्ति ने तेथी नवलइने ठेकाणे नवत्रीकोण लखेछे, अने बधे शक्तीनी ज

मीडुं मुकेछे, ए मार्गमां दिक्षानो संस्कार छे. ते प्रथम ए मार्गमा दाखल थनारने आपवामां आवेछे, ते विषे नीचे मुजब लखेलुंछे:—

देवीरहस्यमीशानिश्रुणुत्वंभक्तिपूर्वकं ॥
येनश्रवणमात्रेणकोटिपूजाफलंलभेत् ॥
विचार्यविधिवद्धीमान्दीक्षाकर्मसमाचरेत्॥
दीक्षितःसभवेज्ज्ञानीदीक्षाहीनोभवेत्पशुः॥
पर्वताग्रेनदीतीरेबिल्वमुलेवनेतथा ॥
द्वीपंवापरमपुंण्यंदेवानामपिदुर्लभं ॥
तत्रदेवीपरादेव्याःश्रीचक्रंतुविभावयेत् ॥
त्रिकोणंबिंदुसंयुक्तंषट्कोणंवृतमंडलं ॥
दीक्षायंत्रमिदंदेवीदिक्षाकालेप्रपूजयेत् ॥

देवीरहस्य.

शीव कहेछे के हे देवी घणी गुप्त वात तमने कहुछु जे सांभळ्याथी करोडवार पुजा कर्यानु फळ मळेछे. बुद्धीवान माणसे दीक्षा कर्म करवुं कारण दीक्षा ले ते ज्ञानी थाय, दीक्षा वीनानो माणस पशु जेवो जाणवो माटे पर्वत उपर के नदीतीर उपर अथवा बीलीना झाड तळे अथवा बेटमां जइने श्री चक्रनु पुजन करवु ते चक्र त्रीकोण तथा वचे मीडु एवु होयछे पछी छ खुणा अने तेनी आशपाश एक लीटी दोरेली होयछे ते गोळ होयछे. दीक्षानी वखते तेनी पुजा करवी:—

आ दीक्षानी वखत गमे ते जातनो माणस होय तेने ब्राह्मण गणवो:—

प्रवृत्तेभैरवेचक्रेसर्ववर्णाद्विजातयः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तःसर्वसिद्धिसमन्वितः ॥
इहलोकेश्रीयंप्राप्यभुक्त्वाभोगान्यथेप्सितान् ॥
परत्रपरमेशानिमृतोदेवीपदंव्रजेत् ॥

देवीरहस्य.

अर्थ—ज्यांहां भैरव चक्र थायछे त्यांहां सर्व वर्ण ब्राह्मण थायछे अने ते सर्व पापथी मुक्त थइ सर्व सिद्धिने पामेछे आ जन्ममां दोलत मळे छे अने मुवा पछी देवी लोकमां जायछे.

ए मार्गवाळा लोको एम केहेछे के मदीरा पीवामां मुळ कांई दोश नथी, परंतु ब्रह्मदेवे अने शुक्राचार्यए अने कृष्णे श्राप दीधो तेथी ते अपवित्र थई, ने तेथी लोक पीता नथी. ते श्राप नीवारण करवाना मंत्रने श्रापोद्धार अथवा शोधन केहेछे ते भण्याथी श्राप दुर थायछे, अने पछी ते मदीरा पीवामां दोष नथी. सदरहु मार्गमां केटलाएक उग्र अनुष्ठान लख्यांछे, तेमां मनुष्यना मस्तकनी खोपरीनुं पात्र करेछे, अने माणसना दातनो मुठा करेछे. अथवा सापना हाडकानी माळा करेछे, अने ते माळा स्त्रीना वाळथी परोवेछे, अने स्मशाननी राख शरीरे चोळेछे. अने प्रेतासन एटले मुडदा उपर बेसेछे अने जप करेछे. तेथी मोटी सिद्धी थायछे एम मानेछे. ते विषे नीचे मुजब लख्युछे:—

सुदिनेदेवीगत्वादौस्मशानंसाधकोत्तमः ॥
कपालंनरदंतानांमालाकंकणधारयेत् ॥

स्मशानभस्मलिप्तेनशुद्धेनसुरवंदिते ॥
आसनंसिंव्हचर्मादीकंकणंछिकचोद्भवं ॥
द्रव्यमासवतत्स्वाढ्यंभक्ष्यंमांसादिकंशिवे ॥
वामाचारइतिःप्रोक्तःसर्वसिद्धिप्रदःशिवे ॥

देवीरहस्य.

अर्थ.—सारो दिवस जोईए स्मशानमां जवुं, अने माणसनी खोपरीनुं पात्र करी तथा माणसना दांतनी माळा करी स्मशाननी राख शरीरे चोळी वाघना चामडानुं आसन करवुं, अने स्त्रीना वाळना हाथना कंकण करी मदीरा तथा मांस त्यांहां मुकवां, तेनुं नाम वामाचार तेथी सर्व सिद्धी मळेछे.

मद्यपान वीना कळीयुगमां कोइपण सिद्धी थाय नही, ते विषे नीचे मुजब लखेलुंछे:—

विनापानंनसिद्धिस्यात्साधकानांकलौयुगे ॥
संपूज्यसशिवांदेवींप्रवृतेभैरवार्चने ॥
तत्रपानंसुरादेव्यामहानंदप्रदायकं ॥
अहोरात्रंसुरापानंभोगदंमोक्षदंशिवे ॥

देवीरहस्य.

अष्ट भैरव जे केहेछे तेनां नामः—

महाकाल भैरव,	कालाग्निभैरव.
कराळभैरव.	विकराळभैरव.
संव्हारभैरव.	रुद्रभैरव.

कापिलभैरव. उन्मतभैरव.

आ शिवाय बटुकभैरव पण नवमो छे. तेज प्रमाणे नवदेवी पण छे तेने.नवदुर्गा कहेछे तेमना नामः—.

ब्राह्मी. नारायणी. कौमारी. अपराजिता. माहेश्वरी.
चामुंडा. वाराही. नारसिंहि. दुर्गा.

जे लोको ए मार्गमां नथी तेने वाममार्ग वाळा कंटक अने पशु केहेछे. अने जे दिक्षा लेइ ए मार्गमां दाखल थायछे तेने सीद्ध केहेछे, अने सीद्धनो आश्रय करी रेहेछे तेने साधक केहेछे. नवनाथ अने चोराशि सीद्ध ए मार्गमां थएलाछे, तेमना नाम आ मार्गवाळानी गुरु नामावळीमां पूजायछे. अने जे मुजब ग्रहस्थ लोको पोताना पित्रीनुं तरपण करेछे, ते मुजब आ मार्गना लोको गुरु, परमगुरु, परात्परगुरु अने परमेष्टी गुरु ए लोकोनुं तरपण करेछे. तेमज आ लोकोनुं पंचांग पण जुदी तरेहनुं होयछे. एमना महीना, नक्षत्र गणवानी रीत जुदी छे. अने एमनी भावना एवी के हुं शीवरूप थयोछुं अने मने कशो दोष लागतो नथी, ते विषे लखेलुंछे. ते नीचे मुजबः—

अलिपिशितपुरंध्रीभोगपूजापरोहं ॥
बहुविधकुलमार्गारंभसंभावितोहं ॥
पशुजनविमुखोहंभैरवीमाश्रितोहं ॥
गुरुचरणरतोहंभैरवोहंशिवोहं ॥ १ ॥

कुलार्णव.

अर्थ —दारु, मांस, अने स्त्री ए त्रण पदार्थनो उपभोग करवो एज

हमारी पूजा. अने कौलमार्गनां कुकर्मो करवां एज हमारो नीश्चय. अने बीजा लोक जे पशु जेवाछे, तेमनो त्याग करीने भैरवीदेवीनो आश्रय कर्येछे, अने गुरुना चरण उपर दृष्टी राखीने एम समजुछुं के भैरव अने शीव हुंज छुं.

वाममार्गि लोक चार दीवस बहु मोटा मानेछे. एक कृष्ण जन्माष्टमी, तेने काळरात्री केहेछे. मोहरात्री एटले काळीचउदश, त्रीजी शीवरात्री तेने माहारात्री केहेछे अने चोथी दारुणरात्री एटले होळीना पेहेले दीवसनी चउदश, ए चार रात्रीए पूजा इत्यादिक अनुष्ठान करे तो तुरत सीद्धी थाय एम आ वाममार्गि लोक गणेछे. नवरात्री चार प्रकारनी आ लोको गणेछे. आसो मासनी नवरात्रीने शारदी नवरात्री केहेछे. अने चइतर मासनी नवरात्रीने वासंती नवरात्र केहेछे. अने पोस मासना हेमंति नवरात्र तथा असाड मासनो ग्रीष्म नवरात्र ए रीते चार प्रकारनी नवरात्र गणेछे. तेमां आसोमासनी नवरात्री प्रसीद्धछे. तेमां जे आठम आवेछे तेने आ मार्गना लोक वीशेष मोटो दीवस गणेछे. तंत्रराज करीने ग्रंथछे तेमां गणीत वीषय लख्योछे ते मुजब कळीयुगनु वर्ष ए लोक गणेछे. एटले चालतु वरस १९७४ नुछे अने एक वरसना सोळ महीना अ आदी सोळ स्वर उपरथी गणेछे. अने एक मासना दीवस क,ख, आदी छतरीस व्यंजन उपरथी छतरीस गणेछे. अने एक मासमां वार नव ते चार वखत आवे. ए वारनां नाम:—

१ प्रकाश, २ विमर्ष. ३ आनंद. ४ ज्ञान. ५ सत्य.
६ पूर्ण, ७ स्वभाव, ८ प्रतिभ, ९ सुभग,

ए मार्गमां जे माणस प्रथम दाखल थायछे तेने पट्टाभीषेक तथा पुर्णाभीषेक एवा बे तरेहना संस्कार केहेछे. पट्टाभीषेकनी देवता काली छे ने कालीनां बीजां नाम छीनमस्तका, तारा, शामा ए पणछे. अने पुर्णाभीषेकनी देवता "श्री" छे ने तेनां बीजां नाम शोळशी, त्रीपुरा, सुंदरी ए पण छे.

त्रीपुराना अनेक भेदछे जेम के, त्रीपुरमालीनी, त्रीपुरसुंदरी, त्रीपुरसीद्धा, त्रीपुरअंबा, माहात्रीपुरसुंदरी, इत्यादी छे. एवीज रीते गणपतीनो अंदर पण जुदा भेदछे. तेनां नाम माहागणपती, उछिष्ट गणपती, वरद गणपती, वक्रतुंड गणपती, चींतामणी गणपती, सुंदरविनायक, सीद्धीवीनायक.

एवा एवा भेदथी अनेक देव तथा देवीओ कल्पनाए करीने नीर्माण करीछे, ते एकेकनुं प्रस्थान उतपन्न थयुंछे. बधा वेदशास्त्र तथा पुराण करतां तंत्रशास्त्रना ग्रंथ घणा छे, करोडो ग्रंथ लखेलाछे, ने तेनो अभ्यास लोको गुप्त रीते करेछे. दक्षण अथवा वेद मार्गना लोक तांत्रीक मार्गना लोकोनी निंदा करेछे, ते मुजबज तांत्रीक मतना लोक वेद मतना लोकनी नींदा करेछे. ते विषे कुलार्णवमां लखेछे केः—

वेदशास्त्रार्णवेघोरेरुह्यमानाइतःस्ततः ॥
षड्दर्शनमहाकूपपतिताःपशवःप्रिये ॥ १ ॥
परमार्थनजानंतिपशुपाशानियंत्रिताः ॥
पठंमहर्निशंदेवीपरतत्त्वपराङ्मुखः ॥ २ ॥
नजानंतिपरंतत्त्वंदर्वीपाकरसंयथा ॥

कुलधर्ममहामार्गगत्वामुक्तिपुरींव्रजेत्॥ ३

कुलशास्त्रमनादृत्यपशुशास्त्राणियोभ्यसेत्॥

स्वगृहेपायसंत्यक्त्वाभिक्षांमटतिदुर्मतिः॥ ४॥

कौलरहस्य.

अर्थ.—वेदशास्त्र तथा षड्दर्शन ए घोर समुद्र जेवांछे, ने तेमांजे लोक पडेछे ते पशु जेवांछे. ते लोक परमार्थ जाणता नथी. अने पशुनी माफक बंधनथी बंधायाछे, कडछी तमाम रसोइमां वपराय छे, परंतु तेने रसोइनो स्वाद बिलकुल आवतो नथी. वाममार्ग मुक्ती मेळववानो मार्ग छे, माटे ए मार्गनो अनादर करीने जे अज्ञानी पशुना शास्त्रनो अभ्यास करेछे ते घरमां तैयार थएली रसोइ मुकी बाहार भीख मागवा जायछे तेना जेवा समजवा.

वळी एम पण लखेछे केः—

शैवाद्याःश्वागमःसर्वेरहस्याःपरिकीर्तिताः॥

ममपंत्रमुखेभ्यश्चपंचाम्नायाःसमुद्गताः॥१॥

पूर्वश्चपश्चिमश्चैवदक्षिणश्चोत्तरःस्तथा॥

उर्ध्वाम्नायश्चपंचैतेमोक्षमार्गामकीर्तिताः॥२॥

एकाम्नायंतुयोवेत्तिसमुक्तोनात्रसंशयः॥

किंपुनःश्चतुराम्नायवेत्तासाक्षाच्छिवोभवेत्॥३॥

कौलार्णव.

अर्थ.—शैवागम अने बीजा आगम ए सर्व गुप्त राखवानी विद्या छे. शीव केहेछे के माहारा पाच मुखथी पांच "आम्नाय नीकळेला

छे. पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर अने उर्ध्व. ए पाचे मोक्ष मार्ग छे. एक आमनाय जे जाणे तेनो मोक्ष थायछे एमां काइ संशय नथी. तो जे पाचे जाणे ते साक्षात् शीवज थइ रेहेछे.

एज ग्रथमा लखेलु छे केः—

अनालोक्यमनाघ्रेयमस्पर्शंचाप्यपेयकं ॥
मद्यंमासंपशुनांतुकौलिकानांमहत्फलं ॥१॥
अविधानेनयोहन्यादात्मार्थंप्राणिनःप्रिये ॥
सवसेन्नरकेघोरेदिनादिपशुरोमभिः ॥२॥
तृणंवाप्यविधानेनछेदयन्नकदाचन ॥
विधिनागांद्विजंवापिहत्वापापैर्नलिप्यते॥३॥

अर्थ—पशु एटले धर्मशास्त्रना माननारा एम केहेछे के मद्यमांसछे ते जोवु नही तथा तेनो वासपण लेवो नही, स्पर्श करवो नही तथा ते पीवु अगर खावु नही. परतु कौलमार्गना लोकोने एज पदार्थथी बहु फळ तथा पुण्य थायछे. अवीधानथी केवळ पोताने सारु जे प्राणीनी हत्या करेछे तेने ते प्राणीना शरीर उपर वाळ होयछे तेटला दीवस सुधी नर्कमा रेहेवु पडेछे माटे वीधीवीना घास जेवी वस्तु पण कापवी नही. अने वीधीथी गोहत्या करवी पडेतो तेनु पाप नथी.

वळी एज ग्रथमा मद्यनां प्रकार बार तथा सुराना प्रकार त्रण अने तेज प्रमाणे मासना प्रकार पण त्रण बतावेलाछे ते नीचे मुजबः—

पानसंद्राक्षमाधुकंखर्जुरीतालमैक्षवं ॥
मधुत्थंसीधुमाध्वीकमैरव्यंनारिकेळजं ॥१॥

मद्यान्येकादशैतानीभुक्तिमुक्तिप्रदानीच ॥
द्वादशंतुसुरामद्यंसर्वेषांउत्तमंप्रिये ॥२॥
गौडिमाध्वीचपैष्टिचविज्ञेयात्रिविधासुरा ॥
सर्वसिद्धिकरीमाध्वीपैष्टिभोगप्रदायीनी ॥३॥
गौडिमुक्तिकरीज्ञेयासुराख्यादेवताःप्रियाः॥
विद्याप्रदेक्षवीहालाद्राक्षाराजप्रदाभवेत् ॥४॥
सुरादर्शनमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥
तद्गंधघ्राणमात्रेणशतक्रतुफलंलभेत् ॥५॥
तासामेकासमादत्स्यपूजाकर्मसमारभेत्
मांसंतुत्रिविधंप्रोक्तंखभूजलचरंप्रिये ॥६॥
यथासंभवमेप्येकंतर्पणार्थंप्रकल्पयेत् ॥
पितृदैवतयज्ञेपुवेदैर्याह्याविधीयते ॥ ७॥
मद्यमांसविहिनेननकूर्यात्पूजनंशिवे ॥
पिशितंमापमात्रंतुतदर्धमलिबिंदुना ॥ ८॥
तेनतर्पणमात्रेणकोटियज्ञफलंलभेत् ॥
शैवेचवैष्णवेशाक्तेसौरेसिद्धांतदर्शने ॥९॥
विनालिपिशिताभ्यांतुपूजनंनिःफलंभवेत् ॥
गुरुंस्मरन्पिबेन्मद्यंखादन्मांसंनदोषभाक्॥१०॥
यथाक्रतुपुविप्राणांसोमपानंनदुषितं ॥
मद्यपानंतथाकार्यंसमयेभोगमोक्षदं ॥११॥

आनंदातृप्यतेदेवीमूर्छयाभैरवःस्वयं ॥
वमनात्सर्वदेवांश्चतस्मात्त्रिविधमाचरेत्॥
उछिष्टंभक्षयेत्स्त्रिणाताभ्यांमुछिष्टमर्पयेत् ॥
स्त्रिवाथपुरुषोषंढोचांडालोवाद्विजोत्तमः॥
चक्रमध्येनभेदोस्तिसर्वेदेवसमास्मृताः॥
क्षीरेणसंहितंतोयंक्षीरमेवयथाभवेत् ॥
तथाश्रीचक्रमध्येतुजातिभेदोनविद्यते ॥
कुलार्णव.

अर्थ.—फनस, द्राक्ष, महुडा, खजुर, ताड, शेरडी इत्यादिक अगीयार पदार्थथी जे प्राप्त थायछे तेनुं नाम मद्य. ते पीवाथी आ लोक तथा परलोकमा सुख मळेछे. आ शीवाय त्रण प्रकारनी सुरा छे. ते गोळ, धान्य तथा महुडामांथी नीकळेछे, ते पीवाथी अनेक सिद्धी, भोग तथा मोक्ष, विद्या अने अधीकार मळेछे. वळी तेनुं दर्शन थयाथी सर्व पाप जायछे, ने तेनी वास लेवाथी सो यज्ञनुं फळ मळेछे, तेमांथी एक जातनुं पण मद्य लइने पूजा करवी. वळी मांस त्रण प्रकारनु छे, एक आकाशमा फरनारां पक्षीओनु. बीजुं जमीन उपर रेहेनारां पशुओनु तथा त्रीजु पाणीमा रेहेनारां प्राणीओनु, ए रीते त्रण प्रकारनुं छे, तेमांथी एक प्रकारनुं पण तर्पणमा लेवुं. पितृनुं कर्म अने देवना कर्ममां आ पदार्था लेवाने सारं वेदमां पण वीधी बनावेलो छे. माटे हे पार्वती देवतानुं पूजन पण मद्य, मांस वीना थतु नथी. माटे एक

अडदना दाणा जेटलुं मांस तथा तेना अडध जेटलुं मद्य पण लेवुं जोइए. अने उपर मुजब मद्य, मांस लेइ जे माणस तर्पण करेछे, तेने करोड यज्ञ कर्या जेटलुं फळ मळेछे. शीव, विष्णु, माता, सूर्य इत्यादिक देवतानुं पूजन मद्य, मांस वीना करेछे, तो तेनुं काइ फळ थतुं नथी. गुरुनुं स्मरण करीने मद्य, मांसनो उपयोग करेछे, तो तेने दोष लागतो नथी. यज्ञकर्ममां ब्राह्मण सोमवल्लीनो रस पीयेछे, तेने दोष लागतो नथी. तेज प्रमाणे पूजा कर्ममां वीधी मुजब मद्य पीवाथी कोइ दोष लागतो नथी. मद्यपानना आनंदथी देवो तृप्त थायछे, अने ते कर्याथी बेसुद्धी थाय तो भैरव तृप्त थायछे, अने उलटी थाय तो तमाम देवता तृप्त थायछे. माटे बधी तरेहथी पान करवुं. स्त्रीनुं छांडेलुं आपणे खावुं, तथा आपणुं छांडेलु स्त्रीने खवडाववु. स्त्री अथवा पुरुष, अथवा नपुंसक, चंडाळ एटले ढेड अथवा पवीत्र ब्राह्मण ए सर्वे देवता प्रमाणे पूजनना चक्र मध्ये समजवा. भेदाभेद बिलकुल राखवो नही. दुधमां पाणी नाखीएछीए ते पाणी दुध रुपी थइ जायछे, ते मुजब पूजा चक्रमां जातीभेद रेहेतो नथी.

नचक्रांकंनपद्मांकंनवज्रांगमिदंजगत् ॥
लिंगांगंचभगांकंचतस्माछक्तिशिवात्मकं ॥
शिवशक्त्योस्तुसंयोगोयस्मिन्कालेप्रजायते ॥
सुसाध्यकुलनिष्ठानांसमाधिःसविधीयते ॥
योगिनोमदमत्ताश्चपतंतिप्रमदोरसि ॥

मदाकुलाश्चयोगिन्यःपतंतिपुरुपोपरि॥
मनोरथंतुसंपूर्णकुर्वंतश्चपरस्परं॥
एतंचक्रगतावार्ताब्राह्निनैवप्रकाशयेत्॥
अलिमांसांगनासंगैयत्सुखंजायतेप्रिये॥
तदेवमोक्षविदुपामबुधानांतुपातकं॥
पिबेन्मद्यंपलंखाद्यंस्वेछाचारपरायणः॥
संदासंशयाहिनोयःकुलयोगीसउच्यते॥
आमिपासवसौरभ्यहीनंयस्यमुखंभवेत्॥
प्रायश्चित्तीसवर्ज्यश्चपशुरेवनसंशयः॥
अनाचाराःसदाचारःअकार्यंकार्यमुत्तमं॥
असत्यमपिसत्यंस्यात्कौलिकानांकुलेश्वरी॥
अपेयमपिपेयंस्यादभक्ष्यंभक्ष्यमेवच॥
अगम्यमपिगम्यंचकौलिकानांकुलेश्वरी॥
नविधिर्ननिपेधश्चनपुण्यंनचपातकं॥
नस्वर्गोनैवनरकःकौलिकानांकुलेश्वरी॥
दुर्गुणाःसगुणायंतेअकुलंतत्कुलायते॥
अधर्मःश्चापिधर्मतिकौलिकानां कुलेश्वरी॥
सर्वव्यापीयथासूर्यःसर्वभक्षीयथानलः॥
सर्वस्पर्शीयथावायुस्तथायोगीसदाशुचिः॥
सर्वधर्माधिकोदेवीकुलधर्मःशिवोदितः॥

नाहंवसामिकैलासेनमेरौनचमंदिरे ॥
कुलज्ञायत्रतिष्ठंतितत्रतिष्टामिभामिनी ॥
समाशंसंतिपितरःसुवृष्टिमिवर्षकाः ॥
अस्मत्कुलेषुपुत्रोवापौत्रोवाकौलिकोभवेत् ॥
मद्यमांसंचमत्स्यंचमुद्रामैथुनमेवच ॥
मकारपंचकंदेवीदेवताःप्रीतिकारणं ॥
मद्यकुंभसहस्त्रैश्चमांसराशिशतानिच ॥
नतुष्यामिवरारोहेभगलिंगामृतंविना ॥
यथारक्षतिचौरेभ्योधनधान्यवरादिकं ॥
कुलधर्मंतथादेवीपशुभ्यःपरिपालयेत् ॥
अंतःकौलंबहिःशैवंसभामध्येतुवैष्णवं ॥
कौलंसुगोपयेद्देवीनारीकेरफलांबुवत् ॥
नास्तिनास्तिपुनर्नास्तिमाशंककुलनायिके ॥
कुलधर्मप्रसंगंतुपशुनांपुरतःप्रिये ॥
पुस्तकंचकुलेशानिपशुगेहेननिक्षिपेत् ॥
नदद्यात्पशुहस्तेननपठेत्पशुसंनिधौ ॥
साधकानांहितार्थायभुक्तिमुक्तिफलैषिणां ॥
प्रकाशितंमयातेद्यगोपनियंप्रयत्नतः ॥

कुलार्णव.

चीन्ह पर्ण छे, ए चीन्ह मनुष उपरे जगतमां मालुम पडता नथी; परंतु स्त्री तथा पुरुष एवी बे जातीनां चीन्ह देखायछे. अने आ बे चीन्ह शीवना छे, तेथी आ बधी सृष्टी शीवनी छे एम सिद्ध थायछे. स्त्री तथा पुरुष ए बेना संयोगनेज कौलमार्गना लोक समाधी गणेछे. भैरवी चक्रमां स्त्री तथा पुरुष भेगां थायछे, अने जे कृत्य करेछे ते प्रसिद्ध करी कोइने केहेवुं नही. मद्य, मांस तथा अंगना एटले स्त्री ए त्रणेना संयोगने कौल मार्गवाळा मोक्ष केहे छे, अने जे लोको ए मार्गमां नथी तेओ तेने पाप गणेछे. मद्य पीवामां, मांस खावामां, अने मरजी मुजब चालवामां जे लोक कांई संदेह राखता नथी तेज खरा कौलमार्गना छे. जे माणसना मोंमां मद्य, मांसनो स्वाद नथी, ते माणसने पशु केहेवो. अनाचार छे ते सदाचार, असत्य ते सत्य छे, अने जे न करवानुं काम ते करवु ए बधी बातोनी कौलधर्म माननारने कांई चींता नथी. पीवानु नहीं ते पीये, अने खावानुं नही ते खाय, अने जे जातनी स्त्री पर शके नही, ते जातनी स्त्री करेतो तेथी कौलीक योगीने दोष नथी. तेमज ए धर्म माननाराने वीधी पण नथी, अने निषेध पण नथी. पुण्य पण नथी अने पाप पण नथी, स्वर्ग पण नथी अने नरक पण नथी. वळी ए धर्म माननाराने दुर्गुण ते सगुण, अने अधर्म ते धर्म छे. अने नीचा कुळनो होय ते उंचा कुळनो छे, जेवी रीते सूर्यनो तडको तमाम जगो उपर पडेछे, अने अग्निमां जे नाखीएछे ते तमाम बळी जायछे, अने वायु तमाम वस्तुने स्पर्श करेछे ते प्रमाणे कौलधर्म

माननारो हमेश शुद्ध छे. शीव देवीने केहेछे के, हे देवी सर्व धर्मथी श्रेष्ट धर्म कौल छे, ने ते मारो बतावेलो छे, अने हुं कैळाशमां रेहेतो नथी. मेरु उपर रेहेतो नथी. अगर कोई ठेकाणे रेहेतो नथी फकत जांहां कौलधर्मना लोको रेहेछे त्यांहां हे देवी हुं रहुछुं. घरडा मरी गएला जे पीतृ थयाछे ते एवी आशा करेछे के अमारा कुळमां कोई कौलीक थइ अमारो उद्धार करशे. मद्य, मांस, मच्छ, मुद्रा, अने स्त्री ए पांचमकारथी देवता प्रसन्न थायछे. अने मद्य तथा मांस बहुज अर्पण करे तो पण रज अर्पण कन्या वीना देवी तृप्त थती नथी. चोर धन, धान्य, अने द्रव्य चोरी करी लेइ जाय नहीं तेने सारु जेवी रीते छांनी वात राखीए छीए तेवी रीते आ कौलधर्मनी वात कोईने जाण पडवा देवी नहीं, अने छानी राखवी. मनमां कौल धर्मनी वात राखवी. अने बाहार शीवनु रुप राखवु अने वातो वैश्नवनी रीते करवी पण आ कौलधरमनी वात ए धर्ममां जे नथी एवा पशु जेवा माणसो आगळ करवी नही. अने आ धर्मनां पुस्तक पण एवा माणसोना घरमां मुकनु नही. तेमना हाथमां पण आपवु नही अने तेमना देखतां वाचनु पण नहीं. आ धर्म मे कह्योछे ते लोकना मोक्ष तथा सुखने अर्थे कह्योछे माटे तेने गुप्त राखवो.

कौल मार्गने वेदनु प्रमाण लाववाने वास्ते कौलोपनीषद नामनु पुस्तक प्रसिद्ध थयुछे तेमां लख्युंछे के:—

ओम्शन्नोकौलिकः॥शंन्नोवारुणीः॥शंनःशुद्धिः॥
अथातोधर्मजिज्ञासा, सर्वशांभवीरुपं, आज्ञा॥

यानविद्यते,अन्यायोन्यायः-अधर्मएवधर्मः॥
धर्मविरुद्धाकार्याः॥धर्मविहितानकार्याः॥
एपमोक्षः-प्राकटयंनकुर्यात्,नकुर्यात्पशुसंभाषणं॥
अंतःशाक्तःबाहिःशैवंःलोकेवैष्णवःअयमेवआचारः॥
लोकान्ननिंद्यात्,नियमान्नमोक्षःनतिष्टेन्नियमेन॥

कौलीकने शुभ थाय, मद्यमने शुभ थाय, लोहीमने शुभ थाय, धर्म जाणवानी इच्छा छे, सर्व शीवरुप छे, वेद कंई जाणता नथी, अन्याय ए न्याय छे, अधर्म एज धर्म छे, अधर्म होय तेज करवुं, धर्मने अनुकुल होय ते न करवुं, एज मोक्ष छे, ए मार्ग प्रगट करवो नही, अने ए धर्म न जाणनारा पशु छे, तेमनी जोडे आपणे बोलवुं नही, गुप्त रीते शक्तिनी उपासना करवी, देखाता शीव धर्ममा रेहेवुं, ने लोकोमा वैष्णवी मार्ग चालवो ए रीते चालवु. कोइनी नींदा न करवी, नीयमथी मोक्ष थतो नथी, माटे कोई रीतनो नियम पाळवो नही.

वाममार्गीनुं कौलाश्राद्ध थायछे ते विषे लख्युंछे केः—

कौलश्राद्धमीदंदेवीतत्वतंत्रेपुगोपितं॥
कर्तुश्चपितॄणांदेवीभवेत्फलमनंतकं॥१॥
पशोरपिकृतेश्राद्धेतस्यदीक्षाफलंभवेत्॥
मृतेन्हिपर्वसुतथातीर्थेश्राद्धसमाचरेत्॥२॥

मरण क्रिया जुदी रीतनी थायछे ते विषे लख्युछे केः—

अंत्येष्टिविधिनाहीनोमंडलस्थोनजायते॥
तस्मात्कुर्यात्प्रयत्नेनअंत्येष्टिविधिमुत्तमं॥

यस्यनक्रियतेदेवीनदीक्षाफलमश्नुते ॥

अर्थ.—कौलश्राद्ध ए मोटु छे, ए कर्याथी पित्रीने अयंत सुख थाय छे, वाममार्ग नही जाणे एवा जे पशु, जेवा प्राणी होय, तेनुं पण ए विधीथी श्राद्ध थाय तो दिक्षानुं फळ मळेछे. माटे मरण तिथी अथवा पर्व दिवसे अथवा तिर्थने ठेकाणे श्राद्ध करवु. जेनी मरण क्रिया न थइ होय ते मंडळमां दाखल थतो नथी. माटे शाक्त विधिथी अंत्येष्टी करवी. ए प्रमाणे जेनी क्रिया न थाय तेने दिक्षा थइ होय तो व्यर्थ जायछे.

अंत्येष्टिनो संकल्प थायछे ते नीचे लख्या प्रमाणे.—

वीरत्वप्राप्तस्यमंडलप्रवेशप्राप्त्यर्थंअंत्येष्टिकर्मंकरिष्ये ॥

कौल संप्रदायमां नाम नाथ अटकथी पडेछे, जेवुं के चर्पानाथ, आनंदनाथ, निपकलानंदनाथ, सच्चिदानंदनाथ, प्रकाशानंदनाथ, इत्यादि. कौल संप्रदाय प्रमाणे मरण क्रिया करवानी लोकोने मुशकेल पडेछे. अने आश्वलायन सूत्र प्रमाणे वैदिक विधिथी मरण क्रिया करवी ते पण मुशकेल छे, त्यारे करवुं शुं एवु कोई पुछे तेनो उत्तर.

महाजनोयेनगतःसपंथा ॥

एटलुंज के जेम लोक करेछे ते प्रमाणे करवुं. शास्त्र प्रमाणे करता नो फावे नहीं माटे सुधारो थवानी जरुर जणायछे.

मार्कंडेयपुराणमां तेर अध्याय देवी महात्म्यनाछे, ते शाक्ति उपासक महामंत्र गणेछे अने तेने कोई नामीए कवच अर्गला जोडीछे तेनो पाठ, होम इत्यादिक अनेकवार करेछे तेनुं नाम संपुटीपाठ, नवचंडी. शत चंडी, सहस्त्रचंडी, पुरी थायछे. ते ब्राम्हण, गुरु, भावक, पोताना

कल्याणने वास्ते करावेछे ए चाल अन्यदेश करतां गुजरातमां वधारेछे. ते चंडीपाठना पुस्तकमां नीचे लखेला श्लोकछे.

बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्येमहोत्सवे ॥
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्चगंधदीपैस्तथोत्तमैः ॥
रुधिरौकेनबलिनामांसेनसुरयानृप ॥

अर्थ.—पूजा, होम, ने उत्सवमां बलीप्रदान करवुं एटले जनावर मारवुं, अने पुष्प, जल, धुपदीप, अने जनावरो अर्पण करवां, अने लोही युक्त मास अने मद्य ए पण अर्पण करवुं.

जे जे ठेकाणे देवीनुं स्थानक छे, ते ठेकाणे हजारो बकरा अने पाडा अने मरघडानो बली थायछे. काशी पासे विध्यावासीनी देवी छे, अने कलकत्तामां काली छे त्यांहां लोहीनो प्रवाह बंध थतो नथी, हमेशां चालतो रेहेछे एम केहेवायछे. कालीनुं भजन मूळ बंगाळामां उत्पन्न थयुं, अने त्यांथी मंत्रशास्त्री गुजरातमां आवी अने शाक्तमार्गनो उपदेश कर्यो, अने ठिक ठेकाणे कालिकानी स्थापना थइ, अने सर्व देशमां गुप्त रीते वाम संप्रदाय पण चालेछे, अने मद्य, मासनो निवेद थायछे अने लोक प्रसादी पण लेछे.

शंकराचार्य शाक्त मतना हता, एवुं आनंदगीरीकृत शंकरविजयना पांसठमां अध्यायथी मालम पडेछे. कारण हेठे लखेलुं वचन ए अध्यायमां मळेछे.

तस्मात्मुक्तिकांक्षिभिःसर्वैःश्रीचक्रपूजाक
र्तव्येतिदिक्॥तस्मात्सर्वेषांमोक्षफलप्राप्तये

दर्शनाद्येवश्रीचक्रभवद्भिराचार्यैर्निर्मितमिति॥

अर्थ—श्री चक्रनी पूजा कर्याथी मोक्ष थायछे माटे शंकराचार्ये श्री चक्रनी स्थापना करीछे अने जांहां जांहां एमना मुख्य मठछे तेमां श्री चक्रनी स्थापनाछे

कालीका पुराणमां ६६ मो अध्यायछे तेने रुधिराध्याय कहेछे. तेमां अनेक प्रकारना बलिदाननो विधि बताव्योछे. आ पुराण तथा मार्कंडेय पुराण निगममां गणायछे अने वाममार्गी हमारा ग्रंथछे एम कहेछे. रुधिराध्यायमां नर एटले माणसनो बलि लख्योछे* ते अध्याय भगवान बोल्याछे एम लख्युछे तेमाना श्लोक नीचे लख्याछे.

---

* कराडा दक्षणी ब्राह्मण देवीना उपासकछे. ते नर बलि करेछे मारतां फावतु नथी माटे जेहेर देछे ए वात प्रसिद्धछे. मुंबई इलाकामां बाळहत्या करनारा लोकोनी हकीकत छापीने प्रसिद्ध करीछे तेमां ए विषे विगतवार लख्युछे. कळकत्तामां कालिघाट उपर कालिना भगत कोकने रात्रे मारीने तेनुं धड गंगामां नांखता अने मांथु कालिका आगळ मुकता. इंग्रेज सरकारे ए चाल पोलिसना बंदोबस्तथी बंद करीछे किल्ला वगेरे मोटि इमारतो बांधना ते मा येटियण सुवावडि होय तेनु बलिदान करता हाल पण एवा मुकदमा फोजदारी दफतरमां घणा निकळशे. कोकने मंदवाड होय के भुमिस्थ द्रव्य काढवुं होय त्यारे कंयानु बलिदान करेछे. नेटिव राजमां रस्तेथी कोक जतो होय तो तेने पकडिने पे. भुवाजिने घरमां लइ जईने बलि करेछे एवि वात सांभळवामांछे अने ते खोटि नथी एम पण मानवाने योग्य कारणछे विमाने मारिये तो आपणे देव तरफनांथी उगरशे एवा अज्ञानी, मुर्ख घणाछे. एने पुष्टि आपनार दुष्ट शास्त्रो पण घणाछे.

श्रीभगवानुउवाच॥

पक्षिणःकच्छपाग्राह्यामत्स्यानवविधामृगा॥
महिषागोधिकागावःछागोवभ्रश्चशूकराः॥१
खरश्चकृष्णसारश्चगोधिकाशरभोहरिः॥
शार्दूलश्चनरश्चैवस्वगात्ररुधिरस्तथा ॥२
चंडिकाभैरवादीनांबलयंपरिकीर्तिताः॥
कालिकापुराणे.

रुद्रयामल ग्रंथमा अनेक चक्र लख्याछे तेमा वीरचकनु पटल नीचे लख्युं छे.

ईश्वरउवाच॥

वीरचक्रंप्रवक्ष्यामीयेनसिध्यंतिसाधकाः॥
अनयापूजयादेवीदेहसिद्धिप्रजायते॥ १॥
शर्करायोनसमग्रादियत्प्रशस्तंनिवेदयेत्॥
भूचराणांखेचराणांतत्तन्मांसंसुसाधकः॥२॥
मुद्रासर्वाणिधान्यानियुक्तानिपरमेश्वरी॥
श्वेतपीतंचपुष्पाणिरक्तानीचविशेषतः॥३॥
अष्टवीरंचपट्वीरंनववीरंतथाप्रिये ॥
कल्पयेत्वीरपत्निश्चयथालब्धाश्चसुंदरी॥४॥
वीरेभ्योदक्षिणांदद्यात्आचार्यायविशेषतः॥
असंख्यपातकंचैवब्रह्महत्यादिपातकं ॥५॥

नाशयेतत्क्षणाद्देवीवीरचक्रप्रभावतः ॥
दक्षिणाविधिहीनंचतच्चक्रंनिष्फलंभवेत् ॥६॥
इतिरुद्रयामलेईश्वरपार्वतिसंवादेचक्रभेदनी
रूपणंनामवीरचक्रंचतुर्थपटलः ॥

अर्थ.—ईश्वर कहेछे के कोइ साधक वीरचक्र करीने पूजा करे, तो महासिद्धी प्रेत पामे. जेटलि स्त्रियो मळे एटलि तेडावीने तेमने पशुपक्षिनु मास अने अनेक धान्यना पक्वान्न अनेक रंगनापुष्प अर्पण करवां, अने नव के आठ के पाच वीर एटले दीक्षित माणस बोलावीने तेमनी ते स्त्रियो पत्नी समजवी. वीरोने दक्षणा आपवी. एवी विधी करतां मोटां मोटा पातक नाशछे..

ए प्रमाणे महाचक्र, देवचक्र, पशुचक्र, राजचक्र, इत्यादि लख्या छे, तेमां राजचक्रनी पूजामां लखेछे:—

चतुर्वर्णाकुमार्यश्चस्वरूपासुमनोहरा ॥
यामिनीयोगिनीचैवरजकीश्वपचीतथा ॥१॥
कैवर्तकसमुत्पन्नापंचशक्तिरुदाहृता ॥
एताप्रशस्तासकलासाधकेनानियोजिता ॥२॥
अर्पयेत्मधुमद्यंचशुद्धिछागलसंभवा ॥
धर्मार्थकाममोक्षार्थराजचक्रंविधियते ॥३॥
पष्टिवर्षसहस्राणिदेवलोकेमहीयते ॥

रुद्रयामल.

अर्थ.—च्यारे वर्णनी सुंदर कन्या तेडावी, अने धोबण, दर्जण, टेड्रण,

कोळण. भिलण ए पंचशक्ति तेडावीने मद्य, मांस, रुधिर आपवु. तेथी चारे पुरुषार्थ प्राप्त थायछे, अने देवलोकमां साठ वर्ष सुधी एवी पूजा करनार वास करेछे.

देवचक्रमां शक्ति जोईए तेना नाम —

ईश्वरउवाच॥

देवचक्रंप्रवक्ष्यामियत्सुरैक्रियतेसदा ॥
शक्तयस्तत्रवक्ष्यामीदिव्यरूपामनोरमा ॥१॥
राजवेश्यानागरीचगुप्तवेश्यातथाप्रिये ॥
देववेश्याब्रह्मवेश्याशक्तयःपंचदेवता ॥२॥
राज्ञसेवापराराजवेश्यागुप्ताचकौलजा ॥
देववेश्यानृत्यकाराब्रह्मवेश्याचतीर्थगा ॥३॥
नागरीकस्यचित्कंन्यारंडाकामरजस्वला ॥
पचैताशक्तयोदेवीदेवचक्रेनियोजयेत् ॥४॥

आ प्रमाणे पूजा करवानी रीतो, तेना दिवस, वार ठरावेला छे. पर्व पडवो, अष्टमी चतुर्दशी, शुक्रवारे, मध्यरात्रीने वखते पूजा करेछे, अने एवी निर्लज्ज पूजा दहाडे केम थाय. एक एक चक्र पूजानु फळ एम्बुछे ते ए प्रमाणे —

ईश्वरउवाच. ॥

राजचक्रेराजदंस्यात्महाचक्रेसमृद्धिदं ॥
देवचक्रेचसौभाग्यपरिवर्त्रं क्रमोक्षदं ॥

रुद्रयामल.

चक्रमा पोतानी माता के कन्या होय के भगिनी होय तो वीर
एटले माहेश्वरने अर्पण करवी तेनु वचनः—

याकाचित्तिष्ठतेचक्रेमाताचभगिनीस्नुषा ॥
दुहिताचतथाभार्यासर्वेमाहेश्वरार्पयेत् ॥ १ ॥
माहेश्वरीयदाभुंक्तेमुक्तिस्याद्देवतादतः ॥
तस्यसंसर्गमात्रेणनिर्वाणपदवींव्रजेत् ॥ २ ॥

पचमकारनी विगत रुद्रयामल ग्रंथमां लखीछे ते निचे मुजब.—

गौडीपैष्टितथामाध्वीद्राक्षाखर्जूरसमुद्भवा ॥
अर्चनंचक्रराजस्यवारुणीपंचधास्मृताः ॥ १ ॥
छागकुर्कुटवाराहशशजामृगसंभवा ॥
तवचक्रार्चनेदेवीशुद्धिपंचविधास्मृताः ॥ २ ॥
रोहितंमुद्गलंशालसौरंशफरिकातथा ॥
पूजनेतवदेवेशीमत्स्याःपंचविधाःस्मृता ॥ ३ ॥
गोधूममुद्गमाषाश्चस्तंदुलाश्चणकास्तथा ॥
पूजनेतवदेवेशीमुद्राःपंचविधास्मृताः ॥ ४ ॥
रजकीचर्मकारीचवेश्याचैवरजस्वला ॥
मातंगीमधुमाताचअर्चनेशक्तयःस्मृताः ॥ ५ ॥

अर्थ—गोळथी, लोटथी, महुडाथी, द्राखथी, खजूरथी जे मद्य निकळेछे तेने वारुणी एटले प्रथमा कहेछे. १

बकरो, मरघडा, भूंड, ससलो, हरण, ए पाचना रुधिरने शुद्धि एटले द्वितीया कहेछे. २

रोहित, मुद्गल, शाल, सीर, शकरीका, ए पांच नामना मच्छने त्रितीया कहेछे. ३

घउ, मग, अडद, चोखा, चणा, ए पाच धान्यनी मुद्रा एटले चतुर्थी थाय. ४

धोबी, चामाडिया, वेश्या, रजस्वला, भगिण ए पाच प्रकारनि स्त्रियोथी पचमी थाय ५

कालमान पांच प्रकारनुछे.

चतुरंगंचपंचांगमष्टांगंद्वादशांगकं ॥

षोडशांगक्रमात्ज्ञात्वापारायणविधिंभवेत् ॥

अर्थ –चतुरग, पचाग, अष्टग, द्वादशाग, अने षोडशांग ए प्रमाणे पारायण करवु.

दिनतोवारतोपक्षमासःषट्त्रिंशतावृतः ॥

पचांगक्रमविज्ञेयोमार्कंडेयाद्युपासितः ॥

अर्थ–दाडो, वार, पक्ष, महिनो, आवृत, ए क्रम मार्कंड रुषीनो हतो. विस्तार करवानु कारण नथा माटे बिजा क्रम एह्यां नथी.

मद्यनु पात्र शोधन करीने तेमाथी पुजाने वखते पिवानो मत्रछे ते.

प्रकृत्यअहंकारबुद्धिमनश्रोत्रत्वचक्षुर्जिव्हा घाणवाक्पाणीपादपायुपस्थशब्दस्पर्शरूपर सगंधाकाशवायवाग्निसलिलभूम्यात्मना त्मनलेनआणवमलेस्थूलदेहंसंशोध्य ॥

अर्थ–रगे दिठो कारण देहो शुद्ध करोछे. सूक्ष्म देहो शुद्ध करोछे.

पछी पूर्ण पात्र लेइने आत्मा शुद्ध करेछे. पछी स्त्रीओने आपीने तेमनु उछिष्ट रहेलु मद्य पोते पीएछे तेनो मंत्र.

आदायचशिवःसाक्षात्आदिशक्तिमुखांबुजात्॥
गलितंपरमानंदंरससारंपिबाम्यहं ॥

पूजा थया पछी शांति भणेछे ते ए प्रमाणेः—

संपूजकानांपरिपालकानांयतेंद्रियाणांचत
पोधनानां ॥ देशस्यराष्ट्रस्यकुलस्यराज्ञ
करोतुशांतिंभगवान्कुलेशः ॥

पूजापद्धती.

शांतिर्ब्रह्मशांतिसर्वम्शांतिःशांतिरेवः
शांतिशामाशांतिरेधीःद्यौःशांतिरंतरिक्षम्
शांतिरापःशांतिरोपधयःशांतिवनस्पतयः
शांतिविश्वेदेवाःउदयोस्त्वितिब्रुवन्.

पूजा पद्धती.

कौलमार्गनो तर्पण विधी छे तेमां एमकुछेः—

धर्मार्थकाममोक्षार्थेश्रीगुरुइष्टदेवताप्रसंन्ना
र्थंतर्पणंकरिष्ये ॥ न्यासध्यानंकला ॥

पछी गुरु मंडळनो वंदन ए प्रमाणेः—

श्रीनाथादिगुरुत्रयंगणपतिंपीठत्रयंभैरवांसि
द्धौघंबटुकत्रयंपदयुगंदूतिक्रमंमंडळं ॥

वीरान्दूयष्टचतुष्कषष्टिनवकंवीरावलिंपंचकं
श्रीमन्मालिनिमंत्रराजसहितंवंदेगुरोर्मंडलं ॥

नंतर गुर्वौघ, दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघनुं तर्पण लख्युंछे तेमां हजार नाम छे. जेवा केः—

श्रीगुरुभ्योनमश्रीपादुकांपूजयामीतर्पयामिनमः॥

कौलेश्वरानंदनाथश्री०

वसिष्ठानंदनाथश्री०

विश्वामित्रानंदनाथश्री०

शुकानंदनाथश्री०

पछी श्री शंकराचार्य विरचित श्री विद्यास्तोत्र पाठ करेछे, तेनो नमुनोः—

हर्षोन्मत्तसुवर्णपात्रभरितांपानोन्नतांघूर्णि
तांहंकारप्रियशब्दब्रह्मनिरतांसारस्वतो
ल्हासिनीं ॥ सारासारविचारसारचतुरां
वर्णाश्रमाकारिणीश्रीचक्रप्रियबिंदुतर्पण
परांश्रीराजराजेश्वरी ॥
कर्माकर्मविवर्जितांकुलवतींकर्मप्रदांकौलि
नीकारुण्यांतनुबुद्धिकर्मविरतांसिंधुप्रिया
शालिनीं ॥ संयोगप्रियरूपिणींप्रियवतींप्री
तिप्रतापोन्नतां श्रीचक्र० ॥ २॥

मद्यनो कुंभ लेईने तेनी शुद्धी करीने पात्रमां घालवी नंतर प्रथम पात्र द्वितीय पात्र एवां १६ पात्र पिवा, तेना मंत्र.

भुदेवायत्रदेवासुललितवदनादिव्यकन्या
भिमानासानंदागीतगानाविदधतिविधिवत्
विप्रवत्सर्ववर्णाः॥ द्वारंसायुज्यमुक्तेर्विधि
हरहरिभिःसर्वदासेव्यमानंश्रीचक्रंसंप्रवर्त
जगातिविजयतेदैवतंदेवतानां ॥
आत्मतत्वंस्थूलशरीरंशोधयामिजु
होमिस्वाहा. प्रथमपात्रंपिबेत् ॥ १ ॥
द्वितीयेत्रिपुरापात्रंशिवोहंपरिचिंतयेत् ॥
दहंतिसर्वपापानीमोक्षरूपीप्रजायते ॥
द्वितीयपात्रंपिबेत् ॥ २ ॥
मद्यंमीनरसावर्हहरिहरब्रह्मादिभिसेवितंमुद्रा
मैथुनधर्मकर्मनिरतंक्षाराम्लतीक्ष्णाश्रितं ॥
आचार्याचिरमद्यभैरवकलान्यासेनयच्छा
दितंपायात्पंचमकारशुद्धिसहितंपात्रंतृतीयंनमः॥
तृतीयेभैरवीपात्रंशिववेशोमहेश्वरी ॥
पातकंप्रलयंयांतिरक्षांकुर्वंतिसर्वदा ॥
शिवतत्वंकारणंशरीरंशोधयामिस्वाहा ॥
तृतीयपात्रंपिबेत् ॥ ३ ॥

शिवोस्मिशिवोस्मिशिवोस्मि ॥
ब्रह्माहमस्मिब्रह्माहमस्मिब्रह्माहमस्मि ॥
अहमेवाहंजुहोस्मिस्वाहापरमात्मनेइदंनमम ॥
भद्रमूर्तयेपशुपतयेस्वाहा ॥
मध्येमांसरसावहंदायितयादत्तंचपिठादिभिः
किंचिच्चंचलरक्तपंकजदशामानंदमुद्रिक्षितं ॥
मांसछागलमुत्तमोत्तमरसंधमैश्वदिव्यैर्धृतं
सर्वैर्देवगणैर्वृतंशुभफलंपात्रंचतुर्थंभजे ॥ १ ॥
चतुर्थंपात्रंपिबेत् ॥ ४ ॥
गणेशंपंचमंपात्रंसिद्धिबुद्धिप्रदायकं ॥
गंधर्वैरचितंपात्रंगंगायाकृतनिर्मलं ॥
इदंपवित्रममृतंपिबामिभवभेषजं ॥
पशुपाशसमुछेदंकारणंभैरवोदितं ॥
स्वाहाज्ञानात्मनेइदंःसदाशिवायस्वाहा ॥
सर्वैकर्मकलागमाधिकतरंवेदैर्मुखैर्भापितं
दूतियागकुलाष्टसंभ्रमतरंगुप्तंरहस्यान्वितं ॥
आनंदोद्भवनादबिंदुपरमंयोगींद्रसद्वैरवं
पीतंब्रह्मरसंसदोदितकरंपात्रंभजेत्पंचमं
प्रज्ञानंब्रह्म ॥ अहंब्रह्मास्मि ॥ तत्वमसि ॥
अयमात्माब्रह्म ॥ पचमपात्रंपिबेत् ॥ ५ ॥

इतिरुद्रयामलोक्तंशिवशक्तिप्रबोधकं शांकरीपद्धतौपात्रगृहणविधिःसंपूर्ण ॥

आ बद्धाय विधिनो अर्थ लखवानु कारण नथी मद्यमांस भक्षण सर्व विधिमां आवेछे. केटलाएक वाक्यो दारुडियो बोलेछे ए घाटनाछे माटे एवा शास्त्रने अने जे लोक एने अमारो धर्मछे एम कहेछे तेमने धिक्कारछे, जे लोक ए ग्रंथ वाचशे तेमना ध्यानमां एमज आवशे. एज मतलबथी ए ग्रंथ करेलोछे. मन्त्रशास्त्रनु पाखड गुप्तछे तेनो प्रकाश थाय तो ए धर्म के अधर्म ते ध्यानमां आवशे.

आगम प्रकाश.

भाग २ जो.

आगम शास्त्रना ग्रंथ मेळववानु बहुज मुषकिलछे. घणाएक ब्राह्मणना घरमां एक बे ग्रंथ होयछे पण ते घणाज गुप्त राखेछे. ना कबूल करेछे एटलुज नही पण एवा ग्रंथ राखनारने गाळो भाडेछे. तेज प्रमाणे मद्यनी वात निकळे तो पण तेने निंदेछे. ए प्रमाणे बद्धाय वाममार्गीनो चालछे. पण पोतानो छोकरो भक्तिमान् अने भोळो होय तो तेने ते ग्रंथ शिखवेछे. अथवा कोई साधक शेवक भक्तिमान् होय तो तेने आ गुप्त शास्त्र भणावेछे. पेहेला भागमां केटलाएक वचन दाखल करीने तेनो अर्थ प्राकृत गुजराती भाषामां लख्यो छे ते उपरथी नमुनो मालुम पडशे ते शिवाय केटलाएक वचनछे तेनो समग्र

अर्थ लखिये तो बहूज बेशरमपणु अने विभिछपणु थशे माटे ते वचन संस्कृत भाषामाछे तेज प्रमाणे आ बिजा भागमां दाखल कर्याछे ते-नो अर्थ जेने चिकित्सा हशे ते समजि लेशे.

घणा ग्रंथ उपर टिकाकार थयाछे ते लोकोए घणा ग्रंथनो अर्थ फेरव्योछे, केटलाएके न फावता वचनो काढी नांख्याछे. एवा प्राचिनकाळमां उदाहरणो घणा छे, तेथी स्मृती अने पुराणना ग्रंथ हाल छे तेज प्रमाणे पूर्वे हशे, एनो निश्चय थतो नथी. हालमां एवा उदाहरणो मालुम पडयाछे तेमाना त्रण हेठळ लख्याछे.

१. जव्हेरलाल उमियाशंकरे मनुस्मृतिनो ग्रंथ अर्थ सहित छाप्योछे, तेमां मास भक्षण संबंधी जेटला वचनो छे ते काढी नांखवानो विचार कर्यो. पछी कोइए एम न करवानुं कह्यायी ते वचनो पुर-पणीमां दाखल कर्याछे.

२. अध्यात्मरामायण अर्थ सहित पुणामां छाप्युछे, तेनो अर्थ करनार वैष्णव छे, तेने "गानिवेद्ययथा विधि ॥ ए वचन सत्यमकांडमां छे, तेनो मूळ संस्कृत टिकाकारनो अर्थ करेलोछे, ते मुकीने नवो अर्थ पोताना मत प्रमाणे लख्योछे.

३. यज्ञेश्वरशास्त्रीए आर्यविद्या सुधाकर नामनो संस्कृत ग्रंथ कर्योछे, तेमां पुनर्विवाहनो वाद लख्योछे पण ते उपर पोतानो अभिप्राय कांई पण लख्यो नथी.

आगमशास्त्र बाबद जेटला ग्रंथछे ते बध्धाय नठाराछे ते सर्वे बाळी मुकवा लायकछे एमां तो कांई पण संशय नथी एवी अमगळ उपासना उपर एटला ग्रंथ थयाछे ए मोटू आश्चर्यछे. हिंदुस्थानना

लोके आवी उपासना चलावी तेथी ए लोकोमां अज्ञान केटलु वधी गयु हतु तेनी मर्यादा ध्यानमां आवति नथी. हाल जे नाथ पंथना लोकछे ते शिवना वंशना केहेवायछे. वंश बे प्रकारना एक नाद अने बीजो बिंदु. एटले औरस अने शिष्य परंपरा. ते लोक कहेछे के ब्राह्मण ब्रह्मदेवना वंशिकछे अने ब्रह्मानी जनोई धारण करेछे अने अमे शिवना वंश माटे शिवनी जनोई एटले सीलि अने पुंगी धारण करीएछे. ए लोक घणाएक वाममार्गी जेवाछे. रावळ जोगी साप पकडनारा वादियो कान फाडनारा नाथ अवधुतमार्गी अवघड अघोरी ए बध्याय नाथ केहेवायछे. ए मार्गमां घणा ब्राह्मण छानी रीतेछे कोकना घरमां एक ग्रंथ हशे ते उपर पोते मोटो उपासक केहेवायछे अने नादान लोक एनी पुजा अनुष्टाननु ढोंग जोईने तेने वाक्सिद्धिछे, देवता प्रसन्नछे एवु समजेछे मोटा मोटा राजा पण ए लोकोनी भक्तीमां पडेछे. केहेवत छे के जपाप त्रण प्रकारनाछे "मणीमंत्र औपधी" पेहेला बे खोटा छे अने औषध मात्र खरू. पण अज्ञानी लोकोनी ए भ्रांति गती नथी तो पण पचास वरस पूर्वे जेटलि ए भ्रांति हती तेटली आज नथी. जेम जेम ज्ञाननो प्रकाश थशे तेम तेम ए अंध:कार मटशे. पण ए ग्रंथ अने ए भ्रांतिनो विस्तार बहु थयोछे तेथी जल्दीथी मटवानु नथी.

संस्कृतभाषा हाल मृत्यु पामीछे, कोई देश एटीथी बोलतो नथी. जे कोई अभ्यास करे तेने मात्र आवडेछे. प्राचिन ग्रंथ बद्धा संस्कृतमां छे, माटे तेमां शुं छे ते घणा लोको जाणता नथी. तेथी आ ग्रंथनी आब्रुनी बचाव थायछे. पण ए ग्रंथ प्राकृत थइ जशे तो तेमां कांई

नथी एम समजीने म्युनिसिपालिटीना कचरानी गाडिमां लोक नांखी देशे एमां जरा पण संशय नथी. आगळ जे ग्रंथ लख्याछे ते उपरथी सारी पेठे ए वात मालुम पडशे.

मूळ ग्रंथना वचनो लख्याछे. ते ग्रंथना बे चार प्रतियो हाथमां आव्या होतती शुद्ध वचन कियुं तेनो निश्चय थात, पण एकज प्रत हाथमां आवेली तेमां लेखकना प्रमाद घणा, तेथी जेम हतुं तेमज उतारी लिधुं. माटे केटलेएक ठेकाणे चूको रहेली जणाशे.

॥ श्रीमत्कुलार्णव. ॥

श्रीदेव्युवाच ॥

कुलेशपरमेशानकरुणामृतवारिधे ॥
असारेघोरसंसारेसर्वदुःखमलीमसाः ॥१॥
नानाविधशरिरस्थाश्चानंताजीवजातयः ॥
जायंतेचमृतंतेचतेषांअंतोनविद्यते ॥२॥
केनोपायेनदेवोत्रमुच्यतेवदमेमभो ॥

ईश्वरउवाच ॥

शृणुदेवीप्रवक्ष्यामीयन्मांत्वंपरिपृच्छसि ॥३॥
तस्यश्रवणमात्रेणसंसारान्मुच्यतेजनः ॥
चतुराशितिलक्षेषुशरीरेषुशरीरिणां ॥४॥
नमानुष्यंविनामत्रतत्वज्ञानंचलभ्यते ॥
सोपानभूतंमोक्षस्यमानुष्यंप्राप्यदुर्लभं ॥५॥

यस्तारयतिनात्मानंतस्मात्पापतरोत्रकः ॥६॥
विनादेहेनकस्यापिपुरुषार्थोनलभ्यते ॥७॥
तस्माद्देहधनंरक्ष्यपुण्यकर्माणिसाधयेत् ॥
नरःप्राप्योत्तमंजन्मलब्धाचेंद्रियसौष्ठवं ॥८॥
नवेत्यात्महितंयस्तुसभवेद्ब्रह्मघातकः ॥
पुनर्ग्रामाःपुनःक्षेत्रंपुनर्वित्तंपुनर्धनं ॥९॥
पुनःशुभाशुभंकर्मनशरीरंपुनःपुनः ॥
निद्रादिमैथुनाहाराःसर्वेषांप्राणिनांसमाः ॥१०॥
ज्ञानवान्मानवःप्रोक्तोज्ञानहीनपशुःप्रिये ॥
वेदशास्त्रार्णवेघोरेऊह्यमानाइतःस्ततः ॥११॥
षड्दर्शनमहाकूपेपतिताःपशवःप्रिये ॥
परमार्थनजानंतिपशुपाशनियंत्रिताः ॥१२॥
पठंमहर्निशंदेवीपरतत्वपराङ्मुखः ॥
अन्यथाशास्त्रसद्भावोव्याख्याकुर्वंतिनान्यथा ॥
पठंतिवेदशास्त्राणीबोधयंतिपरस्परं ॥१३॥
नजानंतिपरंतत्वदर्वीपाकरसंयथा ॥
मथित्वाज्ञानमंथेनवेदागममहार्णवं ॥१४॥
सारज्ञेनमहादेवीकुलधर्मसमुधृतः ॥
कुलधर्ममहामार्गगतामुक्तिपुरींव्रजेत् ॥१५॥
कुलशास्त्रमनादृत्यपशुशास्त्राणियोभ्यसेत् ॥

स्वगृहेपायसंत्यक्त्वाभिक्षामटतिदुर्मतिः ॥१६॥
अनालोक्यमनाघ्रेयमस्पृश्यंचाप्यपेयकं ॥
मद्यंमांसंपशूनांतुकौलिकानांमहत्फलं ॥१७॥
अमेध्यानिद्विजातीनांमद्यान्येकादशैवतु ॥
द्वादशंतुसुरामद्यंसर्वेषामुत्तमंस्मृतं ॥१८॥
मद्यद्रव्यादिदोषस्यप्रायश्चित्तमतीरितं ॥
अविधानेनयोहंन्यादात्मार्थंप्राणिनःप्रिये ॥१९॥
सवसेन्नरकेघोरेदिनादिपशुरोमभिः ॥
तृणंवाप्यविधानेनच्छेदयेन्नकदाचन ॥२०॥
विधिनागांद्विजंवापिहत्वायापैर्नलिप्यते ॥
कुलशास्त्राणिसर्वाणिमयैवोक्तानिपार्वति ॥२१॥
प्रमाणानिनसंदेहोनहंतव्योनहेतुभिः ॥

इतिप्रथमोल्हासः ॥

ईश्वरउवाच ॥

शैवाद्याःश्चागमाःसर्वेरहस्याःपरिकीर्त्तिताः ॥
रहस्यादिरहस्यानांरहस्यमिदमंबिके ।१॥
ममपंचमुखेभ्यश्चपचाम्नायाःसमुद्गताः ॥
पूर्वश्चपश्चिमश्चैवदक्षिणश्चोत्तरस्तथा ॥२॥
उर्ध्वाम्नायश्चपंचैतेमोक्षमार्गाप्रकीर्तिताः ॥
एकाम्नायंतुयोवेत्तिसमुक्तोनात्रसंशयः ॥३॥

किंपुनश्चतुराम्नायवेत्तासाक्षाच्छिवोभवेत् ॥
अंतःपोढांकुलेशानिकुर्यात्पुर्वोक्तवर्त्मना ॥४॥
महापोढाव्हयंन्यासंततःकुर्यात्समाहितः ॥
एवंचित्तांबुजेध्यायेत् अर्द्धनारीश्वरंशिवं ॥५॥
श्रीप्रासादपरामंत्रंसर्वमंत्रशिखामणी ॥
जपन्भुक्तिंचमुक्तिंचलभतेनात्रसंशयः ॥६॥
पानसंद्राक्षमाधूकखर्जुरीतालमैक्षवं ॥
मधूत्थंसीधुमाध्विकमैरव्यंनालिकेरजं ॥७॥
मद्यान्येकादशैतानिभुक्तिमुक्तिप्रदानीच ॥
द्वादशंतुसुरामद्यंसर्वेषांउत्तमंप्रिये ॥८॥
गौडिमाध्वीचपैष्टिचविज्ञेयात्रिविधासुरा ॥
सर्वसिध्दिकरीपैष्टीमाध्वीभोगप्रदायिनी ॥९॥
गौडीमुक्तिकरीत्येवंसुराख्यादेवताःप्रियाः ॥
विद्याप्रदैक्षवीहालाद्राक्षाराजप्रदाभवेत् ॥१०॥
तालजास्तंभनेशस्ताखर्जुरीरिपुनाशिनी ॥
नालिकेरफलाश्रीदापानसाख्याशुभःप्रदा ॥११॥
मधुकजाज्ञानकरीचारिष्टंरोगनाशिनी ॥
मैरेव्याख्याकुलेशानिसर्वपापप्रणाशिनी ॥१२॥
क्षीरवृक्षसमुद्भुतमाध्यंवल्कसमुद्भवं ॥
मधुपुष्पसमुद्भुतमासवंतंदुलोद्भवं ॥१३॥

यक्षानंदंरुचिकरंसामोदंचमनोहरं ॥
मद्यंतदुत्तमंदेविदेवताःप्रीतिकारणं ॥१४॥
सुरादर्शनमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥
तद्गंधघ्राणमात्रेणशतक्रतुफलंलभेत् ॥१५॥
मदिरावृक्षजाग्राह्याचेतःशोधनसाधनं ॥
तासामेकांसमादत्यपुजाकर्मसमारभेत् ॥१६॥
मत्स्यमांसादिसहिताअष्टगंधैःसुमिश्रिताः ॥
मासंतुत्रिविधंप्रोक्तंखभूजलचरंप्रिये ॥१७॥
यथासंभवमेष्वेकंतर्पणार्थंप्रकल्पयेत् ॥
मांसदर्शनमात्रेणसुरादर्शनवत्फलं ॥१८॥
पितृदैवतयज्ञेषुवेदैर्ग्राह्याविधीयते ॥
आत्मार्थप्राणिनांहिंसाकदाचिन्नोत्तमाप्रिये ॥१९॥
अनिमित्तंतृणंवापिछेदयेन्नकदाचन ॥
देवतार्थंद्विजंगावाहत्वापापैर्नलिप्यते ॥२०॥
मान्निमित्तकृतंपापंपुण्यंभवतिशांभवी ॥
मद्यमांसविहीनेननकुर्यात्पुजनंशिवे ॥२१॥
पिशितंमापमात्रंतुतदर्द्धमलिबिंदुना ॥
सतत्तर्पणमात्रेणकोटियज्ञफलंलभेत् ॥२२॥
कुल्पुजांतरायंहियःकरोतिसदुर्मतिः ॥२३॥
सहैतिनरकंघोरमेकविंशतिभिःकुले ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकुलपूजापरोभवेत् ॥२४॥
लभतेसर्वसिद्धिंचनात्रकार्याविचारणा ॥
सम्यक्क्रतुशतंकृत्वायत्फलंसमवाप्नुयात् ॥२५॥
तत्फलंसमवाप्नोतिदत्वाश्रीचक्रसाधनं ॥
सार्धत्रिकोटितीर्थेषुस्नात्वायत्फलमाप्नुयात्॥२६॥
तत्फलंलभतेदत्वाभक्तयाश्रीचक्रसाधनं ॥
शैवेचवैष्णवेशाक्तेसौरेसिद्धांतदर्शने ॥२७॥
विनालिंपिशिताभ्यांतुपूजनंनिःफलंभवेत् ॥
मंत्रपूतंकुलद्रव्यंगुरुदेवार्पितंप्रिये ॥२८॥
पित्रेतियेजनाःस्तेषांत्वत्पापंचनालिप्यते ॥
सुराशक्तिःशिवोमांसंतद्भोक्ताभैरवःस्वयं॥२९॥
तयोरैक्यंसमुत्पन्नोमानंदोमोक्षउच्यते ॥
देवपितृन्समभ्यर्च्यदेवोशास्त्रोक्तवर्त्मना॥३०॥
गुरुंस्मरन्पिबेन्मद्यंखादन्मांसंनदोषभाक् ॥
यथाक्रतुषुविप्राणांसोमपानंनदूषितं ॥३१॥
मद्यपानंतथाकार्यंसमयेभोगमोक्षदं ॥
पूर्णाभिषेकयुक्तानांपानंदेवीनिगद्यते॥३२॥
पित्वापित्वापुनःपित्वायावत्पततिभूतले ॥
पुनरुत्थायवःपित्वापुनर्जन्मनविद्यते ॥३३॥
आनंदात्तृप्यतेदेवीमूर्छयाभैरवः स्वयं ॥

वमनात्सर्वदेवांश्चतस्मात्त्रिविधमाचरेत् ॥३४॥
दिव्यपानरतानांवैयत्सुखंकुलनायिके ॥
तत्सुखंसार्वभौमस्यनृपस्यापिनविद्यते ॥३५॥
उच्छिष्टंभक्षयेत्स्त्रिणांताभ्यामुच्छिष्टमर्पयेत् ॥
प्रवृत्तेबहिरवेचक्रेसर्वेवर्णाद्विजातयः ॥३६॥
निवृत्तेबहिरवेचक्रेसर्वेवर्णापृथक्पृथक् ॥
स्त्रीवाथपुरुषःपंढोचांडालोवाद्विजोत्तमः॥३७॥
चक्रमध्येनभेदोस्तिसर्वेदेवसमास्मृताः ॥
क्षीरेणसहितंतोयंक्षीरमेवयथाभवेत् ॥३८॥
तथाश्रीचक्रमध्येतुजातिभेदोनविद्यते ॥
मद्रूपाःपुरुषाःसर्वेत्वद्रूपाःप्रमदाःप्रिये॥३९॥
चक्रमध्येतुमुढात्माजातिभेदंकरोतियः ॥
मद्यकुंभसहस्रैश्चमांसराशिशतानिच॥४०॥
नतुष्यामिवरारोहेभगलिंगामृतंविना ॥
नचक्रांकिंनपद्माकंनवज्रांकमिदंजगत् ॥४१॥
लिंगांकंचभगांकंचतस्माच्छक्तिशिवात्मकं॥
शिवशक्तयोस्तुसंयोगोयस्मिन्कालेप्रजायते॥४२॥
ससाध्यकुलनिष्टानांसमाधिःसविधीयते ॥
योगिनोमदमत्ताश्चपतंतिप्रमदोरसि ॥४३॥
मदाकुलाश्चयोगिन्यापतंतिपुरुषोपरि ॥

मनोरथंतुसंपूर्णंकुर्वंतश्चपरस्परं ॥४४॥
एतंचक्रगलावार्त्तांबाहिर्नैवप्रकाशयेत् ॥
भक्त्यासंरक्षतांधीरोगोपयेच्चप्रयत्नतः ॥४५॥
शृणुदेवीप्रवक्ष्यामीयोगीयोगीशलक्षणं ॥
तस्यश्रवणमात्रेणयोगःसाक्षात्प्रकाशते ॥४६॥
ध्यानंतुद्विविधंप्रोक्तस्थूलसूक्ष्मविभेदतः ॥
साकारस्थूलमित्युक्तंनिराकारंतुसूक्ष्मकं ॥४७॥
नशृणोतिनचघ्रातिनशृएवतिनपश्यति ॥
नजानातिसुखंदुखंनसंकल्पयतेमन ॥४८॥
एवंशिवेविलीनात्मासमाधिस्तमिहोच्यते ॥
यथाजलेजलंक्षिप्तंक्षिरेक्षिरंघृतेघृतं ॥४९॥
अविशेषंभवेतद्वत्जिवात्मपरमात्मनी ॥
यथाध्यानस्यसामर्थ्यात्कीटोपिभ्रमरायते ५०
तथासमाधीसामर्थ्याद्ब्रह्मभूतोभवेत्परः ॥
यथागाढांधकारस्थोनकिंचिदीहपश्यति ॥५१॥
आसनस्कस्तथायोगीप्रपंचंनैवपश्यति ॥
नपत्रासनतांयोगोननासाग्रनिरीक्षणं ॥५२॥
ऐक्यंजीवात्मनाराऊयोगंयोगविशारदाः ॥
क्षणंब्रह्माहमस्मितीयःकुर्यादात्मचिंतनं ॥५३॥
तत्सर्वपातकंहन्यात्तमःसूर्योदयेयथा ॥

व्रतक्रतुस्तपःस्तिर्थदानदेवार्चनादिषु ॥५४॥
यत्फलंकोटिगुणितंतद्देवाप्नोतितत्ववित् ॥
उत्तमासहजावस्थामध्यमाध्यानधारणा ॥५५॥
जपःस्तुतिःस्यादधमाहोमपूजाधमाधमः ॥
पूजाकोटिगुणंस्तोत्रंस्तोत्रंकोटिफलंजपः ॥५६॥
जपकोटिफलंध्यानंध्यानात्कोटिफलंलयः ॥
मंत्रोदकैर्विनासंध्याजपहोमैर्विनातपः॥५७॥
उपचारैर्विनापूजायोगीनित्यंसमाचरेत् ॥
हृदाकाशेचिदादित्येसदाभातिनिरंतरं॥५८॥
नोदेतिनास्तमध्येतिकथंसंध्यामुपास्महे ॥
देहोदेवालयेदेवीजीवोदेवःसदाशिवः॥५९॥
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यंसोहंभावेनपूजयेत् ॥
जीवःशिवःशिवोजीवःसजीवःकेवलःशिवः॥६०॥
पाशबद्धोस्मृतोजीवःपाशमुक्तःसदाशिवः॥
तुषेनबद्धोव्रीहिस्यात्तुषाभावेनतंडुलः॥६१॥
कर्मबद्धस्तथाजीवोकर्ममुक्तःसदाशिवः ॥
अर्ग्नौतिष्ठतिविप्राणांहृदितिष्ठंतियोगीनां॥६२॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनांसर्वत्रसमदर्शिनां ॥
अस्थिमांसंमनार्मर्गर्यत्सुखदुःखायतेप्रिये॥६३॥
तदेवमोक्षविदुधामबुद्धानांनुपातकं ॥

सदामांसासवोल्लाससदाचरणचिंतकः॥६४॥
सदासंशयहीनोयःकुलयोगीसउच्यते ॥
पिबेन्मद्यंपलंखादंस्वेछाचारपरायणः॥६५॥
आमिषासवसौख्यहीनंयस्यमुखंभवेत् ॥
प्रायश्चित्तीसवर्ज्यश्चपशुरेवनसंशयः॥६६॥
अनाचारास्सदाचारःअकार्यंकार्यमुत्तमं ॥
असत्यमपिसत्यंस्यात्कौलिकानांमहेश्वरी॥६७॥
अपेयमपिपेयंस्याद्भक्ष्यंभक्ष्यमेवच ॥
अगम्यमपिगम्यंचकौलिकानांकुलेश्वरी॥६८॥
नविधिर्ननिषेधश्चनपुण्यंनचपातकं ॥
नस्वर्गोनैवनरकःकौलिकानांकुलेश्वरी॥६९॥
दुर्गुणाःसगुणायंतेअकुलंतत्कुलायते॥
अधर्मश्चापिधर्मतिकौलिकानांकुलेश्वरी॥७०॥
मृत्युर्वैजायतेदेवीस्वर्गःसाक्षात्गृहायते॥
सर्वव्यापीयथासूर्यःसर्वभक्षीयथानलः॥७१॥
सर्वस्पर्शीयथावायुस्तथायोगीसदाशुचिः॥
सर्वधर्माधिकोदेवीकुलधर्मःशिवोदितः॥७२॥
नाहंवसामिकैलासेनमेरौनचमंदिरे॥
कुलज्ञायत्रतिष्ठंतितत्रतिष्टामिभामिनी॥७३॥
दर्शनादर्चनात्तस्यात्रिसप्तकुलमुद्धरेत्॥

समाशंसंत्तिपितरःसुवृष्टिमिववर्षकाः ॥७४॥
अस्मत्कुलेपुपुत्रोवापौत्रोवाकौलिकोभवेत् ॥
त्वद्भक्तपूजनाद्देवीपूजितोहंनसंशयः ॥७५॥
कुलनिष्टान्यरित्यज्यय श्चान्यस्मैप्रदीयते ॥
स्मशानंतंगृहंदेवीदातापिनरकंव्रजेत् ॥७६॥
तत्वप्राप्यतथायोगीत्यजेत्कर्मपरिग्रहं ॥
पुण्यपापैर्नलिप्यंतेयेषांब्रह्मह्रदिस्थितं ॥७७॥
पृथिव्यांयानिकर्माणिजिव्होयस्थनिमित्तकं ॥
जीव्होयस्थपरित्यागीकर्मणाकिंकरिष्यति ॥७८॥
मद्यंमांसंचमत्स्यंचमुद्रामैथुनमेवच ॥
मकारंपचकंदेवीदेवताप्रीतिकारणं ॥७९॥
कृष्णाष्टमीचतुर्दश्याममावास्यादिपूर्णिमा ॥
संक्रांतिःपंचपर्वाणीतेपुपुण्यदिनेपुच ॥८०॥
यथाकालंयथादेशंतथापूजासमाचरेत् ॥
भक्ष्यभोज्यान्नपानाद्यैःक्षीराज्यमधुमांसकैः ॥८१॥
मत्स्यमांसादिविविधभक्ष्यभोज्यसमन्वितं ॥
कुर्यान्नवकुमारीणांपूजामाश्विनमासके ॥८२॥
अष्टाष्टकार्चनंकुर्यांछक्तिचैकैकवासरे ॥
दुतियागंतुयःकुर्यात्पूर्वोक्तविधिनाप्रिये ॥८३॥
कुलपूजारतोभूयादभिष्टफलसिद्धये ॥

कुलपूजाधिकोयज्ञः कुलपूजाधिकोव्रतं ॥८४॥
नास्तिनास्ति पुनर्नास्तिमाशंककुलनायिके ॥
कुलधर्मप्रसगंतुपशुनांपुरतःप्रिये ॥८५॥
कदाचिन्नैवकुर्वितशुद्राग्रेवेदपाठवत् ॥
यथारक्षतिचौरेभ्योधनंधान्यावरादिकं ॥८६॥
कुलधर्मंतथादेवीपशुभ्यःपरिपालयेत् ॥
अंतःकौलंवहिःशैवंसभामध्येतुवैष्णवं ॥८७॥
कौलंसुगोपयेदेवीनालिकेरफलांबुवत् ॥
वेदशास्त्रपुराणानिस्पष्टवैश्यांगनामिव ॥८८॥
इयंतुशांभवीविद्यागुप्ताकुलवधूरिव ॥
चांडालीचर्मकारीचमातंगीपुल्कसीतथा ॥८९॥
श्वपचीकटकीचैवकैवर्त्तिविश्वयोषिता ॥
कुलाष्टकमितिप्रोक्तंसमयाचारपालका ॥९०॥
गुरवोवहवःसंतिवेदशास्त्रार्थपारगाः ॥
दुर्लभोयंगुरुर्देवीकुलशास्त्रार्थपारगाः ॥९१॥
गुरवोवहवःसंतिदिपवच्चगृहेगृहे ॥
दुर्लभोयंगुरुर्देवीसूर्यवत्सर्वदीपकः ॥९२॥
गुरवोवहवःसंतिशिष्यवित्तापहारकाः ॥
दुर्लभोयंगुरुर्देवीशिष्यदत्तापहारकाः ॥९३॥
विनादीक्षांनमोक्षस्यात्प्राणिनांशिवशासनात् ॥

गुरूपदिष्टमार्गेणबोधंकुर्याद्विचक्षणः॥९४॥
पाशमुक्तक्षणाच्छिष्यपरानंदमयोभवेत्॥
बोधच्छिद्वाशिवःसाक्षान्नपुनर्जन्मतांव्रजेत्॥९५॥
एषातीव्रतरादीक्षाभवबंधविमोचनी॥
सजीवमीनयुक्तेनसुरया पुरितेनच॥९६॥
अयंसिद्धाभिषेकस्यआचार्याख्यस्यपार्वती॥
पूर्णाभिषेकहीनायेमृताश्चकुलनायिके॥९७॥
सित्थापूर्णाभिषेकेणशिवसायुज्यमान्पुयात्॥
तेनमुक्तिंव्रजंतीतीशांभवीवाक्यमव्रवीत्॥९८॥
दीक्षयामोक्षमाप्नोतिचांडालोपियदृच्छया॥
दीक्षयादग्धकर्मासौमायविछिन्नबंधनः॥९९॥
गतःपरांज्ञानकाष्ठांनिर्बिजस्तुशिवोभवेत्॥
दीक्षासंस्कारसंपन्नेजातिभेदोनविद्यते॥१००॥
नफलंतिप्रयेतेषांशिलायामुक्तबीजवत्॥
देवीदीक्षाविहीनस्यनसिद्धिर्नचसद्गतिः॥१०१॥
जपयज्ञात्परोयज्ञोनापरोस्तिहकश्चन॥
तस्माज्जपेनधर्मार्थकाममोक्षंलभेत्प्रिये॥१०२॥
पुण्यक्षेत्रनदीतीरंमहापर्वत्तमस्तकं॥
तीर्थप्रदेशांसिंधुनांसंगमःपावनंवनं॥१०३॥
उद्यानानोविचित्रानांविल्वमूलंतथागीरेः॥

साधकानांप्रशस्तानीस्थानान्येतानिमंत्रिण।१०४॥
अथवानिवसेत्तत्रयत्राचित्तंप्रसीदति ॥
गृहेशतगुणंविद्यात्गोष्टेलक्षगुणंभवेत् ॥१०५॥
कोटिदेवालयेप्रोक्तंमनंतशिवसंन्निधौ ॥
वाचिकंमानसंपापंकायिकंनापियत्कृतं ॥१०६॥
तत्सर्वंनिर्दहेक्षिप्रंप्राणायामत्रयेकृते ॥
अक्षमालाद्विधाप्रोक्ताकल्पिताकल्पितेतिच १०७॥
कल्पितामणिभिःक्लृप्ताचमातृकस्यादकल्पित्ता॥
अन्नदातुःफलःस्यार्धकर्तुश्चार्धंनसंशयः॥१०८॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपरान्नंवर्जयेत्प्रिये ॥
मनोन्यत्रशिवोन्यत्रशक्तिरन्यत्रमारुतिः॥१०९॥
दुर्लभंप्राप्यमानुष्यंतत्रापिन्नह्मविग्रहं ॥
पूर्वजन्मार्जितापुण्यानरोभूत्वामहीतले॥११०॥
नसिध्यतिवरारोहेलक्षकोटिजपादपि ॥
वादार्थंपठ्यतेविद्यापरार्थंक्रियतेतपः॥१११॥
धनार्थंगम्यतेतीर्थंभुक्त्यर्थंक्रियतेजयः ॥
काम्यार्थदेवतायात्राकथंसिद्धिर्वरानने॥११२॥
जपध्यानादियुक्तस्याक्षिप्रंमंत्रःप्रसिध्यति ॥
सिद्धमंत्रस्यसिध्यंतिपट्कर्माणिनसंशयः॥११३॥
काम्यप्रयोगकर्तृणांपरलोकोनविद्यते ॥

होमतर्पणयंत्राद्यैमुद्राध्यानविशेषकैः ॥११४॥
आत्मनश्चपरश्चापिषट्कर्माणिसमाचरेत् ॥
प्रयोगांतेचक्रपूजासर्वमेवसमाचरेत् ॥११५॥
कुलद्रव्यादिशुद्धिंचज्ञात्वापूजनमारभेत् ॥
सर्वकार्येदेवगृहेस्मशानेक्रुरकर्मच ॥११६॥
श्रीमासादपरामंत्रमष्टोत्तरसहस्रकं ॥
तरुणोल्लांससहितोमंडलंप्रजयेत्प्रिये ॥११७॥
अपमृत्युमहारोगजरामरणजंभयं ॥
जित्वाधिव्याधीरहितःपुत्रपौत्रसमन्वितः॥११८॥
जीवेद्वर्षशतंसाग्रंपूजितःसर्वमानवैः ॥
ब्रह्मादीस्तंभयेद्देवीयमादीनांतुमारणं॥११९॥
देवदानवगंधर्वसिद्धकिन्नरगुह्यकान् ॥
विद्याधरान्मुनीन्रक्षान्नन्यांत्रप्सरसःस्त्रियः१२०
सिंव्हन्याघ्रोमृगेंद्रादिअन्यान्दुष्टमृगानपि॥
वशीकरोत्यसंदेहःकिंपुनर्मानवादिकान् ॥१२१॥
सर्ववश्यकरंदेवीसर्वैश्वर्यफलप्रदं॥
स्वर्गादिपुण्यलोकेपुजातिभेदोनविद्यते॥
ऊर्ध्वाम्नायःसमाख्यातःसमासेनचविस्तरात्॥
कुलार्णवमिदंशास्त्रंयोगिनीनांव्ददीस्थितं ॥१२२॥
प्रकाशितंमयानेद्यगोपनीयंप्रयत्नतः॥

पुस्तकंचकुलेशानिपशुगेहेनानिक्षिपेत् ॥१२३॥
नदद्यात्यशुहस्तेननपठेपशुसंन्निधौ ॥
नित्यंसंपुजयेदूकन्याजानीयाद्गुरुवक्रत: ॥१२४॥
नापुत्रायप्रदातव्यंनाशिष्यायकदाचन ॥
साधकानांहितार्थायभुक्तिमुक्तिफलैषिणां ॥१२५॥
यस्तूद्धाम्नायमहात्म्यंपठेश्रीचक्रसंन्निधौ ॥
भक्त्यापरमयादेवियशृणोतिसकौलिक: ॥१२६॥
व्रतदानतपस्तिर्थयज्ञदेवार्चनादिषु ॥
यत्फलंकोटिगुणितंलभतेनात्रसंशय ॥१२७॥
इतिश्रीश्रीमत्कुलार्णवेमहारहस्येसर्वागमोत्तमेष
पादलक्षग्रंथेपंचमखंडेमोक्षपादेनामवासनादीकथनंना
मसप्तदशोल्हास:॥नम: श्रीकुलनायिकायेनम: ॥

अथश्यामारहस्यसार.

रूपाणीबहुसंख्यानिप्रकृते:संतिभामिनी ॥
तेपांमध्येमहेशानिकालिरूपंमनोहरं ॥१॥
तस्याउपासकाश्चैवब्रह्मविष्णुशिवादय: ॥
चंद्रसूर्यश्चवरुण:कुबेरोग्नि:स्तथापर: ॥२॥
दुर्वासाश्चविसिष्टश्चदत्तात्रेयोबृहस्पति: ॥
कालिकायाप्रसादेनभुक्तिर्मुक्त्यादिभागिन: ॥३॥

॥ अथर्ववेदेऽयामोपनिषद· ॥

अथहैनाब्रह्मरंध्रेब्रह्मस्वरूपिणीमाप्नोतिसुभगां
त्रिगुणांकृत्वातद्वयंदक्षिणेकालिकेइत्यभिमुख
त्वांतदनुबीजसप्तकमुच्चार्यबृहद्भानुजायामुच्चरेत्
सतुशिवमयोभवेत्॥ सर्वसिद्धिश्वरोभवेत् ॥
सतुवागीश्वरः॥ सतुदेवेश्वरः॥
सर्ववेदैरधितोभवतु॥ सतुसर्वतीर्थेपुस्नातोभवति॥
ससर्वयज्ञेप्रदीक्षितोभवति॥इमंउपनिषदं
योनाधीतेसा पुत्री पुत्रियति॥ निर्द्धनोधनीभवति॥
धर्मार्थकाममोक्षाणांपात्रियते॥गंगादितीर्थ॥
क्षेत्राणांवन्हिष्टोमादियज्ञानांफलभागीयते॥इति॥
अर्चयन्विपर्येःपुष्पैस्तक्षणात्तन्मयोभवेत्॥
न्यासःस्तन्मयताबुद्धिःसोहंभावेनाचिंतयेत्॥१॥
स्ववंशादधिकंज्ञेयंगुरुवंशमहाशुभं॥
आदौसर्वत्रदेवेशामत्रदःपरमोगुरुः॥२॥
परापरगुरुस्तोहिपरमेष्टिगुरुस्तथा॥
तत्रादौकालिकादेवीतस्मात्शृणुगुरुक्रमं॥३॥
महादेविमहादेवास्त्रिपुरश्चैवभैरवः॥
दिव्यौघागुरवःप्रोक्तासिद्धौघाकथयामिते॥४॥
ब्रह्मानंदःपूर्णदेवश्चणचित्तश्चलोचनः॥

कुमारःक्रोधनश्चैववरदःस्मरदीपनः ॥५॥
मायामायावतीचैवमानवौघाशृणुप्रिये ॥
विमलःकुशलश्चैवभीमसेनःसुधाकरः ॥६॥
मीनोगोरक्षकश्चैवभोजदेवःप्रजापतिः ॥
मुलदेवोरंतिदेवोविघ्नेश्वरहुताशनौ ॥७॥
समयानंदसंतोषौकालिकागुरवःस्मृताः ॥
आनंदनाथशब्दांतेगुरवःसर्वसिद्धिदा ॥८॥
स्त्रियोपिगुरुरूपाश्चेदंबान्ताःपरिकीर्त्तिताः ॥
तांत्रिकीसंध्यांकुर्यात् ॥ गुरुंतर्पयेत् ॥
श्रीमार्तंडभैरवायप्रकाशशक्तिसहितायएषोर्घ्यः ॥
स्वाहा ॥इतित्रिवारं ॥अथकालिगायत्रि ॥
कालिकायैविद्महेस्मशानवासिनीधीमही ॥
तन्नोघोरःप्रचोदयात् ॥अस्यापठणमात्रेणमहापातक
कोटयः ॥सद्यःप्रलयमायांतिसाधकस्यनचान्यथा ॥
रावणस्यनधाचैवरामचंद्रोविमोचितः ॥१०॥
आत्मकन्याकर्षणाच्चब्रह्मापिचाविमोचितः ॥
मातृवधात्परशुरामोनिश्चयेनविमोचितः ॥११॥
सुरापानाचश्रीकृष्णोदत्तात्रेयस्तथैवच ॥
एवमेषामहाविद्यागोतम्यादेविसुंदरी ॥१२॥
एवंध्यात्वामहाकालिजपेलक्षचतुष्टयं ॥

रुधिरौक्तैःबिल्वपत्रैःतद्दशांशेनहोमयेत् ॥१३॥
पूजादौविजयास्विकारः॥ इतिविजयाकल्पे ॥
ध्यानं ॥ करालवदनांघोरांमुक्तकेशीचतुर्भुजां ॥
कालिकादक्षिणांदिव्यांमुंडमालाविभूपिताः॥१४॥
सद्यःकृतशिरःखड्गमुर्द्धद्वयकरांबुजां ॥
अभयंवरदंचैवसिद्धिद्वयकरांबुजां ॥१५॥
महामेघप्रभांशामांतथैवचदिगंबरां ॥
कंठावसक्तमुंडालिगलेरुधिरचर्चितां ॥१६॥
कर्णावतंसतांनीतशवयुग्मभयानकां ॥
घोरदंष्ट्राकरालांचपीनोन्नतपयोधरां॥ १७॥
शवानांकरसंघातैःकृतकांचिहसन्मुखीं ॥
घोररूपांमहारौद्रिस्मशानालयवासिनीं॥ १८॥
शवरूपमहादेवहृदयोपरिसंस्थितां ॥
महाकालेनचसमंविपरीतरतातुरां॥१९॥
इतिध्यात्वा ॥ सुरयात्रलियुक्तैश्च
पूजयेद्वायथाविधी ॥२०॥

अथसुराशापमोचनं ॥

ॐकारेणब्रह्मशापंविमोचयेत्॥ सुरेकृष्णशापंविमोचय॥
अमृतंश्रावयस्वाहा॥इतिमंत्रत्रयंदेविघटंधृत्वापठेत्रिधा॥
शुक्रशापविमोचितायैसुरादेव्यैनमः॥ अर्घ्यद्रव्यं ॥

मांसमीनमुद्राकुंडगोलमुरासंशोध्यनिक्षिपेत् ॥
प्रतद्विष्णुस्तवतेति ॥ मंत्रेणमांसंशोधयेत् ॥
त्र्यंबकेणमिनं, त्वद्विष्णोरितिमुद्रा, विष्णुर्योनिमिति
कुंडगोलोद्भवं, घटसमीपेगुरुपात्रं, देवतापात्रं, शक्ति
पात्रं, योगिनीपात्रं, वीरपात्रं, बलिपात्रं, स्वपात्रं,
पाद्यपात्रं, अर्घ्यपात्रं, आचमनीयपात्रं, क्रमेणस्थापयेत्,
आनंदभैरवंतर्पयामि, ॥ इतिमंत्रेणतर्पयेत् ॥

॥ अथनैवेद्यं ॥

देवीपूजासदाशस्ताजलजैःस्थलजैरपि ॥
विहितैर्वानिषिद्धैर्वाभक्तियुक्तेनचेतसा ॥१॥
शालमत्स्यंचपाठीनंगोधामांसमनुत्तमं ॥
सशल्कंमेषखड्गश्चसार्द्रकंसहशर्करं ॥२॥
पक्षिमांसवराहश्चमांसंनानासमुद्भवं ॥
कृष्णछागंमहामांसंगोधिकाहरितंतथा ॥३॥
जलजेमत्स्यमांसेचगंडकामांसमेवच ॥
नराछागास्तथामेषामहिषाशशकास्तथा ॥४॥
एतेपांचैवरक्तानिदेयानिपरमेश्वरी ॥
राजानरवालिंदद्यात्नान्योपिपरमेश्वरी ॥५॥

॥ अथबलिदानं ॥

अथातोबलिदानस्यविधानोत्रप्रचक्षते ॥

चामरंकृष्णसारश्चमत्स्यमेषश्चसुकरः ॥६॥
महिषोवानरःखड्गोबलिछागादिकोभवेत् ।
श्वेतकृष्णोलोहितश्चकपिलःश्वित्रपांडुरौ ॥७॥
षड्विधःछागलःप्रोक्तागृहस्थानांपरोबलिः ॥
पंचाब्दंमहिषंश्वेतंप्रशस्तंपरिकीर्तितं ॥८॥
गंडैर्वर्षसहस्राणिमहिषैशरदःशतं ॥
छागलैवत्सरादुर्ध्वंद्वादशाब्दंदशाब्दकं ॥९॥
मनुष्येकोटिवर्षाणितृप्तिंगछंतिदेवता ॥
नदद्याच्चिपशोर्मांसंहव्यकव्येविशेषतः ॥१०॥
हीनेंद्रीयपशोर्मांसंदुरितःपरिवर्जयेत् ।
दिवानजुहुयान्मांसंसंध्यायांसावसानके ॥११॥
एकेनचसहस्रंस्याद्द्विगुणंचार्द्धरात्रके ॥
पर्वसंधौशतगुणंतिथिसंधौशतोत्तरं ॥१२॥
योन्यांरटेशतगुणंस्थंडिलेपिनचाचरेत् ॥
अथसंप्रोक्षणंकृत्वाबलिंसमुत्सृजेत्बुधः॥१३॥
स्वयंपूर्वमुखोभूत्वाबलिंकुर्यादुदंग्मुखं॥
अथवैतद्यस्वयंस्यात्सिंदुराद्यैरलंकृतं ॥
अर्घ्यपात्रोदकैशुद्धैःमूलेनमोक्षयेत्रिशः॥१४॥
पुरुषसूक्तेनप्रोक्षणं ॥
छागलंबलिरूपेणममभाग्यदवास्थितः ॥

प्रणमामिसदाभक्त्यारूपिणंबलिरूपिणं ॥१५॥
चंडीकाबलिरूपायबलेतुभ्यंनमोनमः ॥
यज्ञार्थेपशवःसृष्टास्स्वयमेवस्वयंभुवा ॥१६॥
अतस्त्वाघातयाम्यद्यतस्माद्यज्ञेवधोवधः ॥
आनियखंडंपुरतोगंधादिभिःसमर्चयेत् ॥१७॥
कृष्णंपिनाकपाणिंचकालरात्रिःस्वरूपिणं ॥
आसीद्विशेपणःखड्गतीक्ष्णधारोदुरासदः॥१८॥
श्रीगर्भविजयःश्चैवधर्मपालनमोस्तुते ॥
इतिध्यात्वायाजकः॥ ॐफडितिमंत्रेणस्कंधे
खड्गनियोजयेत्॥ पश्चात्खड्गेणछिंधि॥
शिर्षोपरिज्वलद्दिपोयावत्कालप्रवर्तते ॥
तावत्कालवसेत्स्वर्गेतस्माद्यत्नेनदापयेत् ॥१९॥
मंत्रसिध्धि॥भूर्जेरोचनगंधाद्यैपद्ममध्येसुशोभनात्॥
मंत्रसाधनयोरेक्यंदुर्लभंभुविमानवैः ॥२०॥
॥ अथपानं ॥
एकपात्रेपिवेतद्रव्यंभुंजितश्चैकभाजने ॥
विनामंत्रेणयोपानंविनामांसेनतर्पणं ॥२१॥
विनाशक्त्यातुयत्पानं॥तत्पानंनिष्फलंभवेत्॥
अन्योन्यवंदनंकृत्वापिवेतदमृतंपुनः ॥२२॥
उच्छिष्टंभक्षयेत्स्त्रिणांताभ्यांनोच्छिष्टमर्पयेत् ॥

पीत्वापीत्वापुनःपीत्वायावत्पततिभूतले ॥२३॥
साधकानांशिवाःसंतुआम्नायपरिपालिनां ॥
जयंतिमातराःसर्वाजयंतियोगिनोगणः॥२४॥
जयंतिसाधकाःसर्वेनंदतुभैरवादयः ॥
तृप्यंतुपितराःसर्वे॥सिद्धविद्याधरादया॥२५॥
शत्रवोनाशमायान्तुममनिंदाकराश्चये ॥
इतिशांतिस्तोत्रं ॥ २६ ॥

॥ अथसहस्रनामानि ॥

अथश्रीदक्षिणाकालिस्तोत्रस्यभैरवऋषीःस्मशानकालिकादेवता॥ धर्मार्थमोक्षार्थेजपेविनियोगः॥
स्मशानकालिकाकालिभद्रकालिकपालिनी ॥
गुह्यकालिमहाकालिमहाकालनितंत्रिनी ॥१॥
भगरूपाभगस्थात्रीभगीनिभगवासिनी ॥
लिंगस्थालिंगीनीलिंगरूपिणीलिंगसुंदरी ॥२॥
कुंडपुष्पसदाप्रीतीगोलपुष्पसदारतिः ॥
कुंडगोलोद्भवप्रीताकुंडगोलाद्भवात्मिका ॥३॥
शुक्रालयाशुक्रभोगाशुक्रपुजासदारतिः ॥
शुक्रस्नाताशुक्रदेहाशुक्रवृष्टिविधायिनी॥४॥
भगलिंगामृतप्रीत्ताभगलिंगस्वरूपिणि ॥
स्वयंभूकुसुमस्नातास्वयंभुपुष्पधारिणि॥५॥

इत्यादि॥इतिकालिकानामांसहस्त्रंशक्तिभाषितं॥
गुह्याद्गुह्यतरंसाक्षान्महापातकनाशनं॥
यंयंकामयतेकामंपठन्स्तोत्रमनुत्तमं ॥६॥
देवीवरप्रसादेनततंप्राप्नोतिमानवः ॥
स्वयंभुकुसुमैःशुक्रैःसुगंधिकुसुमान्वितैः ॥७॥
यवयावकसिंदुररक्तचंदनसंयुतैः ॥
मत्स्यमांसादिभिर्विरमधुभिसाज्यपायसैः ॥८॥
भक्त्योपनीतैःमंत्रेणसाधितैःशक्तिभिसह ॥
पंचोपचारैर्नैवेद्यैर्बलिभिर्बहुशोणितैः ॥९॥
धूपदीपैर्महादेवींपूजयित्वामनोहरैः ॥
शवारूढाश्चितास्थोवास्मशानालयमागतः॥१०॥
अनन्यचेताः स्थिरधीमुक्तकेशादिगंबरः॥
सर्वविद्यावतांश्रेष्टोदुर्जयःशत्रुमर्दनः ॥११॥
वायुतुल्यबलोलोकेसर्वसिद्धिसमन्वितः॥
मार्कंडेयइवायुष्मान्जरापलितवर्जितः ॥१२॥
महेशइवयोगींद्रः सर्वाकर्षणकारकः ॥
बहुकिंकथ्यतेतस्यपठतः स्तवमुत्तमं ॥१३॥
कुबेरइवविताढ्योजायतेमदनोपमः ॥
रजस्वलाभगंपश्यन्जप्त्वाकालिमहामनुं ॥१४॥
आलोकयेत्तुचिंतयेद्वात्रिवस्त्रांपरयोषितां ॥

सुरतेपुमनुंजप्त्वास्तुत्वाभगवतींशिवां ॥१५॥
शुक्रोत्सारणकालेचजपपूजापरायणः ॥
जप्त्वास्तुत्वामहाकालिंखेचरोजायतेचिरात् ॥१६॥
स्तंभयेदखिलान्लोकान्राजानमपिमोहयेत् ॥
आकर्षयेद्देवकन्यांवशयेदपिकेशवं ॥१७॥
नरमार्जारमहिषंछागमूषकशोणितैः ॥
सास्थिमांसैःसमधुभिःसामृतैर्दुग्धपायसैः॥१८॥
योनिक्षाल्लीततोयेनभगलिंगामृतेनच ॥
शुक्रैःपूजाजपांतेचकालिंसतर्प्यसाधकः॥
मातेवकालिकातस्यसर्वत्रहितकारिणी॥१९॥
इतिश्रीकालिकुलसर्वस्वेशिवपरशुराम
संवादेमहाकालिस्तुतिसहस्रनामसंपूर्ण ॥
अथरुद्रयामलोक्तश्यामास्तवप्रारंभ्यते ॥
॥ भैरवउवाच ॥
महतीचेतनामायामहादेवीमहेश्वरी ॥
इत्यादि॥अष्टोत्तरमकारनामानि ॥
यइदंकीर्तयेद्भक्त्याविपमस्थोभवेद्यदि ॥
लोहपंजरमध्यस्थंतस्यनश्यतिबंधनं ॥१॥
राजानोदासतांयांतिभवेत्सर्वजनप्रियः ॥
अचलांश्रियमाप्नोतितस्यनश्यत्युपद्रवाः॥२॥

संग्रामेविजयेन्छत्रूनखगवत्यंन्त्रगानिच ॥
नविपक्रमतेदेहेनमृत्युःपावकेजले ॥ ३ ॥
नाकालेमरणंतस्यकदाचित्संभविष्यति॥इतिस्तवं॥

अथस्वरूपाख्यकर्पूरस्तववीरतंत्रे.

सलोमास्थिस्वैरंपललमपिमार्जारमपिते
परंमैषमौषंनरमहिषयोछागमपिवा ॥
बलिंतेपुजायामपिवितरतांमर्त्यवसतां
सतांसिद्धिःसर्वाप्रतिपदमपूर्वाप्रभवति ॥१॥
श्रीसुंदरीणांचरणारविंदं,विनानमन्येनच
पूजयामो,नजल्पयामोनचकल्पयामो,
नचाश्रयामोनचदेवमन्यं ॥ २॥

॥अथरुद्रयामलेकालभैरवसंवादेकालिकवचगुटिका॥

भूर्जत्वचिसमालिख्यचक्रतत्रविनिर्मितं ॥
एतत्यंत्रमहेशानिसुरासुरसुदुर्लभं ॥१॥
गोरोचनाकुंकुमेनतत्स्वदादौकवचंलिखेत् ॥
श्वेतसूत्रेणसंवेष्टयलाक्षयापरिमंडयेत् ॥२॥
संपूज्यदेवतारूपागुटिकासर्वकामदा ॥
एषातुगुटिकादेविकंठलग्नाखिलप्रदा ॥३॥
शापेनदयकरादेवीनाभीस्तंभनकारीणी ॥
बद्धावामभुजेक्षिप्तावैरीपक्षक्षयंकरी ॥४॥

विद्याकरीलल्लाटस्थाशिखायांतुयशप्रदा ॥५॥

॥ अथवज्रपंजराख्यंकालिकवचं ॥

ऋषिरस्यस्मृतःशंभुःछंदःसंस्कृतिरुत्तमं ॥

देवतादक्षिणांध्यात्वाकालिप्रत्यक्षरंन्यसेत् ॥६॥

क्रींबीजं॥ इतिकालिकाकल्पेत्रैलोक्यं

मोहनंनामकवचं॥ पुरश्चरणविधिः॥

शिवोहमितिभावयेत्जपंकुर्यात् ॥

रात्रौमांसासवैर्देवींपूजयित्वाविधानतः ॥

ततोनग्नांस्त्रियंलग्नेरमणंदधतोपिवा ॥८॥

योनिकुंडेस्थितंसर्पिर्मांसमत्स्ययुतंभृशं ॥

दशांशतर्पयेन्मद्यैर्मांसमिश्रैःसुसाधकैः ॥९॥

मद्यमांसंचमत्स्यंचचर्वणंचमदापयेत् ॥

विनापीत्वासुरांभुक्त्वामांसंगत्वारजस्वलां ॥१०॥

योजपेद्दक्षिणादेवींतस्यदुःखंपदेपदे ॥

तर्पयेच्चपयोभिश्चरक्तधारायुतैस्तथा ॥११॥

मज्जाभिश्चतथातद्वत्सुकीयेनकचेनच ॥

मूषमार्जाररक्तेनतर्पयेत्परदेवतां ॥१२॥

एवंतर्पणमात्रेणसाक्षात्सिद्धिश्वरोभवेत् ॥

बृहस्पतिसमोभूत्वादिविवत्भुविमोदते ॥१३॥

नतस्यपापपुण्यानिजीवन्मुक्तोभवेद्ध्रुवं ॥

योनिरूपंहिकुंडंवैकृत्वासंधिकसत्तमः॥१४॥
तत्रकार्याहिमंत्रेणअग्नेःस्थापनिकाक्रियाः ॥
महकालायदेवायदद्याच्चप्रथमाहुतिं ॥१५॥
एवंमद्येनमांसेनभक्ष्येनरुधिरेणवा ॥
कृष्णपुष्पेणसाज्येनसरक्तेनविशेषतः॥१६॥
श्रुतिः॥सुभगोदकेनतर्पणंतेनैवपूजनं ॥
॥ ससर्वंहत्यांतरति ॥
अथपंचमकारेणसर्वमाप्नोति ॥
विद्यापशुंधनंधान्यंसर्वंवशंच ॥
नान्यःपरमंपंथाविद्यते॥ससर्वंपापंतरति ॥
इत्याहभगवान्शिवः॥इतिकालिकाश्रुतौ ॥
आनीयकन्यकांभद्रांघृणालज्जाविवर्जितं ॥
॥ कुमारितंत्रे ॥
नटीकपालिवेश्याचरजकीनापितांगना ॥
ब्राह्मणीशूद्रकन्याचतथागोपालकन्यका॥१७॥
मालाकारस्यकन्यापिनवकन्याप्रकीर्तिता ॥
एतासुकांचिदानीयततस्तयोनिमंडले ॥१८॥
पूजयित्वामहादेवीततोमैथुनमाचरेत् ॥
स्वाहांतोयंमहामंत्रःशुक्रत्यागेनिधीयते ॥१९॥

॥ अथप्रयोगलिख्यते ॥

निशायांशक्तिपूर्वोक्तांस्ववामभागेसमानीय ॥

तत्गात्रेपुकल्योक्तन्यासान्विधाय ॥२०॥

अदीक्षिताचेत्तदापूर्वोक्ताभिषेकमंत्रेणाभिषेकंकृत्वा॥

तस्याःकर्णेदेवींबुध्यामंत्रमुच्चरेत् ॥

इतिशक्तिशुद्धिःततोमकारपंचमेनदेवींसंपूज्य॥

शिवोहमितिभावयन्उभयोःसंगमंकृत्वा॥

॥ अथकुलिनाचारक्रमोलिख्यते ॥

कुलस्त्रीवीरनिंदाचतत्द्रव्यास्यापहारणं॥

स्त्रीपुरोपंप्रहस्यंचवर्जयेन्मतिमान्सदा॥२१॥

स्त्रीमयंचजगत्सर्वस्ययंतावत्तथाभवेत् ॥

कुलजांयुवतींवीक्ष्यनमस्कुर्यात्समाहित॥२२॥

तासांप्रहारंनिंदांचकौटिल्यमप्रियंतथा ॥

सर्वथानचकर्तव्यमन्यथासिद्धिरोधकृत्॥२३॥

स्त्रियोदेवाःस्त्रियःप्राणःस्त्रियएवविभूषणं ॥

स्त्रीद्वेषोनैवकर्तव्योविशेषापूजनंमहत्॥२४॥

॥ कालिकातंत्रे.॥

रजस्वलास्त्रियंगत्वारेतोरुधिरसंयुतं ॥

द्रव्यंवाष्टविधंमांसंमत्स्यंबहुविधंप्रिये॥२५॥

निवेद्यचात्मसात्कृत्वाकालिभक्तिपरायणः ॥

तदाभोगंचमोक्षंचलभतेनात्रसंशयः ॥२६॥
ध्यानं ॥ शवाविष्टांमहाभीमांघोरदंष्ट्रांवरप्रदा ॥
मुक्तकेशिललज्जिव्हांपिबंतिरुधिरंमुहु ॥२७॥
वीरासनसमासीनांमहाकालोपरिस्थितां ॥
मुंडमालागलद्रक्तचर्चितांपीवरस्तनीं ॥२८॥
सेविताखिलसिद्धौघैःसिद्धिभिःसेवीतांपरां ॥
एवंतांकालिकाध्यात्वापुजयेत्कुलनायकः॥२९॥
स्मशानशयनेवीरःकुलस्त्रीपुविहार मान् ॥
कुलामृतनिपेसीचकालितत्वार्थकोविदुः॥३०॥
ब्रह्मादीभुवनेतस्यसमोनास्तिनरोपरः ॥
सएवसुकृतिलोकेसएवकुलभूपणः॥३१॥
धन्याचजननीतस्ययेनदेवीसमर्चिता ॥
वक्त्रेसरस्वतीतस्यालक्ष्मिस्तस्यसदागृहे ॥३२॥
तीर्थानिदेवीसंसंतियेनदेवीसमर्चिता ॥३३॥
इतिश्रीपूर्णानंदपरमहंसपरिव्राजकविरचितेश्यामारहस्येविद्यामहात्म्यकथितंनामसप्तमपरीछेदः॥
न्यासंविनाभवेन्मुकःसुप्तस्यादासनंविना ॥
पल्लवेनविनामंत्रोनमःसंपरिकीर्त्तितः ॥१॥
पल्लवोवासनाप्रोक्ताःशिरःप्रणवउच्यते ॥
शिरोहिनोमृतःप्रोक्तोनृथामंत्रगृर्स्विना ॥२॥

पंचमांचपरंनास्तिशाक्तानांसुखमोक्षयोः ॥
भगरूपाचयादेवीरेतःप्रीतासदानघे ॥३॥
रेतसातर्पणंतस्यान्मद्यैर्मांसैःसहप्रिये ॥४॥

॥ अथकुंडगोलादीग्रग्रहणविधिः ॥

आनीयप्रमदांमत्तांदीक्षितायौवनोन्नतां ॥
स्वकांतापरकांतावाघृणालज्जाविवर्जितां ॥५॥
तस्याःयोनौन्यसेत्मंत्रमैथुनंकारयेततः ॥
मथ्यमानेपुरस्तस्याजायतेतत्वमुत्तमं ॥६॥
गृएहीयाततप्रयत्नेनद्रव्यंकुंडोद्भवांशुभं ॥
निशंकमाहितंद्रव्यंगृहित्वातेनपूजयेत् ॥७॥
सांनिध्याजायतेदेवीसर्वकाममुपालभेत् ॥
चर्व्यंचोप्यंनिवेद्याथवस्त्रालंकरणादिकं ॥८॥
पूजयेदक्षतैःशुद्धैतस्याःमदनमंदिरं ॥
तस्यास्तुमदनागारेपुजयेत्परमेश्वरीं ॥९॥

शाक्तियामले ॥

सुंदरीशोभनांक्षीणांपीनोन्नतपयोधरां ॥
द्विरष्टवर्षदेशीयांसदाकामाभिलाषिनीं ॥१०॥
पूर्वोक्तक्रमयोगेनकृत्वान्यासादिकंततः ॥
तत्वप्रगृह्ययत्नेनपूजार्थसाधकोत्तमः ॥११॥
इदंगोलोद्भवंद्रव्यंदेवतापुष्टिकारकं ॥

स्वयंभुकुसुमंदिव्यंत्रैलोक्येचातिदुर्लभं ॥१२॥
कुंडगोलोद्भवैर्द्रव्यैयोनौदेवींप्रपूजयेत् ॥
यंयंवांछतिकामंचतंतंसापिप्रयच्छति ॥१३॥

॥ अथद्वितीयजनंउत्तरतंत्रे ॥

शक्तिंनटीकपालीइत्यादिसंस्थाप्यपूजामारभेत्॥
सुगंधिरक्तकुसुमांसर्वाभरणभूषितां ॥
समाकर्णसपर्यकेपूजयेत्कुलनायिकां ॥१॥
स्तनद्वयेवसंतंचमदनंचैवपूजयेत् ॥

॥ अथज्ञानार्णवे ॥

शिवशक्तिसमायोगोयोगएवनसंशयः ॥
सीत्कारोमंत्ररूपंचवचनंस्तवनंभवेत् ॥३॥
आलिंगनंतुकस्तुरीचुंबनंकर्पूरंभवेत् ॥
नखदंष्ट्राक्षतान्पत्रंपुष्पाणिविविधानिच ॥४॥
मंथनंतर्पणंविद्धिवीर्यपातोविसर्जनं ॥५॥

॥ कुलार्णवे ॥

आलिंगनंचुंबनंचस्तनयोमर्दनंतथा ॥
दर्शनंस्पर्शनंयेनेर्विकारोलिंगघर्षणं ॥६॥
प्रवेशाद्यपरंदेवीनवपुष्पाणिपूजयेत् ॥
तेनामृतेनदिव्येनसर्वेतुष्टाभवंतिच ॥७॥
कुल्यामृतसमादायततोर्घ्यनिःक्षिपेद्बुधः ॥

मांसप्रधाननैवेद्यंसंध्याकालेनिवेदयेत्
नभावेनविनादेवतंत्रमंत्राफलप्रदाः ॥ ८ ॥
केवलंकुलयोगेनप्रसीदामिनचान्यथा ॥
भैरवोहंनचान्योस्मिनदेवोमत्परःक्वचित्
शिवोहंभैरवानंदोमत्तोहंकुलनायकः ॥१०॥
एवंभिक्षांचरन्भिक्षुभैरवाचारतत्परः ॥

॥ इतिवीरभावः ॥

तस्माद्यत्नात्तुद्रोगयुक्तोभवेद्वीरवरःसुधीः ॥११॥
भोगेनमोक्षमाप्नोतिभोगेनकुलसाधनं ॥
एकाकीविजनेदेशेस्मशानेपर्वतेवने ॥१२॥
शुन्यागेहेनदीतीरेनिसंगोविचरेन्मुदा ॥
ब्रह्महत्यादीकंपापंक्षणान्नश्यतिनिश्चितं ॥१३॥
क्वचिच्छिष्टःक्वचिनष्टःक्वचिन्भ्रष्टःपिशाचवत् १४

॥ अथपशुभावः ॥

नमत्स्यभोजनंकुर्यान्नस्त्रियंमनसास्मरेत् ॥
मैथुनंतत्कथालापंतद्गोष्टिंपरिवर्जयेत् ॥१५॥
विष्णुतंत्रोक्तपूर्वादीतदनुष्टानमेवच ॥
नित्यंश्राद्धंगवाग्रासं ॥
संध्यावंदनमेवच॥इतिपशुभावः ॥१६॥
महाचीनक्रमेदेवीध्यालानन्नप्रपूज्यच ॥

यामार्द्धाभ्यंतरेसम्यक्पूजोपकरणंबलिं ॥१७॥
सामिपान्नंगुडछागंसुरापिष्टकपायसं ॥
तदापिचबलिंदद्यात्महिषंछागलेनवा ॥१८॥
सयातिपरमांसिद्धिंदेवैरपिसुदुर्लभां ॥
आकर्षणवशीकारंमारणोच्चाटनादिकं ॥१९॥
स्तंभनंमोहनंचैवद्रावणंत्रासनंतथा ॥
परकायाप्रवेशंच पुरप्रस्रवनंतथा ॥२०॥
महेंद्रजालमिंद्रादीजालानारंचनातथा ॥
सयातिखेचरत्वंचदैवत्वमपिचैवही ॥२१॥
सर्वसिद्धिभवत्येवअहोरात्रात्कलौयुगे ॥
नारीरक्तयुतंकृत्वापर्णानाशतमुत्तमं ॥२२॥
रेतोयुक्तेनपत्रेणचार्कस्यैवसहस्रशः ॥
स्मशानेभ्यर्चकालिंतुसर्वसिद्धिंसविंदति ॥२३॥
कारयेत्नात्रसंदेहोमहाकालवचंयथा ॥
पूजनीयाकलौदेवीकेवलैरासवैश्श्रुतैः ॥२४॥
सौत्रामण्यांकुलाचारेब्रह्मणःप्रपिबेत्सुरां ॥
अन्यत्रकामतःपित्वाप्रायश्चित्तीभवेन्नरः ॥२५॥

॥ अथशवपूजा ॥

चांडालचाभिभूयंचशीघ्रसिद्धिफलप्रदं ॥
शवंप्रणवेनमोक्षयेत् पुष्पांजलिंदत्वा ॥

धूपादिपंकृत्वाबलिंदद्यात् ॥
यमायप्रेताधिपतयेनमः ॥
शवोपरिसमारूढगुरुपुजादिकंचरेत् ॥२७॥
॥ इतिविरसाधनं ॥
भैरवावटुकाश्चैवकुलशास्त्रपरायणः ॥
ध्यात्वाशवंजलेगर्तेवानिक्षिपेत्स्नानमाचरेत् ॥२८॥
छागमाहिषमेषाणांचतुर्दिक्षुःशवाक्षिपेत् ॥
कबंधान्मुंडपूजांश्चदिपादिभिरलंकृतान् ॥
इतिनीलक्रमं ॥२९॥

॥ अथजपं ॥

चंद्रसूर्यग्रहेचैवग्रासावधिविमुक्तितः ॥
नद्यासमुद्रगामिन्यांनाभिमात्रोदकेस्थितः ॥३०॥
स्पर्शाद्विमुक्तिपर्यंतंजपंकुर्यादनन्यधीः ॥३१॥

॥ अथपूजा ॥

कृष्णांचतुर्दशींप्राप्यनवम्यांतंमहोत्सवे ॥
अष्टमीनवमीरात्रोपूजाकार्याविशेषतः ॥३२॥
दशम्यांपारणंकुर्यान्मस्यमासादिभिःशिवे ॥
सिंदूरेणनवकोणवृत्ताष्टांदलंचतुर्द्वारात्मकंयंत्रं ॥
विलिख्यपुरतःसंस्थाप्य ॥ तत्रपूजांकृत्वाध्यायेत् ॥
मुंडोपरिभवेन्मुंडंसदर्पिंसनिधापयेत् ॥३३॥

ततस्तुष्टाजगद्धात्रीकालिकापरमेश्वरी ॥
नायंप्रकाशयेद्धिमान् प्राणैःकंठगतैरपि ॥२५॥
नवदेभकिहिनायभैरवेनेतिभाषितं ॥२६॥
इतिपंचदशःपरिछेदः ॥१५॥

॥ अथकुंडनियमः ॥

शांतौपुष्टौतथारोग्येकुंडंचचतुरस्त्रकं ॥
आकर्षणेत्रिकोणंस्याउच्चाटणेचवर्तुलं ॥१॥
होमद्रव्यं॥नारीरजोंकितंकृत्वापर्णानांशतमुत्तमं॥
नतस्यदुर्लभंकिंचित्त्रिपुलोकेषुविद्यते ॥२॥
रक्तपुष्पेणसाज्येनसरक्तेनविशेषतः ॥
आमिषादिभिरप्येवंजुहुयात्सर्वसिद्धये ॥३॥
मासंरक्ततिलंकेशंनखंआज्यंचपायसं ॥
कर्पूरहोमतोमंत्रीसर्वाभिष्टानिसाधयेत् ॥४॥

॥ अथपूजा ॥

रक्तैराकर्षणेपुष्पैपीतैःस्तंभनकर्मणि ॥
मारणेकृष्णपुष्पैस्तुपूजयेघोरदक्षिणां ॥५॥
मद्यमांसंविनावत्सकुलपूजांसमाचरेत् ॥
जन्मांतरसहस्रस्यसुकृतंतस्यनश्यति ॥६॥
नरास्थिनिलिखेन्मंत्रेक्षारयुक्तहरिद्रया ॥
निक्षिप्यतेयस्यगेहेतस्यमृत्युस्त्रिमासतः॥७॥

स्मशानांगारमादायमंगलेवासरेनिशि ॥
कृष्णवस्त्रेणसंवेष्ट्यंत्रभियारक्ततंतुना ॥८॥
शताभिमंत्रितंतच्चनिक्षिपेद्वैरिवेश्मनी ॥
सप्ताहाभ्यंतरेतस्यचोच्चाटनमिदंमहत् ॥९॥

॥ अथवेतालसिद्धिः ॥

भौमवारेमध्यरात्रेस्मशानेसाधकोत्तमः ॥
तस्योपरिशवंकृत्वापूजयित्वायथाविधि ॥१०॥
ततोमात्रेबलिंदत्वाकाष्टमामन्त्रयेत्ततः ॥
अथवाकृष्णमार्जारमेकघातेनघातयेत् ॥११॥

॥अथकौलिकार्चनं॥

अश्वमेधसहस्त्राणीवाजपेयशतानिच ॥
इष्ट्वायत्फलमाप्नोतितत्फलंकौलिकार्चनात् ॥१२॥
कौलिकांनिंदयेद्यस्तुकुलशास्त्रपरायणः ॥
सयातिनरकेघोरेसत्यमेवनसंशयः ॥१३॥
इतिअष्टादशपरिछेदः ॥

॥ तारासूक्ते ॥

अथाहैनांब्रह्मरंध्रेरातामाप्नोतितारयतीतितारा ॥
ब्रह्माविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिवबिंदु
मेलनरूपानित्यायथाएषानिलाख्यासरस्वती ॥
इमांमधीयमानंस्तर्कागमपुराण

न्याकरणकाव्यादिवाग्धीशोभवति ॥२॥
हेभगवत्येकजटेविद्महेविकटदंष्ट्रेधीमही ॥
॥ तन्नस्ताराप्रचोदयात् ॥
प्रणवंसर्वविघ्नाश्चउत्सारयहुंफट् ॥
उग्रतारादेवता॥ हुंबीजंफट्शक्तिः॥
ह्रींकीलकंनीलसरस्वतिदेवी॥त्रिपुलोकेपुगोपिता॥
पायसंकृपरंदद्यान्मोदकंखंडशर्करां ॥१॥
वलिंदद्यातुछागंचगोधमांसमनुतमं ॥.
रंभापुष्पशालमत्स्यंजुहुयाच्चप्रयत्नतः ॥२॥
योनियुग्मंलिखेद्दुर्बलाक्षारसेनमंत्रवित् ॥
वेष्टितंपीतवस्त्रेणरज्जुनापरिवेष्टयेत् ॥३॥
स्त्रीणांवामभूजेनैवशिशुनांकठभूपणं ॥
वंध्यापिलभ्यतेपुत्रान्निर्धनीधनमाप्नुयात् ॥४॥
इतिश्रीमहामहोपाध्यायपरमहंसपरिव्राजकश्रीपूर्णानंदगीरोविरचितेश्यामारहस्येद्वाविंशतितमःपरीछेदः॥
सवत्. १८९० ॥

॥ अथदेवीरहस्य ॥

॥ भैरवउवाच ॥

अधुनादेवीवक्ष्यामीसुरोत्पत्तीमहेश्वरी ॥
यस्याश्रवणमात्रेणदीक्षाफलंमवाप्नुयात् ॥१॥

समुद्रेमथ्यमानेतुक्षीराब्धौसागरोत्तमे ॥
तत्रोत्पन्नासुरादेवीकुमारीरूपधारिणी ॥२॥
नग्नाकालाग्निसदृशीकृतहासोलसन्मुखी ॥
अष्टादशभुजादिव्यानवकुंभधरातथा ॥३॥
नवपात्रधरातद्वन्मदिरारूणलोचना ॥
नानाकुसुमभूषाढ्यामुक्तकेशीत्रीलोचना ॥४॥
नानारत्नांगदयुतामुक्ताहाररलतांचिता ॥
रत्नांगुलीयशोभाढ्यातुंगपीनस्तनांचिता ॥५॥
विचित्ररत्नखचिताकांचिगुणनितंबिनी ॥
रत्नसिंव्हासनयुतापरमानंददायिनी ॥६॥
तांदृष्ट्वातुष्टुवुर्देवोब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥
ससुरासुरगंधर्वाः सेश्वराचसदाशिवा ॥७॥
तदाप्रसन्नवदनावरदानोद्यतासुरा ॥
पात्राद्विंदुःपपातोर्व्यांजातागोमजातयः ॥८॥
तत्कणेभ्योपिदेवेशीजातानैधान्यजातयः ॥
पैष्टिप्रोक्तासुरादेवीपरमानंददायिनी ॥९॥
ततोददौपरंपात्रंविष्णवेप्रभविष्णवे ॥
पात्राद्विंदुपतंतोर्व्यासंविजातातततःप्रिये ॥१०॥
तत्कणेभ्योपिदेवेशीतद्भेदाःकनकादयः ॥
अन्येचबहवोजाताभेदामदनवर्धनाः ॥११॥

विजयेतिमयाप्रोक्तविष्णवीपरमार्थदा ॥
संविदासर्वयोर्मध्येसंविदेवगरीयसी ॥१२॥
ततोददौपरंपात्रंश्रीसुरापरमेष्ठिने ॥
पात्राद्बिंदुःपततोर्व्याजाताशीघ्रंपरूपकाः ॥१३॥
तत्कणेभ्योपिसंजाताभेदाक्षौत्ररसादयः ॥
पानकंप्रोक्तमिशानीसर्वसाधारणंपरं ॥१४॥
ततोददौपरंपात्रंद्रायामृतनिर्भरं ॥
पात्राद्बिंदुःपपातोर्व्याजाताजातीफलादयः ॥१५॥
तत्कणेभ्योपिसंजाताभेदाश्चामलकादयः ॥
पानकंनामतद्दिव्यरसायनमुदाहृतं ॥१६॥
ततोददौपरंपात्रंगुरुवेगीरजेसुरा ॥
पात्राद्बिंदुपतंतोर्व्यागुडपुष्पततःशिवे ॥
जातंतत्कणजाभेदानारीकेलफलादयः ॥१७॥
पानकंनामदेवेशीरसायनमिदंपरं ॥
ततोददौपरंपात्रंशुक्रायामृतपुरीतं ॥१८॥
पात्राद्बिंदुःपपातोर्व्याजाताखर्जुरपादपाः ॥
तत्कणेभ्योपिसंजाताभेदाबादामकादयः ॥१९॥
पानकंसदपिप्रोक्तंदिव्यंसंतोपकारणं ॥
ततोददौपरंपात्रंसूर्याचंद्रमसौत्सकृत् ॥२०॥
पात्राद्बिंदुःपततोर्व्याजातासंजीवनौपधीः ॥

तत्कणेभ्योपिसंजाताविविधौषधयःशिवे ॥२१॥
पानकंचदपिप्रोक्तंसर्वसाधारणंपरं ॥
सर्वार्थफलदंदेविसर्वसारस्वतंप्रदं ॥२२॥
दत्वादिव्यंरसंदेवीसुरातत्रातिरोदधे ॥
तेसर्वेपरमेशानीसुरानंदैकनिर्भराः ॥२३॥
सदाशिवादयोदेवाःसुरायैवरंददुः ॥
येपिबंतिपरंपानंपरमानंदकारणं ॥२४॥
तेसर्वेयांतिपरमंपदंशाश्वतमव्ययं ॥
विनागौडीविनामाध्वीसुरांयःपुजयेच्छिवां ॥२५॥
शिवंनारायणंरुद्रंसभवेन्निरयास्पदं ॥
अदीक्षितःपशुर्देवीदिक्षीतोप्यसुरःपशुः ॥२६॥
तस्मात्सुरांशिवेभ्युर्च्युःपूजायांवैष्णवोत्तमः ॥
पिबेद्गौडीतथामाध्वींपैष्टीमासवमुत्तमं ॥२७॥
पानकंचशुभंसर्वंपूर्वाभावेपरःपरः ॥

॥ देव्युवाच ॥

भगवन्सर्वतंत्रज्ञकौलिकेश्वरशंकर ॥
त्वत्प्रसादान्मयावाप्तत्वंदैव्याःसुदुर्लभं ॥१॥
तंत्रमंत्रात्मकंगुह्यंसूचितंभवतास्वयं ॥
परंदेवरहस्याख्यंदीक्षापूर्ववदस्वमे ॥२॥

॥ श्री भैरवउवाच ॥
देवीरहस्यमीशानिशृणुत्वंभक्तिपूर्वकं ॥
येनश्रवणमात्रेणकोटिपूजाफलंलभेत् ॥१॥
विचार्यविधिवद्धीमान्दीक्षाकर्मसमाचरेत् ॥
दीक्षितःसभवेज्ज्ञानीदीक्षाहीनोभवेत्पशुः ॥२॥
गुरोरभावेदेवेशीपुस्तकंगुरुमाश्रयेत् ॥
तत्रादौशुभनक्षत्रेस्नात्वासंपूज्यभैरवं ॥३॥
गत्वानदितटंदिव्यंलताकुसुमसुंदरं ॥
द्विपत्रापरमंपुण्यंदेवानामपिदुर्लभं ॥४॥
तत्रदेवीपरादेव्याःश्रीचक्रंतुविभावयेत् ॥
त्रिकोणंबिंदुसंयुक्तंषट्कोणंवृत्तमंडलं ॥५॥
दीक्षायंत्रमिदंदेवीदिक्षाकालेप्रपूजयेत् ॥
ब्राह्मीनारायणीचैवकौमारीचापराजिता ॥६॥
माहेश्वरीचचामुंडावाराहीनारसिंहिका ॥
वामावर्तक्रमेणैवपूजनीयाविशेषतः ॥७॥
तत्रैवपूजयेदष्टभैरवान्भैरवेश्वरी ॥
महाकालंचकालाग्निकरालंविकरालकं ॥८॥
संहाररुरुमिशानंकपिलोन्मत्तभैरवं ॥
संपूज्यविधिवत्तत्रगंधाक्षतप्रसूनकैः ॥९॥
पत्रमभ्यर्चदेवेशीगुरुंसंपूज्ययेततः ॥

पूर्वेततःखनेत्कुंडयोनिरूपंत्रिकोणकः ॥१०॥
वन्हेसमक्षयंत्रायेदीक्षांपरमदुर्लभां ॥
कर्णमूलेमहाविद्यांश्रीविद्यांसाधकेश्वरः ॥११॥
ततोदेव्याश्चगायत्रींततोमूलमहेश्वरी ॥
एवंसमर्प्यदेवेशीकुत्वाहोमंयथाविधि ॥१२॥
रात्रौपरस्त्रीयांबालांश्यामांवामदनातुरां ॥
आनीयपूजयेन्मंत्रीयथोक्तविधिनाशिवे ॥१३॥
नग्नोमुक्तकचोधीरोमधुपानपरायणः ॥
शक्तिवक्षःसमाश्लीष्टोजपेन्मूलंयथाविधि ॥१४॥
कर्मणामनसावाचामंत्रीकल्पद्रुमोभवेत् ॥
दशांशंसंस्कृतोमंत्रीभवेच्चिंतामणीक्षणात् ॥१५॥
प्रवृत्तेभैरवेचक्रेसर्वेवर्णाद्विजातयः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तःसर्वसिध्धिसमन्वितः ॥१६॥
इहलोकेश्रीयंप्राप्यभूक्त्वाभोगान्यथेप्सितान् ॥
परत्रपरमेशानीमृतोदेवीपदंव्रजेत् ॥१७॥

॥ देव्युवाच ॥

देवदेवमहादेवशरणागतवत्सल ॥
सुरापानविधिंब्रूहियेनसिद्धिर्भवेद्ध्रुवं ॥१॥

॥ भैरवउवाच ॥

श्रुणुदेवीप्रवक्ष्यामीपानपूजाविधिंपरं ॥

विनापानंनसिद्धिस्यात्साधकानांकलौयुगे ॥२॥
संपूज्यसशिवांदेवींभक्तेभैरवार्चने ॥
तत्रपानंसुरादेव्यामहानंदप्रदायकं ॥३॥
अहोरात्रंसुरापानंभोगदंमोक्षदंशिवे ॥
यावन्नचलतेदृष्टीयावन्नचलतेमनः ॥४॥
तावत्पानंप्रकर्तव्यंपशुपानंततःपरं ॥
अधुनादेविवक्ष्यामिशोधनंसर्वकामदं ॥५॥
सुदिनेदेविगत्वादौस्मशानंसाधकोत्तमः ॥
कपालंनरदंतानांमालाकंकणमीश्वरी ॥६॥
अष्टोत्तरशतजप्त्वामूलंयंत्रंनिवापयेत् ॥
स्मशानभस्मलिप्तेनशुद्धेनसुरवंदिते ॥७॥
वामाचारपरःश्रीमान्योनकुर्यान्महेश्वरी ॥
यंत्रमालाविनातस्यमंत्रहानिर्भवेद्ध्रुवं ॥८॥
॥ इतिदेवीरहस्यंसंपूर्ण. ॥

॥ अथककारादिकालिसहस्रनामंलिख्यते ॥
विपरीतरतिंकृत्वाचिंतयंतिभजंतिये ॥
तेषांवरंप्रदास्यामीतत्रनित्यंवसाम्यहं ॥१॥
मद्यैर्मांसैस्तथाशुक्रैःसर्वरकैरपिप्रिये ॥
तर्पयेत्पुजयेत्कालिंविपरीतरतिंचरेत् ॥२॥

खड्गहस्तोमुक्तकेशोदिगंबरविभुषितः ॥
शैयास्थोमैथुनानंदिवेश्यासंगपरायणः ॥३॥
पठेन्नामसहस्राख्यंमेधासाम्राज्यदायकं ॥
विपरीतरतौदेविकालितिष्ठतिनिश्चयशः ॥४॥
महाकालेनचसमउपविष्टरतांतुरां ॥
स्मशानस्थोमहारुद्रोमहाकालोदिगंबरः ॥५॥
ज्वलत्पावकमध्यस्थोभस्मशय्याव्यवस्थितः ॥
विपरीतरतांतत्रकालिकाहृदयोपरी ॥६॥
पेयंखाद्यंचचोष्यंचतौचकृत्वापरस्परं ॥
एवंसंचितयेत्कालींसर्वसिद्धिप्रजायते ॥७॥
ॐक्रींकालींक्रूंकरालींकल्याणींकमलाकलाः॥
कुलटाचुंबनोयुक्ताकुलटासंगतोपिता ॥९॥
कुचमर्दनसंतुष्टाकामगेहविकाशिनी ॥
॥इत्यादिसहस्रनाम॥
योनिपुष्पैःलिंगपुष्पैकुंडगोलोद्भवैरपी ॥१०॥
कालिपुष्पैलिंगतोयैर्योनिक्षालनविंदुभिः॥
पुजयित्वामहाकालिंशोधितैःशोणितैरपि॥११॥
तांबुलपूरितमुखैर्मुक्तकेशोदिगंबरः ॥
शवयोनिःस्थितोवीरस्मशानमुरतान्वितः॥१२॥
सर्वदुःखविनिर्मुक्तःत्रैलोक्यविजयीभवेत् ॥

शत्रुहर्त्ताकाव्यकर्त्ताभवेत्शिवसमःकली ॥१३॥
ऐश्वर्यंकमलासाक्षात्सिद्धाश्रीकालीकांत्रिका ॥
मनोरथमयीसीद्धिःतस्यहस्तेसदाभवेत् ॥१४॥
परदारासमालिंग्यसचुंब्यपरमेश्वरी ॥
योनिंविक्ष्यपठेस्तोत्रंकुबेरादधिकोभवेत् ॥१५॥
विद्यारात्रितुसंपूज्यपठेन्नामसहस्रकं ॥
तरुणींसुंदरींरम्यांचंचलांकामगर्वितां ॥१६॥
समानीयप्रयत्नेनसंशोध्यन्यासयोगतः ॥
प्रसंनमंचेसंस्थाप्यदेव्यावरणसंयुतं ॥१७॥
अष्टोत्तरशतंयोनिंसंमंत्र्यचुंब्ययत्नतः ॥
सयोगीभूयत्तस्त्यंसर्वविद्याधिपोभवेत् ॥१८॥
शुन्यागारेशिवारण्येशीवदेवालयेतथा ॥
स्मशानेचतडागेचगंगागर्भेचतुष्पथे ॥१९॥
कुटीनीग्रहमध्यस्तेएकलिंगेशिवालये ॥
मुंडेयोनौसतुस्तानाग्रहेवेश्याग्रहेतथा ॥२०॥
कालिंसंचिस्यमञपेदेतन्नामसहस्रकं ॥
पंचानंदपरोभूत्वापठीत्वाकालिकास्तवं ॥२१॥
विष्टरेशवबस्त्रेवापुष्पवस्त्रासनेपिवा ॥
जप्त्वाकालिसहस्राख्यंखेचरीसीद्धीभाग्भवेत् २२
ब्रह्मादिस्तंभयेदेवीयमादीनांतुमारणं ॥

नवीनविष्णुनीर्माणंमाहेशंमोहयेत्क्षणात् ॥२३॥
मेषमाहिषमार्जारखरछागनरादिकैः ॥
शोणितैसास्थिमांसैश्चसुरासिष्टैश्चपायसैः ॥२४॥
योनिक्षालणनीरैश्चयोनिअंगामृतैरपी ॥
स्वजातांकुसुमैपुज्यंजपांतेतर्पयेतूशिवां ॥२५॥
वेश्यालतागृहेगत्वातस्यचुंबनतत्परा ॥
तस्यायोनौमुखंदत्वातद्रसंविल्पनूजपेत् ॥२६॥
कालिकादर्शनंतस्यभवेसेवनसंशयः ॥
नृत्यपात्रागृहंगत्वामकारंपंचकान्वितः ॥२७॥
पात्रंसाधनकंकृत्वादिग्वस्त्रांतांसमाचरेत् ॥
शतद्वयंकुचद्वंद्वेशतनाभौकुलेश्वरी ॥२८॥
शतयोनौमहेशानी उत्थायचशतत्रयं ॥
शतावधानोभवतिमासमात्रेणसाधकः ॥२९॥
दंतमालाजपेत्कार्यागलेधार्यानृमुंडजा ॥
मातंगीनीसमाहूयमुंडयंत्रंप्रपुजयेत् ॥३०॥
अन्यांमालिंग्यप्रजपेत्अन्यांसंचुंब्यवैपठेत् ॥
अन्यासंपूजयेतत्रअन्यासंमर्दयेत्जपेत् ॥३१॥
अन्ययोनौशिवंदत्वाजपेनामसहस्त्रकं ॥
राजाभवतिदेवेशीमासपंचकयोगतः ॥३२॥
यत्रनिशाक्किमानीयगानशक्तिपरायणं ॥

कुलाचारक्रमेणैवतस्यायोनिंविकाशयेत् ॥३३॥
तत्रजिव्हाप्रदद्यात्तुजपेन्नामसहस्रकं ॥
महाकविवरोभूयात्रात्रकार्याविचारणा ॥३४॥
सिंदुरतिलकोदेवीवेश्यालापोनिरंतरं ॥
वेश्यागृहनिशाचारोरात्रौपरयटनूतथा ॥३५॥
शक्तिपुज्यायोनिदृष्टीःतांबूलपूरितानन: ॥
वेश्यामध्यगतंवीरंकदापश्यामिसाधकं ॥३६॥
एवंवदतिसाकालितस्माद्वेश्यावरामता ॥
कुमारीपूजयेभक्त्याजपांतेदेववत्मये ॥३७॥
भक्त्यापूज्यकुमारींतुवेश्याकुलसमुद्भवां ॥
स्ववामभागेसंस्थाप्यपठेन्नामसहस्रकं ॥३८॥
पुष्पयुक्ताभवेद्देवीसंयोगानंदतत्पर: ॥
त्रैलोक्याकर्षणीविद्यातस्यहस्तासदाभवेत् ॥३९॥
क्लींकालिकक्लींकालीक्लींकालीतिकेवला ॥
गोपनियंगोपनियंगोपनियंप्रयत्नत: ॥४०॥
क्लींकालीकेवलास्यात्तत्रात्रकार्याविचारणा ॥
तस्मात्रनिंद्येत्मनसाकर्मणावचसाकिमु ॥४१॥
क्लींकालिंविहायाथयत्काश्चित्मोक्षमिच्छति ॥
सतुशक्तिविनादेवीरतिसंभोगमिच्छति ॥४२॥
स्तंभनंमोहनंचैवमारणाकर्षणप्रीये ॥

वउयकारंतथोच्चाटंपीठीकंसुमनोहरं ॥४३॥
देवाःसर्वेनमस्यंतिकिंपुनर्मानवादयः ॥
ब्रह्माविष्णुशिवेंद्राश्चमोहनंजायतेशिवे ॥४४॥
रावणादिमहाशत्रूनुच्चाटयतितत्क्षणात् ॥
आकर्पयेदेवकन्यांमनुष्याणांचकाकथा ॥४५॥
मेपमाहिपरकेननररकेनचैवहि ॥
एपतर्पणमात्रेणसाक्षात्सिद्धिश्वरोभवेत् ॥४६॥
श्रीमदादीनाथविरचितायांमहाकालसहितायांकालि
महाकालसंवादेसुंदरीशक्तिदानाख्यंसर्वसाम्राजमेधाना
ाख्यंदक्षिणाकालिककारादीसहस्रकंनामस्तोत्रं. ॥

भगंकुंडंस्त्रुवालिंगंरोमदर्भश्चमेवच ॥
वीर्यआज्यंमनोहोताइत्युक्तंभैरवागमे ॥१॥
दूतिजनसमाहूयगृहीत्वातत्वमुत्तमं ॥
निक्षिप्यचालिपात्रेचततःपूजासमारभेत् ॥२॥
उत्तरज्ञानार्णवतंत्रे, महारहस्ये.

चांडालिकर्मकारीचमातंगीमांसकारकी ॥
मद्यकारीचरजकीक्षौरकीविश्वयोनिका ॥१॥
अष्टाकुलयोगिन्योसर्वसिद्धिप्रदायिका ॥
सुरूपातरुणीशांतानुकूलामुदिताशुचीः ॥२॥

शंकाहीनाभक्तियुक्तागुढशास्त्रोक्तयोगिनी ॥
गुरुदैवतभक्ताचसुचित्ताकौलिकाप्रिया ॥३॥
मनोहरासदाचाराशक्तिरेषासुलक्षणा ॥
दुष्टाप्राकर्कशालुब्धाकुत्सिताकुलदूषिता ॥४॥
निद्रासक्तातिदुर्गंधाहीनांगान्याविपीडिता ॥
ईदृशामंत्रयुक्तावाद्युतियोगेविवर्जयेत् ॥५॥
रासोल्लासतंत्रे.

॥ पंचमीप्रयोगः ॥

देवताग्रेस्ववामभागेत्रिकोणंपद्मंकारयेत् ॥
तस्योपरीआसनंसंस्थाप्य ॥
आसनोपरीशक्तिमग्रांस्थापयेत्॥
तस्याकर्णेमायाबीजंसमुच्चरेत् ॥
शक्तिहस्तंगृहित्वानिवेशयेत् ॥
तस्याःशरीरेन्यासान्कृत्वाषोडशोपचारैःपूजयेत्॥
पश्चात्संयोगंकारयेत् ॥
याशक्तिसामहेशानीहररूपस्तुसाधकः ॥
अन्योन्यंचिंतयेद्देवीदेवत्वमुपजायते ॥
मंथानंकारयेत् ॥ मूलअष्टोत्तरशतंजप्त्वा ॥
ओंऐंह्रींश्रींइतिपठित्वाभगस्यकोणत्रयेमूलेनपूजयेत्॥
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णवन्हौजुहोम्यहं ॥

पूर्णाहुतिंदद्यात् ॥ ततोतत्वंसंगृह्य ॥
यंत्रराजंतर्पयामी ॥ इतिद्वुतियागः ॥

वामेरामारमणकुशलादक्षिणेचालीपात्रं ॥
अग्रेमुद्राश्चणकवटकौसूकरश्चोष्णशुद्धिः ॥
तंत्रीवीणासरसकवितासद्गुरुःसत्कथायां ॥
कौलोमार्गेनिगमगहनोयोगिनामप्यगम्यः ॥१॥
अलीपिशितपुरंध्रिभोगपूजापरोहं ॥
बहुविधकुलमार्गारंभसंभावितोहं ॥
पशुजनविमुखोहंभैरवीमाश्रीतोहं ॥
गुरुचरणरतोहंभैरवोहंशिवोहं ॥२॥
करेपात्रंमुखेस्तोत्रमानंदोह्रदयांतरे ॥
भक्तिर्गुरुपदांभोजेशरणंकिमतःपरं ॥३॥
वामेचंद्रमुखीमुखेचमदिरापात्रंकरांभोरुहे ॥
मूर्ध्निश्रीगुरुचिंतनंभगवतिध्यानास्पदंमानसं ॥
जिव्हायांजपसाधनंपरिणतिःकौलक्रमाभ्यासने ॥
येसंतोनियतंविरंतीसुरसंतेभुक्तिमुक्तिगतः ॥४॥
वामाचारंप्रवक्ष्यामीश्रीदुर्गासाधनंपरं ॥
संविधायकलौशीघ्रंमांत्रिकःसिद्धिभाग्भवेत् ॥५॥
मानानुरूपेनसंभुतपात्रंपाषाणगंडकं ॥
आसनंसिंहचर्मादिकंकणंलोकचोदृवं ॥६॥

द्रव्यमासवतत्वाद्यंभक्ष्यंमांसादिकंशिवे ॥
चर्वणंपलमत्स्यादिमुद्रावीणारवाकथा ॥७॥
मैथुनंवरकांताभिःसर्ववर्णसमानतः ॥
वामाचारइतिप्रोक्तःसर्वसिद्धिप्रदःशिवे ॥८॥
कुलाचारप्रवक्ष्यामीसेव्यंयोगीभिरुत्तमैः ॥
कुलस्त्रियंकुलगुरुंकुलदेवींमहेश्वरी ॥९॥
हटादानीवसंपूज्यतथाभोगंविधायच ॥
रेतसातर्पयेदेवीश्रीदुर्गाचक्रनायकीं ॥१०॥
पानैःपेयैस्तथाभक्ष्यैसंतर्प्यकुलयोपितां ॥११॥
इत्याचारपरःश्रीमान्कुलस्त्रीगुरुपूजकः ॥
वामाचारपरोमंत्रीमुक्तिभाग्भवतिध्रुवं ॥१२॥
इत्यैवपटलोमुख्योदेव्याश्चाचारवल्लभः ॥
अदातव्योपिभक्तेभ्योनप्रकाशोमुमुक्षुभिः ॥१३॥
विधायधारांवदनेसुधायांश्रीचक्रमभ्यर्च्यकुलक्रमेण ॥
आस्वाद्यमद्यंपिशितंमृगाक्षीआलिंग्यमोक्षंसुधियोलभंते १४
आस्वादयंतःपिशितस्यखंडमाकंठपूर्णमदिरांपिबंतः ॥
मृगेक्षणासंगममात्ररंतोभुक्तिंचमुक्तिंचवरयंत्रजामः ॥१५॥
नास्वादितंवापिशितस्यखंडपंचाक्षरीपूर्णजपोनयत्र ॥
नयत्रसंगोमृगलोचनायाःस्तत्तदिनंदुर्दिनमेवमन्ये ॥१६॥
हालांपिबेद्दीक्षितमंदिरेपुसुप्तन्निशायांगणिकागृहेषु ॥

ान्गृहेभोजनमाचरंतोविराजतेकौलिकचक्रवर्त्ति।१७॥
स्तिभोगोनहितत्रमोक्षोयत्रास्तिमोक्षोनहितत्रभोगः १८
दरीतर्पणतत्पराणांभोगश्चमोक्षश्चकरद्वयेपि ॥१९॥

॥ कौलिकरहस्ये ॥

नौयेननखादितौसचणकौर्वेद्यापिनालिंगिता ॥
लायेनसहोदरानजभितामांसंचनोभक्षितं ॥
न्यायेननसेवितारतिमुखेपीतंनमद्यंतृपा ॥
नर्थतस्यगुरुक्रमोहिनितरांमाहेश्वरोनैवसः ।१॥
ालिंग्यवालापरीपीयहालांमास्वाद्यलीलामपनीयलौल्यं ॥
चक्रवालेविचरन्विशालेकालंनयेत्कौलिकएवनान्यः २
भोगमोक्षप्रदोमार्गोनान्योस्तिचमहीतले ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसाधनीयश्चसाधकैः ॥३॥
वामाचारःकुलाचारोधर्मदोह्यर्थदःस्तथा ॥
कामदोवेदनंतस्मादसौमार्गोत्तमोत्तमः ॥४॥
वामाचारकुलाचारौद्वौतुशंकरभाषितौ ॥
समौचतौतुविज्ञयौभोगमोक्षप्रदौह्यतः ॥५॥

॥ कुलचंद्रीकायां ॥

सर्वेषांउत्तमोधर्मोवैष्णवाश्चततःपरः ॥
शैवस्तस्माद्दक्षिणश्चशाक्तिभक्तिपरायणः ॥१॥
तस्मात्सिधांतधर्मोवैतस्मादपिचकौलिकः ॥

कौलात्परतरोनेतिनान्यपंथेतिशासनात् ॥२॥
अस्मादेवभवेज्ज्ञानंयथार्थपरमात्मनः ॥
ज्ञानादेवतुकैवल्यंमित्येवंवक्तिवैश्रुतिः ॥३॥
वारांगनाप्रयागश्चरजकीपुष्करस्तथा ॥
चर्मकारिभवेत्काशीसर्वतीर्थारजस्वला ॥४॥
अयंतुपरमोधर्मःकौलमार्गोमहेश्वरि ॥
असिधाराव्रतसमोमनोनिग्रहकारकः ॥५॥
अयंसर्वोत्तमोधर्मःशिवोक्तःसुखसिद्धिदः ॥
जितेंद्रियस्यसुलभोनान्यस्यानंतजन्मभिः ॥६॥
रुद्रयामल.

॥ मकारदानफल ॥

द्रव्यंमधुतथामत्स्यंमांसंमुद्राचमैथुनं ॥
मकारपंचसंयुक्तंपूजयेद्भैरवेश्वरं ॥१॥
कन्याकोटिप्रदानस्यहेमभारशतानिच ॥
फलमाप्नोतिदेवेशीकौलिकेबिंदुदानतः ॥२॥
पृथ्वीहेमसंपूर्णांदत्वायत्फलमाप्नुयात् ॥
तत्पुण्यंकौलिकेदत्वातृतियंप्रथमायुतं ॥३॥
द्वितीयंप्रथमायुक्तंयोदद्यात्कुलयोगिने ॥
तृप्यंतिमातरःसर्वायोगिन्योभैरवादयः ॥४॥
अश्वमेधादिकंपुण्यंमन्नदानान्महर्षिणां ॥

तत्फलंलभतेदेवीकौलिकेदत्तमुद्रया ॥५॥
गवांकोटिप्रदानेनयत्पुण्यंलभतेनरः ॥
तत्पुण्यंलभतेदेवीपंचमस्यप्रदानतः ॥६॥
पंचमेनविनाद्रव्ययःकुर्यात्साधकाधमाः ॥
तत्सर्वनिष्फलंदेवीसत्यंसत्यंनसंशयः ॥७॥
चांडालीचर्मकारीचमातंगीमांसकारिणी ॥
मद्यकर्त्रिचरजकीक्षौरकीधनवल्लभा ॥८॥
अष्टौतान्कुलयोगिन्यःसर्वसिद्धिप्रदायकः ॥९॥

रुद्रयामल.

अजपानामगायत्रीयोगिनामोक्षदायिनी ॥
तस्याःसंकल्पमात्रेणनरःपापैःप्रमुच्यते ॥
षट्शतानिदिवारात्रौसहस्राण्येकविंशतिः ॥
एतसंख्येतिमंत्रेणजीवोजपतिसर्वदा ॥२॥
हंकारेणबहिर्यातिसकारेणविशेत्पुनः ॥
हंसःसोहेतिमंत्रेणजीवोजपतिसर्वदा ॥
इतीश्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणेश्रीईश्वरकार्तिक संवादेपंचयोगेंद्रइच्छासिद्धिजीवन्मुक्तिप्राप्तयेमहापथशिव दर्शनेसदेहकैलासगमनेरुद्रायामलेप्रथमपटलः ॥

॥ आगमनोअर्थ ॥

आचारकथनाद्दिव्यंगतिप्राप्तनिदानतः ॥

महार्थतत्त्वकथनादागमः कथितः प्रिये ॥

॥ दीक्षानो अर्थ ॥

दिव्यभावप्रशमनात्क्षालणात्कल्मषस्यच ॥
दीक्षेतिकथितासद्भिर्भवबंधविमोचिनी ॥२॥

॥ मंत्रनो अर्थ ॥

मननात्तत्स्वरूपस्यदेवस्यामिततेजसः ॥
त्रायतेसर्वभयतस्तस्मान्मंत्रमितीरितं ॥३॥

॥ मुद्रानो अर्थ ॥

मुदंकुर्वंतिदेवानामनांसिद्रावयंतिच ॥
तस्मान्मुद्राइतिख्यातादर्शितव्याकुलेश्वरी ॥४॥

॥ सुरानो अर्थ ॥

सुमनःसेवितत्वाचराजत्वात्सर्वदाप्रिये ॥
आनंदजननाद्देविसुरेतिपरिकीर्तिता ॥५॥

॥ मांसनो अर्थ ॥

मांगल्यजननाद्देविसंविदानंददानतः ॥
तथासर्वप्रियत्वाचमांसमित्यभिधीयते ॥६॥

॥ आम्नायनो अर्थ ॥

आदित्वात्सर्वमार्गाणांमनोल्लासप्रवर्तनात् ॥
यज्ञादिधर्महेतुत्वादाम्नायइतिकीर्तितः ॥७॥

॥ इतिद्वितीयभागसंपूर्ण. ॥



आ भागमां मंत्रशास्त्रना ग्रंथ जेटला मालुम पडया तेनी संख्या अने नाम ककारादि अनुक्रमे लख्यांछे. त्यारपछी तंत्रशास्त्रमां संज्ञा शब्द आवे छे तेने परिभाषा कहेछे तेमांना केटलाएक शब्द लख्याछे. तारबाद आ ग्रंथना कर्तानां नाम मालुम पडयां ते लख्यांछे. पछी यंत्रनां नाम पछी देव, देवी जेने मंत्रशास्त्री मानेछे तेमनां नाम लख्यांछे. तारबाद मुद्रानां नाम अने बीज लख्याछे.

तांत्रिक ग्रंथनां नाम.

अ

अगस्तिसंव्हिता ९५००
अथर्वरहस्य ४९(तापिनी)
आगमोद्योत.
आगमसिंधु.
आरूणेशतंत्र.
आगमामृत.
आगमामृतमंजिरी.
आगमालंकार.
आत्मतंत्र.
इंद्राणीतंत्र.
इंद्रजाल ५०००
उत्तरआरुणेय.
उत्तराम्नतंत्र.
उर्ध्वाम्नतंत्र ३५०
उड्डामरतंत्र.
उमामहेश्वरतंत्र.

उत्तरतंत्र ६००
उछिष्टगणपतिपद्धति.
ऋग्रहस्य.
एकवीराकल्प.

क

कलाविधितंत्र.
कलानाद.
कलासार.
ककारादिकालिसहस्रनाम.
वसिष्ट कल्प.
विश्वामित्र कल्प.
कालितंत्र १४०००
कालिकुलसर्वस्व.
कालिकुलसद्भाव.
कामिकतंत्र.
कामकलातंत्र.
कालाग्निभैरवतंत्र.
कालिकापुराण १९०००
कात्यायनीतंत्र ६०००
कालिकापटल.
कामकलाकेलिविलास६००
कालिकाश्रुति.
कामेश्वरतंत्र.
कालि सहस्रनामपरशुरामकृत.
कालिस० त्रिजगर्भ.
कालिगायत्रि.
कालियागपद्धति.
कालिकाकल्प.
कुलार्णव ३६ उल्हास १०००००
कुलसार.
कुलोद्देश.
कुलचूडामणी ६००
कुण्डिकामतंत्र.
कुलादेशतंत्र.
कुलार्चनदीपिका.
कुलवालितंत्र.
कुलप्रदीप ५००

कुमारितिलक ६००
कुमारिकल्प. १४०००
कुंडमंडपविधी.
केदारकल्प ३०००
कैवल्यतंत्र.
कौमारीतंत्र ६००
कौलोपनिषद.
कौलरहस्य(लक्ष).
कौलचंद्रिका.
कंकालभैरवतंत्र.

ख

खड्गमाला, स्वाहांत, नमांत, शुद्ध.
खेचरीपटल.

ग

गणेशदुर्गा.
गणपतिपंचाग.
गायत्रीतंत्र.
गुरुतंत्र.
गुरुरत्नतंत्र.
गुह्यतंत्र.
गौतमीयतंत्र ३०००
गौरियामळ ६००
गंडभिरुंडअनुष्ठानपद्धती.
गंधर्वतंत्र.

च

चक्रभेद.
चामुंडातंत्र.
चिदंबररहस्य.
चंडोग्रशुलपाणितंत्र.
चंडेश्वरतंत्र.
चंद्रज्ञान.
चंडिपाठ. २०००
चंडिपाठपद्धती.

छ

छिन्नारहस्य ६००
छिन्नाशिरोमणी.

ज

ज्योत्स्नापक्षतंत्र.

ड

डामरतंत्र ६००

त

तत्वनमेतरंगिणी.
तरणिरहस्य.
तत्वशाम्त्रर १२०००
तारातंत्र.
ताराप्रदीप.
तारारहस्य.
ताराभक्तिसुधार्णव.
तारासूक्त.
तंत्ररत्न.
तंत्रमहोदधि.
तंत्रसार.
तंतुविधान.
तंत्रमुक्तावलि.
त्रिपुरासारसमुच्चय १३००
त्रिकुंडेश्वर.
त्रिपुरार्णवतंत्र ६००
त्रिशाकल्प.
त्रिपुरासर्वस्व.
तोतल.
तोतलोत्तर.

द

दक्षणाम्नतंत्र.
दक्षिणामूर्त्तिसंहिता.
दक्षिणाम्नतंत्र.
दत्तात्रयतंत्र. ३०००
दमनकपूजापद्धति.
दशमहाविद्याउपनिषद.
दुतियागपद्धति.
देविमत.
देवीरहस्य ४०००
देवीपुराण १२०००

ध

धनुर्वेद.

न

नारदपंचरात्र ४०००

निर्वाणतंत्र १४०००
निरुत्तर.
नीलतंत्र १४०००
नंदिकेश्वरसंहिता.
नृसिंहपंचांग.

प

पश्चिमाम्न.
पंचामृततंत्र.
परमानंदतंत्र ६००
पाशुपतागम.
पटल.
पद्धति.
पुष्टिकाम्नतंत्र.
पुरुषार्चनचंद्रिका.
पूर्णाभिषेकपद्धति.
पूर्वाम्नतंत्र.
पौष्करतंत्र १२०००
प्रत्यंगिराकल्प.

फ

फेत्कारितंत्र ६००

ब

बगलामुखीतंत्र ६००
बालाविलासतंत्र ६००
बालासहस्रनाम.
बालात्रिपुरारीपद्धति.
बीजकोश.
बिंदुमालिनीतंत्र ३०००
ब्रह्मतंत्र.
ब्रह्मयामल.
ब्रह्मास्त्रप्रयोग.
बृहद्योनितंत्र ६०००
बृहड्डामरतंत्र.

भ

भवदेवकल्प.
भावनोपनिषद्.
भुवनेश्वरीतंत्र.
भुतडामरतंत्र.
भूतशुद्धीतंत्र.
भूतोड्डामर.
भैरवतंत्र.

व

वर्णविलासतंत्र.
वर्पेटतंत्र.
वसिष्ठसंव्हिता.
वनदुर्गापटल.
वाराहीसंव्हिता ६००
वामकेश्वरतंत्र.
वामजुष्ट.
वातुल.
वातुलोतरतंत्र.
वाराहीतंत्र ६००
विश्वसारतंत्र.
विश्वसारोद्धारतंत्र.
विष्णुधर्मोत्तर,
विद्योत्पत्तितंत्र.
विष्णुयामल,
विमलतंत्र.
विजयाकल्प.
वीरागम,
वीरतंत्र.
वीरचुडामणी.
वीणाख्यतंत्र,
वैशंपायनसंव्हिता
वैष्णवीतंत्र.

श

शक्तिसंगमतंत्र ३०००
शरभप्रयोग.
शक्तिभैरवतंत्र.
शक्तियामल.
शामारहस्य ४०००
शाक्तक्रम.
शाक्तवादतरंगीणी.
शारदातंत्र ६०००
शारदातिलक १२०००
शारदापटल.
श्यामार्चनविधि
शांडिल्यतंत्र १२०००
श्यामोपनिषद.
श्यामातंत्र.
श्यामार्चनचंद्रीका.

शिवदुतितंत्र.
शिवयामळ.
शिवरहस्य ६००००
शिवकवच.
शिवागम.
शुकसंव्हिता.
शम्बरतंत्र.
श्रीचक्रार्चनचंद्रिका.
श्रीवत्सनारायणीय १२०९०

प

षट्चक्रभेद.

स

सनत्कुमारतंत्र.
सनकसंव्हिता.
सनत्कुमारसंव्हिता.
सनंदनसंव्हित्ता (६,१०)
सर्वज्ञानोत्तमतंत्र.
स्वछंदसंग्रह.
सारस्वततंत्र.
सिद्धभैरवतंत्र.
सिद्धसिद्धांत ७०००
सिद्धेश्वरतंत्र.
सिद्धसारस्वत.
सुदर्शनसंव्हिता ४०००
सुंदरतापिनी.
सुंदरीतंत्र ६०००
सौम्यतंत्र.
सौभाग्यरत्नाकर ४०००
सौभाग्यकल्पद्रुम स्कंद-८ २०००
संमोहनतंत्र १४०००
संकेततंत्र.

ह

हनुमत्पटल.
हनुमत्कवच.
हटप्रदीप.
हठयोगप्रदीप.

क्ष

क्षेत्रशुधि.

ज्ञ

ज्ञानार्णव ६०००

कालियाग.
कालरात्रि —— नर्क १४
महारात्री —— शीवरात्रि.
महोरात्रि —— जन्माष्टमी.
दारुणा —— होलि.
कुंडविधिः
मोहन.
विद्वेषण.
नवार्णव.
अर्गला.
कीलक.

८ सीधि.

अणिमा.
गरीमा.
महिमा.
लघीमा.
इशत्व.
वशीत्व.
प्राप्ति.
प्राकाट्य.

९ नीधी.

महापद्म.
पद्म
शंख.
मकर.
कछप.
मुकुंद.
कुंद.
नील.
खर्व

॥ दीक्षा ॥ ६

कलावति १
पांचायन २
मेधावी ३
साम्राज ४
सामान्य ५
अनुत्तर ६

कर्ता.

शिव.

देवी.
ब्रह्मांडानंदनाथ.
स्वरूपानंद.
आदिनाथ.
सत्यनाथ.
नित्यनाथ.
सिद्धनाथ.
पूर्णानंद.
भास्कराचार्य.
माधवानंद.

यंत्र.

श्रीचक्र.
१ भूपृष्ठ
२ कुर्मपृष्ट.
३ मेरूपृष्ट.
स्वस्तिक.
कुंडलि.
षट्कोण.
पंचकोण.
गायत्रियंत्र.
चतुष्कोण.
त्रिकोण.
अष्टदल.

॥ देवता. ॥

श्रीकालि.
महाकाल.
श्रीसुंदरी.
श्यामा.
तारा.
वाराही.
नारसिंव्हि.
वैष्णवी.
रुद्राणी.
इंद्राणी.
शववाहना.
चामुंडा.
महिषासुरमर्दिनी.
शांता.

शक्ति.	शितळा.
शरभ.	कमळा
नृसिंव्ह.	घोरा.
सरस्वति.	महामारी.
उमा	शीतळा
कुमारी.	सप्तशृंगी.
विंध्यावासिनि.	सिंव्हासना.
राजमातंगी.	श्रीविद्या
उछिष्टचांडालिनि	कामेश्वरी.
अघोरभैरव.	वज्रेश्वरी.
उन्मतभैरव	ब्रह्माणी.
कालाग्निरुद्र.	भ्रामरी.
कालभैरव.	वनदुर्गा.
बाळा	महाविद्या
बगलामुखी.	योगीणी.
त्रिपुरसुंदरी.	मातृका.
सिद्धलक्ष्मी.	पुष्टी.
भुवनेश्वरी.	नारायणी.
गौरी.	प्रकृति
देवी.	भद्रकालि.

दुर्गा.
धनुर्धारी.
खड्गिणी.
अर्बुदा.
कामाक्षी.
तुळजा.
पद्मा.
उग्रा.
अष्टभुजा.
शरभ.
रुंडभेरुंड ३२ कोटिहात
व्याघजा.
बहुचरा.
अंबा.
आरासुरी.
शैलपुत्रि.
ब्रह्मचारीणी.
चंद्रघंटा.
कुष्मांडा.
स्कंदमाता
कात्यायनि.
कालरात्रि.
महागौरी.
सिद्धिदात्रि.
मीनाक्षी.
शची.
मेधा.
सावित्रि.
विजया.
जया.
देवसेना.
स्वधा.
स्वाहा.
मातरा.
लोकमातरा.
ब्राह्मी.
माहेश्वरी.
कौमारी.
ज्वालामुखी.
भैरवी.

धृति.
तुष्टि
कुलदेवता.
वास्तुदेवता
चिंतामणि.
छिन्नमस्तका.
लक्ष्मी.
नंदिनी.
नलिनी.
असितांगभैरव.
रुरुभैरव.
भीषणभैरव.
संव्हारभैरव.
कपालभैरव.
क्रोधभैरव.
रेणुका.
चंडभैरव.
कालभैरव.
वटुभैरव.
मार्तंडभैरव.
उच्छिष्टभैरव.

मुद्रा.

संव्हारमुद्रा.
योनिमुद्रा
अंकुशमुद्रा.
कूर्म.
पंकज.
लिंग.
सुमुख.
संपुट
शकट.
यमपाश.
मत्स्य.
मुसल.
चक्र.
मुष्टी.
मृगी.
शक्ति
ध्यान.

परिशिष्ट.

केटलाएक तंत्रमां औषधी उपाय, टाणाटचका अने मंत्र बताव्या तेनो नमुनो जणावा सारु उड्डामर तंत्रनो थोडो भाग उतारी लीधो. एवा प्रयोग घणाखरा खोटाछे, पण पाखंडि, ढोंगी, दंभी, अने अज्ञानी, भोळिया, मुर्ख एमनी वचे ए बाबत भाजगड चालेछे. कोई छोकरो मागेछे, कोई वशीकरण, कोई शत्रुनाश कराबा मागेछे अने बावा हा हा कहेछे. ए प्रकरणमां बइरां घणां सामील थायछे, घर्डा धणीनी बाइडियो, त्रास पामेलि वहुओ, ए प्रकरण बहु चलावेछे. यंत्र, मंत्र, तावीजो वगेरे अपाय छे ते बद्धाय तांत्रिक मार्ग छे.

उड्डामर.

॥ देव्युवाच ॥

इश्वरश्रोतुमिछामिलोकनाथजगत्पते ॥
प्रसादंकुरुमेदेवब्रूहिधर्मार्थसाधनं ॥१॥
वशीकरणमुच्चाटंमोहनंस्तंभनंतथा ॥
चक्षुहांनीर्मनोहानिश्रुतिहानितथैवच ॥२॥
ज्ञानहानिक्रियाहानीकिलकंचतथापरं ॥
कार्यस्तंभविशेषेणतस्त्सर्वंवदमेप्रभो ॥३॥

॥ ईश्वरउवाच ॥

श्रुणुत्वंहिवरारोहेसिद्धार्थंयदिपृछसि ॥
तंत्रदिप्यामितेदेवीसर्वंतत्त्समुदाहृतं ॥४॥

प्रथमंभूतकरणंद्वितीयोन्मादनंतथा ॥
तृतीयंद्वेपणंचाथचतुर्थोच्चाटनंतथा ॥५॥
ग्रामउच्चाटणंचाथपष्टंचजलस्तंभनं ॥
वन्हिस्तुस्तंभनंचाथवशीकरणमुत्तमं ॥६॥
आकर्षणंभुजंगानांमानवानांतथाद्भुतं ॥
परपूरप्रवेशंचगजवाजीप्रकोपनं ॥७॥
गुप्तागुप्ततराकार्यानूरक्षितव्याप्रयत्नतः ॥
अन्यानपिप्रसंगाश्चवहुनपिवरानने ॥८॥
सुमेरुंचालयेन्स्थानात्सागरैःप्लावयेन्महीं ॥
सुर्यंचपातयेद्भूमौनेदंमिथ्याभविष्यति ॥९॥
तथैवेंद्रस्यवज्रंचपाशंचवरुणस्यच ॥
यमस्यचतथादंडंवन्हेःशक्तिवृथाभवेत् ॥१०॥

॥ ज्वराकरणं ॥

अथान्यंसंप्रक्ष्यामिप्रयोगंतुविदुर्लभं ॥
येनैवकृतमात्रेणज्वरोगृण्हंतिमानवं ॥११॥
निंवकाष्टाकृतिंकृत्वाचतुरंगुलमानवं ॥
धत्तुरस्यरसेनैववहृदयेनामसंलिखेत् ॥१२॥
मांसेनवेष्टयेत्मंत्रंअष्णेतुओंरशतंजपेत् ॥
उल्कामुखीचामुंडाक्षीरमांसशोणितभोजनी
अमुकंखःखःअमुकज्वरेणगृह्णापयहुंफट्स्वाहा ॥

॥ अथउच्चाटणं ॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामीप्रयोगंभुविदुर्लभं ॥
येनविज्ञानमात्रेणशत्रोरुच्चाटनंभवेत् ॥१॥
ब्रह्मदंडिचिताभस्मकाकजंघासमन्वितं ॥
निक्षिपेत्शिरसिशत्रुन्शिघ्रमुच्चाटयेत्रिपुं ॥२॥
सर्पकंचुकमादायकृष्णोरगशिरस्तथा ॥
निखनेयस्यचद्वारितस्योच्चाटनंगृहात् ॥३॥

॥ अथमारणं ॥

सुरामनुष्यमांसंचसमादायविचक्षणः ॥
गृध्रास्थिशत्रुविष्टाचद्वारमध्येनिखादयेत् ॥
सप्ताहेनभवेन्मृत्युयथारुद्रेणभाषितं ॥

॥ अथशत्रुनाशन ॥

लांगुलंगृहगोधस्यमूषकस्याशिरस्तथा ॥
श्वेतमंडुकमांसंचमूत्रंचैवगजोष्ट्रजः ॥
गृहीत्वासमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥
एतानिशोषयित्वाचकल्कंकृत्वापुनःपुनः ॥
मंत्रः॥ओंह्रींयमायशत्रुनाशनाशायस्वाहा ॥
संजायतेज्वरास्तित्रोम्रियतेसप्तरात्रतः ॥
अष्टोत्तरसहस्रंतुततोमंत्रंप्रपूजयेत् ॥
इतिउड्डामरेमहातंत्रेप्रथमपटलः ॥

॥ अथस्तंभन ॥

चंद्रस्यचशिरंगृह्यंनकुलंमकरस्यच ॥
डिड्डुभस्यशिरोगृह्यंसर्वाण्येकत्रकारयेत् ॥
अनेनमंत्रयित्वातुततःसिध्यंतिनान्यथा ॥

॥ मंत्रः ॥

ओंनमोभगवतेस्तंभनायहुंफट्स्वाहा ॥

॥ अथकुंभिकरणं ॥

मूलंकनकबिजानांधृतचूर्णसमंततः ॥
खानेपानेप्रदातव्यंततोन्मत्तोभविष्यति ॥

॥ अथकुष्टिकरणं ॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामिकुष्टिकरणमुत्तमं ॥
येनैवकृतमात्रेणकुष्टिभवतिमानवः ॥१॥
भल्लातकरसंगुंजातथामंडूककारिका ॥
गृहगोधासमायुक्ताभक्षेपानेप्रदापयेत् ॥
सप्ताहाज्जायतेकुष्टियथारुद्रेणभाषितं ॥

॥ अथवशिकरण ॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामिवश्याधिकरणंपरं ॥
येनविज्ञानमात्रेणलोकोभवतिकिंकराः ॥
राणीकहृदयंचूर्णयस्यमूर्ध्निसनिक्षिपेत् ॥
नियतंकिंकराभूत्वायावज्जीवमतिष्ठति ॥

॥ अथांजनं ॥

मूपवकस्यचनेत्रस्यसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥
अंजनंरतिमात्रेणगात्रीपश्येसथादिवं ॥
एतेपांयोगनामोयंमंत्रहीनानपश्यति ॥

॥ मंत्रः ॥

ओंनमोभगवतेरुद्रायशिवायज्योतिपांपत
येददातिज्योतिपांवर्तवीर्यावराणास्वाहा ॥
इतिउड्डामरेमहातंत्रेअंजनाधिकारेद्वितयिपटलः॥

॥ अथलुताकरणं ॥

कृष्णसर्पशिरोगृह्यमुखेनिक्षिप्यसर्पपान् ॥
भल्लातकविभक्तांस्तुकृष्णसूत्रेणवेष्टयेत् ॥
वाल्मिकस्यमृदावेष्ट्यंअंतर्धूमेनपाचयेत् ॥
सुपक्वंचाविजानीयसमगृह्यचसर्पपान् ॥
विपस्यचुर्णकृत्वाचशत्रुमुर्ध्निविनिक्षिपेत् ॥
लुताचसविपांकूर्यान्नात्रकार्याविचारणा ॥

बीजुं दत्तात्रेयतंत्र एज प्रमाणे छे तेमाथी नीचे लखेला श्लोक नमुना वास्ते उतार्याछे.

॥ श्रीदत्तात्रेयउवाच ॥

कैलासशिखरासीनंदेवदेवंमहेश्वरं ॥
दत्तात्रेयपरीपृच्छशंकरंलोकशंकरं ॥१॥

कृतांजलीपुटोभुत्वापृछ्छतेभक्तवत्सलं ॥
भक्तानांचहितार्थायकल्पतंत्रश्चकथ्यते ॥२॥
कलौसीद्धिमहाकल्पतंत्रविद्याविधानकं ॥
कथयंतीमहादेवदेवदेवमहेश्वरं ॥३॥
संतिनानाविधालोकेयंत्रमंत्राभिचारिका ॥
आगमोक्तापुराणोक्तावेदोक्काडामरेतथा ॥४॥
उदिशेमादितंत्रेचकालचंडीश्वरेमते ॥
राधातंत्रेचउछिष्टधारातंत्रेमृतेश्वरे ॥५॥
तत्सर्वेकिलनंकृत्वाकलौवीर्यविवर्जिता ॥
ब्राह्मणोकामक्रोधीचतस्यकारणहेतवे ॥६॥
विनाकीलकमंत्राश्चतंत्रविद्याकथंशिवे ॥
तंत्रविद्याक्षणंसिद्धिरूपांकुरुष्वममप्रभो ॥७॥
॥ ईश्वरउवाच ॥
शृणुसिद्धिमहायोगिसर्वयोगविशारदः ॥
तंत्रविद्यामहागुह्यंदेवानामपिदुर्लभं ॥८॥
तवाग्रेकथितंदेवीतंत्रविद्याशिरोमणी ॥
गुह्याद्गुह्यमहागुह्यंगुह्यंगुह्यंपुनःपुनः ॥९॥
गुरुभक्तायदातव्यंअभक्तानकदाचन ॥
मानसंशिवभक्तेचदद्वाचित्तेसमन्विते ॥१०॥
शिरंदद्यात्सुतांदद्यान्नदद्यातंत्रकल्पकं ॥

यस्मैकस्मैनदातव्यंनान्यथाशंकरोदितं ॥११॥
अथातःसंप्रवक्ष्यामिदत्तात्रेयतथाशृणु ॥
कलौसिद्धिमहातंत्रंविनाकीलेनकथ्यते ॥१२॥
नतिथिर्नचनक्षत्रंनंनियमोनास्तिवासरः॥
नव्रतंनियमंहोमंकालवेलाविवर्जितं॥ १३॥
केवलंतंत्रमंत्रेणऔषधीसिद्धरूपिणी ॥
यस्यसाधनमात्रेणक्षणसिद्धिश्चजायते ॥१४॥
मारणंमोहनंस्तंभंविद्वेषोच्चाटनंवशी ॥
आकर्षणंइंद्रजालंयक्षणींचरसायनं ॥१५॥
कालज्ञानंअनाहारं‌हारंचनिधीदर्शनं॥
वंध्यापुत्रवतियोगंमृतास्यासुतजीवनं ॥१६॥
जयवादेवाजिकरणंभूतग्रहनिवारणं॥
सिंहव्याघ्रभयंसर्पवृश्चिकानांतथैवच ॥१७॥
दधिमथ्यंघृतंसत्यंनान्यथाशंकरोदितं॥
गोप्यंगोप्यमहागोप्यंगोप्यंगोप्यंपुनःपुनः॥१८॥

॥ अथ सर्वोपरिमंत्र ॥

ॐपरब्रह्मपरमात्मनेनमःदुत्पतिस्थिति ॥
प्रलयकरायब्रह्महरिहरायत्रिगुणात्मने ॥
सर्वकौतुकानीदर्शय २ दत्तात्रेयनमः ॥
तंत्राणिसिद्धिंकुरु २ स्वाहा ॥

अष्टोत्तरंशतजपेत्सिद्धिः ॥
इतिश्रीदत्तात्रेयतंत्रेईश्वरदत्तात्रेयसंवादे ॥
प्रथमो पटलं ॥१॥

॥ अथ मारणंईश्वरोवाच ॥

चिताभस्मविषंयुक्तंधत्तूरंचूर्णसंयुतं ॥
यस्यांगेनिक्षिपेत्भौमेसद्योयांतियमालयं ॥१॥
भल्लातकोद्भवंतैलंकृष्णासर्पस्यदंतकं ॥
विषिधत्तूरसंयुक्तंयस्यांगेनिक्षिपेत्मृतिं ॥२॥
नरास्थिचूर्णतांबूलेभुक्तमृत्युभवेत्ध्रुवं ॥
सर्पास्थिचूर्णयस्यांगेनिक्षिपेत्मृत्फमाप्नुयात् ॥३॥
चिताकाष्ठंगृहीत्वातुभौमेचभरणीयुते ॥
निखनेचगृहेद्वारेमासेमृत्फभविष्यति ॥४॥
कृष्णसर्पत्वचाग्राह्यातद्वर्तिज्वालयेनिशि ॥
धत्तूरबीजतैलेनकज्जलंनृकपालके ॥५॥
चिताभस्मसमायुक्तंलवणंपंचसंयुतं ॥
यस्यांगेनिक्षिपेत्चूर्णसद्योयांतियमालये ॥६॥
गृहीत्वावृश्चिकंमांसंकंटकंचूर्णसंयुतं ॥
यस्यांगेनिक्षिपेत्चूर्णसद्योयांतियमालयं ॥७॥
पंचदशीलिखेयंत्रंचिताभस्मविलेपतः ॥
श्मशानाग्नौक्षिपेत्यंत्रंभौमेनारेमृतेरिपु ॥८॥

उष्ट्रविष्टागृहीत्वातुविषचूर्णसमन्वितं ॥
यस्यांगेनिक्षिपेत्चूर्णसद्योयांतियमालयं ॥९॥
खरविष्टागृहीत्वातुविषचूर्णसमन्वितं ॥
यस्यांगेनिक्षीपेत्चूर्णसद्योयांतियमालयं ॥१०॥
रिपुविष्टागृहीत्वातुनृकपालेतुधारयेत् ॥
उद्यानेनिखनेद्भूमौयस्यनामालिखेसति ॥११॥
यावत्शुष्यतिसाविष्टातावत्शत्रुमृतोभवेत् ॥
यस्मैकस्मैनदातव्यंनान्यथाशंकरोदीतं ॥१२॥
ककलावशालैयतथाह्यंयस्यांगेविंदुमात्रतः ॥
निक्षिपेत्म्रीयतेशत्रुयदिरक्षतिइश्वरः ॥१३॥
गृहेदीपंतुनिक्षीपेलवणंविजीयायुतं ॥
यस्यनामात्मृत्युसत्यंमासमेकोनसंशयः ॥१४॥

॥ अथमंत्रः ॥

ॐनमोकालरुपायअमुकंभस्मीकुरु २ स्वाहा ॥
अष्टोत्तरशतंजपेत्सिद्धिः ॥
इतिश्रीदत्तात्रेयतंत्रेइश्वरदत्तात्रेयतंसंवादेमार
णंनामद्वीतीयपटलः ॥२॥

॥ अथमोहनं ॥ इश्वरोवाच ॥

तुलशीबीजचूर्णतुसहदेविरसेशयेत् ॥
तिलकंचरवौवारेमोहनंसर्वतोजगत् ॥१॥

हरितालंअश्वगंधाकदलीसहपेसयेत् ॥
गोरोचनंसमंयुक्तंतिलकंलोकमोहनं ॥२॥
शृंगीचंदनसंयुक्तंवचाकुष्टासमन्वितं ॥
धूपंदेहेतथावस्त्रंमुखेचैवविशेषतः ॥३॥
राजाप्रजापशुपक्षीदर्शनांमोहकारकः ॥
गृहित्वामूलतांबूलंतिलकंलोकमोहनं ॥४॥
सिंदुरंकुंकुमंचैवगोरोचनसमन्वितं ॥
धात्रिरससमंयुक्तंतिलकंलोकमोहनं ॥५॥
मनःशिलाचकर्पूरंकदलीरसपेसयेत् ॥
अनेनैवतुतंत्रेणतिलकंलोकमोहनं ॥६॥
सिंदुरंचवचाश्वेतातांबूलंरसपेशयेत् ॥
अनेनैवतुमंत्रेणतिलकंलोकमोहनं ॥७॥
भृंगराजअपामार्गलज्जालुसहदेविका ॥
एभिस्तुतिलकंकृत्वात्रैलोक्यंमोहयेन्नरः ॥८॥
गृहित्वादुंबरंपुष्पंवर्त्तिकृत्वाविचक्षणैः ॥
नवनीतेघप्रज्वाल्यकज्जलंपातयेत्निशी ॥९॥
कज्जलंचांजयेनेत्रंमोहनंसर्वतोजगत् ॥
यस्मैकस्मैनदातव्यंदेवानामपिदुर्लभं ॥१०॥
श्वेतदुर्वांगृहित्वातुहरितालंचपेशयेत् ॥
एभिस्तुतिलकंकृत्वात्रैलोक्यंमोहयेन्नरः ॥११॥

श्वेतगुंजारसंपुष्यंब्रह्मदंडीचमूलकं ॥
लेपमात्रेशरीराणांमोहनंसर्वतोजगत् ।।१२॥
श्वेतार्कमूलमादायश्वेतचंदनसंयुतं ॥
अनेनतिलकंभालेमोहनंसर्वतोजगत् ॥१३॥
बिल्वपत्रंगृहीत्वातुछायाशुष्कंतुकारयेत् ॥
कपिलापयसार्द्धनवटिकृत्वातुगोलकं ॥१४॥
एभिस्तुतिलकंकृत्वामोहनंसर्वतोजगत् ॥
क्षणंमोहनतांयातिप्राणैरपिधनैरपि ॥१५॥
विजयापत्रमादायश्वेतसर्षपसंयुतं ॥
अनेनलेपयेत्देहंमोहनंसर्वतोजगत् ॥१६॥
गृहित्वातुलशीपत्रंछायाशुष्कंचकारयेत् ॥
अश्वगंधासमायुक्तंविजयाबीजसंयुतं ॥१७॥
कपिलादुग्धसार्द्धंनवटीटंकप्रमाणतः ॥
भक्षणात्प्रातरुत्थायमोहनंसर्वतोजगत् ॥१८॥
पंचांगंदाडीमीपीष्टाश्वेतगुंजासमन्वितं ॥
एभिस्तुतिलकंकृत्वामोहनंसर्वतोजगत् ।।१९॥
कटुतुंबीबीजतैलेनज्वालयेपटवर्त्तिका ॥
कज्जलंचांजयेनेत्रंमोहनंसर्वतिध्रुवं ॥२०॥
इतिश्रीदत्तात्रेयतंत्रेईश्वरदत्तात्रेयसंवादेमोहननाम
तृतीयपटल ॥३॥

॥ अथभूतग्रहनिवारणं ॥

॥ ईश्वरउवाच ॥

...रीपपत्रपुष्पंचरवीवारेसमुद्धरेत् ॥
उल्लुविष्टाग्रहीत्वातुदृष्टरोमंचसंयुतं ॥१॥
श्वानविष्टासमायुक्तंमार्जारोवक्त्रसंयुतं ॥
गोमयंचैवसंयुक्तंगंधकंसंयुतंकृतं ॥२॥
स्वेतगुंजासमायुक्तकटुतैलैनपाचयेत् ॥
धूपंदत्वाजपेन्मंत्रंभूतबाधाचनस्यति ॥३॥
राक्षसैभूतवेतालैदेवभूतचूरीहीपु ॥
डाकीनीप्रेतनीचैवधूपदेयपलायते ॥४॥
ॐनमोस्मन्नवनवासीनेभूतादिपलायनंकुरु२स्वाहा॥

॥ अथग्रहनिवारणं ॥

॥ ईश्वरोवाच ॥

अर्कमूलंचधत्तुरंअपामार्गस्यमूलकं ॥
दुर्वामूलंवटंमूलंअश्वत्थंमूलमेवच ॥१॥
शमीपत्रंआम्रपत्रंपत्रोदुंबरमेवच ॥
मृन्मयंपात्रमध्यस्थंदुग्धंघृतसमन्वितं ॥२॥
तंदुलंचणकमुद्गंचगोधूमंतिलसंयुतं ॥
गोमूत्रसर्पपाश्वेताकुशाचंदनसंयुतं ॥३॥
मधुसंयुक्तयेत्तत्रसंध्याकालेशनौदिने ॥

अश्वत्थमूलखननंग्रहोपद्रवनाशनं ॥४॥
महादारिद्रहरणंमहापातकनाशनं ॥
यावज्जीवतिसालोकेगृहपीडाभवेन्नहीं ॥५॥
ॐनमोभास्करायअमुकंसर्वग्रहाणांपिडानाशनं
कुरु २ स्वाहा ॥

॥ अथसिंहव्याघ्रसर्पवृश्चिकभयनाशनं ॥
॥ ईश्वरोवाच ॥
सिंहंदृष्ट्वानमस्कारंमंत्रजाप्यपुनःपुनः ॥
पलायंतेसिंहसर्वेनान्यथाशंकरोदितं ॥१॥
पुष्यार्केनगृहीत्वातुश्वेतार्कस्यतुमूलकं ॥
धारयेदक्षिणेहस्तेसिंहबाधाभयंनहीं ॥२॥
॥ मंत्रः ॥
ॐनमोअग्निरूपायह्रींनमः ॥
॥अथसर्पनिवारणं ॥
अस्तीकंमुनिराजंचनमस्कारंपुनःपुनः ॥
स्वप्नेसर्पभयंनास्तिनान्यथाशंकरोदितं ॥१॥
गृहीत्वापुष्यनक्षत्रेअमृतामूलकंहरेत् ॥
तन्मूलंधारयेत्कंठेसर्पबाधाभयंनहीं ॥२॥
॥अथव्याघ्रभयनिवारणं॥
गृहीत्वाशुभनक्षत्रेधत्तूरंमूलकंतथा ॥

धारयेदक्षेणेवाहौव्याघ्रबाधाभयंनहीं ॥१॥
गृहीत्वाशुभनक्षत्रेअपामार्गस्यमूलकं ॥
धारयेदक्षिणेकर्णेवृश्चिकोभयनाशनं ॥२॥

॥ अथअग्निभयनिवारणं ॥

उत्तरस्यांचदीग्भागेमरीचोनामराक्षसः ॥
तस्यमुत्रपुरीषाभ्यांहुतोस्तंभोभवस्वहा ॥
अनेनमंत्रेणसप्तजलिजलंअग्निमध्येनिक्षिपेत् ॥
अग्निशाम्यति ॥
गृहीत्वारवीवारेतुस्वेतकरवीरमूलकं ॥
धारयेद्दक्षिणंहस्तेअग्निबाधाभयंनहीं ॥
इतिश्रीदत्तात्रेयतंत्रेइश्वरदत्तालयसंवादेसिंहव्याघ्रादिनिवारणंनामपटलः ॥

॥ आसनस्तंभनं ॥

चर्मकारस्यकुंडानिमलंग्राह्यंतथारजं ॥
चडाचिरुधिरंयुक्तंयस्यायेचविनिक्षिपेत् ॥१॥
स्वस्थानेपुभवेस्तंभःसिद्धीयोगमुदाहृतं ॥
यस्मैकस्मैनदातव्यंनान्यथाशंकरोदितं ॥२॥

॥ मंत्रः ॥

ॐनमोदिगंबरायअमुकंआसनंस्तंभनंकुरु२स्वाहा।
अष्टोत्तरशतंजपेत्सिद्धिः ॥

॥ अथबुद्धिस्तंभनम् ॥

उष्ट्रविष्टागृहीत्वातुछायाशुष्कंतुकारयेत् ॥
तांबुलैरिपुदत्तव्यंबुद्धिस्तंभनमुत्तमं ॥१॥

॥ मंत्रः ॥

ॐनमोभगवतेशत्रुणांबुद्धिस्तंभनंकुरु २ स्वाहा ॥

॥ अथशस्त्रस्तंभनम् ॥

पुष्यार्कैनसमुधृत्यविष्णुक्रांताचमूलकं ॥
वक्त्रेसिरसिधार्येतेशस्त्रसंहरणेनृणां ॥१॥
गृहित्वापुष्यनक्षत्रेअपामार्गस्यमूलकं ॥
लेपमात्रशरीराणांसर्वशस्त्रनिवारणं ॥२॥

॥ मंत्रः ॥

ॐअहींकुंभकर्णमहाराक्षसनैकपागर्भसंभूत
परसैन्यस्तंभनंमहाभगवानरुद्रोज्ञापयतिस्वाहा ॥
अष्टोत्तरशतंजपेत्सिद्धिः ॥

॥ अथशस्त्रलेपः ॥

विष्णुक्रांतानिर्वीजानांमंत्रभावेनग्राहयेत् ॥
ततैलंग्राहयेत्यंत्रेविपंचैवसमन्वितं ॥१॥
भिल्लातकंचसंयुक्तंशस्त्रलेपंतुकारयेत् ॥
रणेदारुणशस्त्रोवंतस्यखंडप्रजायते ॥२॥
पलायंतेशत्रवश्चायथायुद्धेपुकातरा ॥

वृथाभवतिशास्त्रंचनभवेत्विद्यतेक्वचित् ॥३॥

॥ अथमंत्रः ॥

ओंनमोविकरालरूपायमहाबलपराक्रमाय ॥
अमुकस्यभुजबंधयदृष्टिस्तंभय २ अंगानिधूनय
पातय २ महीतलेहुं ॥
अष्टोत्तरशतजपेत्सिद्धि ॥

॥ अथसेनापलायनं ॥

गोरोचनगलेबध्वाकाकोलूकस्यपक्षयोः ॥
सेनानिसन्मुखंगछेन्नान्यथाशंकरोदितं ॥१॥
शब्दमात्रेसैन्यमध्येपलायतेतिनिश्चितं ॥
राजाप्रजागजाश्वादिनान्यथाशंकरोदित ॥२॥

॥ मंत्रः ॥

ओंनमोभयंकरायखड्गधारिणेममशत्रुसैन्यं
पलायनं कुरु २ स्वाहा ॥
अष्टोत्तरशतजपेत्सिद्धिः ॥

॥ अथमेघस्तंभनं ॥

इष्टकाद्वयमादायस्मशानांगारसंपुटे ॥
स्थापयेत्वनमध्येचमेघस्तंभकरंभवेत् ॥१॥

॥ अथगोमहिष्यादिस्तंभन ॥

उष्ट्ररोमंगृहित्वातुपशुपरितिनिक्षिपेत् ॥

पशूनांभवतेस्तंभसिद्धियोगमुदाहृतं ॥१॥

॥ अथनौकास्तंभनं ॥

भरण्यांक्षिरवृक्षंचकीलंपंचागुलिंक्षिपेत् ॥
नौकास्तंभभवेत्तुशिघ्रंयथाशंकरभाषितं ॥१॥

॥ जलस्तंभनं ॥

पद्मकंनामयद्रव्यंसूक्ष्मंचूर्णंतुकारयेत् ॥
वापिकुपतडागादिनिक्षिपेत्तूनंधयेज्जलं ॥१॥

॥ मंत्रः ॥

ओंनमोभगवतेरुद्रायजलस्तंभय ॥२॥

इतिदत्तात्रेयतंत्रेचतुर्थपटलः ॥

॥ अथविद्वेषणं ॥

विद्वेषनरनारीणांविद्वेषंराजमंत्रिणां ॥
मार्जारविष्टामादायविष्टामादायमूषकं ॥१॥
पादानांमृतिकायुक्तंपुतलिंक्रियतेनरः ॥
नीलवस्त्रेणसंवेष्ट्यमंत्रयित्वाशतेनच ॥२॥
विद्वेषंतत्क्षणाचैवभ्रातातातश्चपुत्रकौ ॥
विद्वेषंजायतेसत्यंसिद्धयोगमुदाहृतं ॥३॥

॥ अथमंत्रः ॥

ओंमनमोनारायणायअमुकंअमुकेनसहविद्वेषणं कुरुस्वाहा ॥

इतिदत्तात्रेयतंत्रेइश्वरदत्तात्रेयसंवादेविद्वेपणंनाम पंचमपटलः ।।

॥ अथउच्चाटणं ॥

ब्रह्मदंडीचिताभस्मंशिवलिंगविलेपयेत् ॥
उच्चाटणंभवेतस्यस्त्रीपुत्रपशुबांधवैः ॥१॥
गृहित्वागर्धभोधूलीवामपादेननिश्चितं ॥
मध्यान्हेकुजवारेचयत्गृहेनिक्षिपेत्नरः ॥२॥
उच्चाटनंभवेत्तस्यजायतेमरणांतिकं ॥

॥ मंत्रः ॥

ऑनमोभगवतेरुद्रायदंष्ट्राकरालयअमुकंसपुत्रबांधवैसहहन २ पच २ शीघ्रंउच्चाटयं २ हुंफट्स्वाहा॥ ठं ठं ठं ॥

अष्टोत्तरजपेनसिद्धिः ॥ ॥

॥ अथसर्वजनवशीकरणं ॥

गृहित्वावटमूलंचजलेनसहघर्षयेत् ॥
रवीवारेकृतेयोगंसर्वलोकवशंकरं ॥१॥
हरितालंअश्वगंधंसिंदुरंकदलीरसं ॥
तिलकंक्रियतेभालेसर्वलोकवशंकरं ॥२॥

॥ मंत्रः ॥

ऑनमोसर्वलोकवशंकरायकुरु २ स्वाहा ॥

॥ श्री भगमालिनी मंत्र. ॥

ओंहेंभगभुगेभगिनीभगोदरीभगांगेभगमालेभगाव हेभगगुह्येभगयोनीभगनिपातिनीसर्वभगवशंकरीभगरूपे नित्यक्लीन्नेभगस्वरूपेसर्वाणभगानिमेह्यानयवरदेसुरेतेभ गक्लिन्नेक्लिन्नद्रवेक्लेदयद्रावयसर्वसत्वान्भगेश्वरीअमोघे भगाविच्चेक्षुभक्षोभयसर्वसत्वान्भगेश्वरीअमोघेभगावि च्चेक्षुभक्षोभयसर्वसत्वान्भगेश्वरीसर्वाणिभगानिमेवशमा नयभगमालिनीनित्यश्रीपादंपूजयामिवशंकुरु ॥२॥

इतिदत्तात्रेयतंत्रेवशंकरणंनामपष्ठमपटलः ॥

॥अथस्त्रीवशीकरणं॥

चिताभस्मवचाकुष्टंतगरंकुंकुमंसमं ॥
चूर्णस्त्रीशिरसिक्षिप्त्वावशीकरणमद्भुतं ॥

॥ अथपुरुषवशीकरणं ॥

गोरोचनंयोनिरक्तंकदलिरससंयुतं ॥
एतैश्चतिलकंकृत्वापतिवश्यकरंपरं ॥१॥
लवंगमलजिव्हाचखानेपानेप्रदापयेत् ॥
पतिवश्यकरंसत्यंदासांदासस्तुजायते ॥२॥

मंत्रः॥ ओम्॥

नमोमहायक्षिणिपतिमेवशंकुरु २ स्वाहा ॥

॥ अथराजवश्यं ॥

हरितालंअश्वगंधाकर्पूरंचमनःशिला॥
अजाक्षीरेणतिलकंराज्यवश्यकरंपरं ॥१॥
मंत्रः॥ऒंनमोभास्करायंत्रिलोकात्मने ॥
अमुकमहीपतीमेवश्यकुरु २ स्वाहा ॥
इतिदत्तात्रेयतंत्रेराजवश्यसप्तमःपटलं ॥

॥ अथआकर्षणं ॥

नृकपालेलिखेन्मंत्रंगोरोचनसहेवचः ॥
तापयेत्खदीरांगारोत्रिसंध्यंतुप्रयत्नतः ॥१॥
राजाप्रजाचसर्वेषांसत्यंआकर्षणंभवेत् ॥
उर्वशीमपिमार्यातिनान्यथाशंकरोदितं ॥२॥
यस्मैकस्मैनदातव्यंदेवानामपिदुर्लभं ॥३॥

॥ मंत्रः ॥

ऒंनमोआदिरूपायअमुकंआकर्षणंकुरु२स्वाहा॥

॥ अथईंद्रजालकौतुकं ॥

॥ मंत्रः ॥

ऒंनमोनारायणायविश्वंभराय ॥
इंद्रजालकौतुकानिदर्शयसिद्धिंकुरु २स्वाहा ॥
भौमवारेसर्पमुखेनिक्षिप्त्वाकार्पासबीजकं ॥

तद्‌बिजोभ्दवकर्पासंञ्वालैरंडतैलकैः ॥१॥
तद्वर्तिंञ्ज्वालयेद्धात्रौसर्पवत्‌दृश्यतेध्रुवं ॥
कार्पासानिचबीजानिनकुलोमुखनिक्षिपेत् ॥२॥
रवौवारेकृतेयोगंतत्कौतुकशाम्यति ॥

॥ अथयक्षिर्णीमंत्रसाधनं ॥

ओंनमोभगवतेरुद्रायकर्णपिशाचायस्वाहा ॥
अयुतंजपेत् ॥

॥ अथरसायनं ॥

चूर्णंहिंगोलकंकृत्वावेष्टचवस्त्राणियत्नतः ॥
गर्तिंकुंडेविनिक्षिप्तेपलाशंकाष्टवन्हिना ॥१॥
तद्भस्माज्जायतेसिद्धिः रिद्धिः सिद्धीः सनामकं ॥
ताम्रपात्रेअग्निमध्येबिंदुमात्रसनिक्षिपेत् ॥२॥
तत्क्षणाज्जायतेस्वर्णनान्यथाशंकरोदितं ॥
वनितापुत्रमित्रादिगोप्यंसिद्धिप्रदायकं ॥३॥
इतिरसायनपटलं ॥

॥ अथकालज्ञानं ॥

अथअनाहारं ॥ अथनिधिदर्शनं ॥
अथवंध्यागर्भधारणं ॥ अथजयवादं ॥
इत्यादिअनेकप्रकरणाः ॥

उपर उड्डामरतंत्र अने दत्तात्रेय तंत्रना प्रकरण छप्याछे, तेवा
राणोमां पण आवेछे. तेना पुरावामां अग्नि पुराणना अध्याय नीचे
तार्याछे.

॥ अथ त्रयःत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ नानाबलानी ॥

॥ ईश्वरउवाच ॥

परसैन्यंशृणुभङ्गंप्रयोगेणपुनर्वदे ॥
स्मशानाङ्गारमादायविप्राञ्चोलूककाकयोः १५
कर्पटेप्रतिमालिख्यसाध्यस्यैवाक्षरंयथा ॥
नामाथनवधालिख्यरिपोश्चैवयथाक्रमं ॥१६॥
मूर्द्धिवक्त्रेललाटेचहृदयेगुह्यपादयोः ॥
पृष्ठेतुबाहुमध्येतुनामैवनवधालिखेत् ॥१७॥
मोटयेद्युद्धकालेतुउच्चारित्वातुविद्यया ॥
तार्क्षाचक्रंप्रवक्ष्यामिजयार्थंत्रिमुखाक्षरं ॥१८॥
क्षिपॐस्वाहातार्क्षात्माशत्रुरोगविषादिनुत् ॥
दुष्टभूतग्रहार्त्तस्यव्याधितस्यातुरस्यच ॥१९॥
करोतियादृशङ्कर्मतादृशंसिध्यतेखगात् ॥
स्थावरंजङ्गमश्चैवलुताश्चकृत्रिमंविषं ॥२०॥
तत्सर्वंनाशमायातिसाधकस्यावलोकनात् ॥
पुनर्ध्यायेन्महातार्क्ष्यद्विपक्षंमानुपाकृतिं ॥२१॥

द्विभुजंवक्त्रचक्षुंचगजकूर्मधरंप्रभुं ॥
असङ्ख्योरगपादस्थमागच्छन्तंखमध्यतः ॥२२॥
ग्रसन्तश्चैवखादन्तंतुदन्तंचाहवेरिपून् ॥
चञ्चाहताश्चद्रष्टव्याः केचित्पादैश्चचूर्णिताः २३
पक्षपातैश्चूर्णिताश्चकेचिन्नष्टादिशोदश ॥
तार्क्ष्यध्यानान्वितोयश्चत्रैलोक्येह्यजयोभवेत् २४
पिञ्छिकान्तुप्रवक्ष्यामिमन्त्रसाधनजांक्रियां ॥
ओं हूं पक्षिन् क्षिप ओं हूं सः महाबलपराक्रम सर्वसैन्यं भक्षय २ ओं मर्दय २ ओं चूर्णय २ ओं विद्रावय २ ओं हूं खः ओं भैरवी ज्ञापयति स्वाहा ॥
अमुंचन्द्रग्रहणेतुजपङ्कृत्वातुपिञ्छिकां ॥२५॥
मन्त्रयेद्भ्रामयेत्सैन्यंसन्मुखंभञ्जसिंहयोः ॥
ध्यानाद्रवान्मर्दयेच्चसिंहारूढोमृगाविकान् ॥२६॥
शब्दाद्दङ्गंप्रवक्ष्यामिदूरंमन्त्रेणबोधयेत् ॥
मातृणांचरुकंदद्यात्कालरात्र्याविशेषतः ॥२७॥
श्मशानभस्मसंयुक्तंमालतीचामरीतया ॥
कार्पासमूलमात्रन्तुतेनदूरन्तुबोधयेत् ॥२८॥
ओं अहे हे महेन्द्रि अहे महेन्द्रि भञ्ज ह्रि ओं अहि मशानेहि खाहि खाहि किलि किलि ओं हुं फट् ॥
अर्चांशंदूरशब्दाज्जगणाभङ्गादियथा ॥

अपराजिताचधुस्तूरस्ताभ्यान्तुतिलकेनहि ॥२९॥
ओं किलि किलि विकिलि इच्छाकिलि भूतहनि शङ्खिनि उमे दण्डहस्ते रौद्रि माहेश्वरि उल्कामुखि ज्वालामुखि शङ्कुकर्णे शुष्कजङ्घे अलम्बुषे हर ओं सर्वदुष्टान् खन ओं यन्मान्निरीक्षयेद्देवि तांस्तान् मोहय. ओं. रुद्रस्य हृदये स्थिता रौद्रि सौम्येन भावेन आत्म रक्षान्ततः कुरु स्वाहा ॥

वाह्यतोमातृःसंलिख्यसकलाकृतिवेष्टिताः ॥
नागपत्रेलिखेद्विद्यांसर्वकामार्थसाधनीं ॥३०॥
हस्तायैर्द्धारितापूर्वंब्रह्मरुद्रेन्द्रविष्णुभिः ॥
गुरुसङ्ग्रामकालेतुविद्ययारक्षिताःसुराः ॥३१॥
रक्षयानारसिंह्याचभैरव्याशक्तिरूपया ॥
सर्वत्रैलोक्यमोहिन्यागौर्य्यादेवासुरेरणे ॥३२॥
बीजसम्पुटितंनामकर्णिकायांदलेषुच ॥
पूजाक्रमेणचाङ्गानिरक्षायन्त्रंस्मृतंशुभे ॥३३॥
मृत्युञ्जयंप्रवक्ष्यामिनामसंस्कारमध्यग ॥
कलाभिर्वेष्टितंपश्चात्सकारेणनिबोधितं ॥३४॥
जकारंविन्दुसंयुक्तंओङ्कारेणसमन्वितं ॥
धकारोदरमध्यस्थंवकारेणनिबोधितं ॥३५॥
चन्द्रसम्पुटमध्यस्थंसर्वदुष्टविमर्दकम् ॥

अथवाकर्णिकायांश्चलिखेन्नामचकारणम् ॥३६॥
पूर्वेदलेतयोंकारंस्वदक्षेचोत्तरेलिखेत् ॥
आग्नेय्यादौचहुंकारन्दलेषोडशकेस्वरान् ॥३७॥
चतुस्त्रिंशद्दलेकाद्यान्बाह्येमंत्रंचमृत्युजित् ॥
लिखेद्भूर्जपत्रेतुरोचनाकुंकुमेनच ॥३८॥
कर्पूरचन्दनाभ्यांचश्वेतसूत्रेणवेष्टयेत् ॥
सिक्थकेनपरिच्छाद्यकलशोपरिपूजयेत् ॥३९॥
यंत्रस्यधारणाद्रोगाःशाम्यन्तिरिपवोमृतिः ॥
विद्यांतुमेखलींवक्ष्येविप्रयोगमृतेर्हरीं ॥४०॥

ओं वातले वितले विडालमुखि इंद्रपुत्रि उद्भवो वासुदेवेन खीलि आजी हाजा मयी वाहइहादि दुःख निस्यंकण्ठोचैर्मुहूर्तान्निया अह मां यस्महं उपाडि ओं मेखलि ओं स्वाहा ॥

नवदुर्गासप्तजप्तान्मुखस्तम्भोमुखस्तम्भोमुखास्थितात् ॥
ओं चंण्डि ओं हूं फट् स्वाहा ॥
गृहीत्वासप्तजप्तंतुखड्गयुद्धेऽपराजितः ॥४१॥

॥ अथ चतुस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥
॥ त्रैलोक्यविजयविद्या ॥
॥ ईश्वर उवाच ॥
त्रैलोक्यविजयांवक्ष्येसर्वयन्त्रविमर्दिनीं ॥

ओं हूं क्षुं ह्रूं ओं नमो भगवति दंष्ट्रिणि भीमवक्त्रे महोग्ररूपे हिलि हिलि रक्तनेत्रे किलि किलि महानिस्वने कुलु ओं विद्युज्जिह्वेकुलु ओं निर्मांसे कट कट गोनसाभरणे चिलिचिलि शवमाला धारणी द्रावय ओं महारौद्रि सार्द्रचर्मा कृताच्छदे विजृम्भ ओं नृत्य असिलताधारिणि भृकुटी कृतापाङ्गे विषमनेत्रकृतानने वसामेदो विलिप्तगात्रे कह २ ओं हस २ क्रुद्ध २ ओं नीलजीमूतवर्णे अभ्रमालाकृताभरणे विस्फुर ओं घण्टारवावकीर्णदेहे ओं सिंसिस्थे अरुणवर्णे ओं ह्रां ह्रीं हूं रौद्ररूपे हूं ह्रीं क्लीं ओं ह्रीं हूं ओं आकर्ष ओं धूनर ओं हे हः खः वज्रिणि हूं क्षूं क्षां क्रोधरूपिणि प्रज्वल२ ओं भीमभीषणे भिन्द ओं महाकाये च्छिन्द ओं करालिनि किटिर् महाभूतमातःसर्वदुष्टनिवारिणि जये ओं विजये ओं त्रैलोक्यविजये हूं फट् स्वाहा ॥

नीलवर्णांप्रेतसंस्थांविंशहस्तांयजेज्जये ॥१॥
न्यासंकृत्वातुपंचांगंरक्तपुष्पाणिहोमयेत् ॥
सङ्ग्रामेसैन्यभङ्गःस्यात्त्रैलोक्याविजयापठात् ॥२॥

ओं बहुरूपाय स्तम्भय स्तम्भय ओं मोहय ओं सर्व शत्रून् द्रावय ओं ब्रह्माणमाकर्षय विष्णुमाकर्षय ओं माहेश्वरमाकर्षय ओं इन्द्रं टालय ओं पर्वतान् चा-

ज्य ओं सप्तसागरान् शोषय ओं छिन्द छिन्द बहु रूपाय नमः ॥

भुजंगन्नाममृन्मूर्त्तिसंस्थंविद्यादरिन्ततः ॥

इत्याग्नेये महापुराणे युद्धजयार्णवे त्रैलोक्यविजयविद्या नाम चतुस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ अथसप्तत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ महामारीविद्या ॥

॥ ईश्वरउवाच ॥

महामारीं प्रवक्ष्यामिविद्यांशत्रुविमर्द्दिनीं ॥

ओं ह्रीं महामारि रक्ताक्षि कृष्णवर्णे यमस्याज्ञाकारिणि सर्व्वभूतसंहारकारिणि अमुकं हन२ ओं दह२ पच२ ओं छिन्द२ ओं मारय२ ओं उत्सादय२ ओं सर्व्वसत्ववशंकरि सर्वकामिके हुंफट् स्वाहेति ॥

ओं मारि हृदयायनमः ॥ ओं महामारि शिरसे स्वाहा। ओं कालरात्रि शिखायै वौषट्। ओं कृष्णवर्णे खःकवचाय हुं। ओं तारकाक्षि विद्युज्जिव्हे सर्वसत्व भयंकरि रक्ष२ सर्वकार्य्येषु ह्रं त्रिनेत्राय वषट्। ओं महामारि सर्वभूतदमनि महाकालि अस्त्राय हुं फट्॥

एषन्यासोमहादेविकर्त्तव्यःसाधकेनतु ॥१॥

शवादिवस्त्रमादायचतुरस्त्रन्त्रिहस्तकं ॥
कृष्णवर्णांत्रिवक्त्रांचचतुर्बाहुंसमालिखेत् ॥२॥
पटेविचित्रवर्णैश्चधनुःशूलंचकर्तृकां ॥
खट्वांगन्धारयन्तींचकृष्णाभंपूर्वमाननं ॥३॥
तस्यदृष्टिनिपातेनभक्षयेदग्रतोनरं ॥
द्वितीयंयाम्यभागेतुरक्तजिव्हंभयानकं ॥४॥
लेलिहानंकरालंचदंष्ट्रोत्कटभयानकं ॥
तस्यदृष्टिनिपातेनभक्ष्यमाणंहयादिकं ॥५॥
तृतीयंचमुखंदेव्याःश्वेतवर्णगजादिनुत् ॥
गन्धपुष्पादिमध्वाज्यैःपश्चिमाभिमुखंयजेत् ॥६॥
मन्त्रस्मृतेरक्षिरोगशिरोरोगादिनश्यति ॥.
वश्याःस्युर्यक्षरक्षाश्चनाशमायान्तिशत्रवः ॥७॥
समिधोनिंववृक्षस्यह्यजारक्तविमिश्रिताः ॥
मारयेत्क्रोधसंयुक्तोहोमादेवनसंशयः ॥८॥
परसैन्यमुखोभूत्वासप्ताहंजुहुयाद्यदि ॥
व्याधिभिर्गृह्यतेसैन्यन्भंगोभवतिवैरिणः ॥९॥
समिधोऽष्टसहस्रन्तुयस्यनाम्नातुहोमयेत् ॥
अचिरान् म्रियतेसोपिब्रह्मणायदिरक्षितः ॥१०॥
उन्मत्तसमिधोरक्तविषयुक्तसहस्रकं ॥
दिनत्रयंससैन्यश्चनाशमायातिवैरिपुः ॥११॥

रात्रिकालवर्णैर्होमाद्भंगोऽरेःस्याद्दिनत्रयात् ॥
खररक्तसमायुक्तहोमादुच्चाटयेद्रिपुं ॥१२॥
काकरक्तसमायोगाद्धोमादुत्सादनंहरेः ॥
बधायकुरुतेसर्व्वंयत्किंश्चिन्मनसेप्सितं ॥१३॥
अथसङ्ग्रामसमयेगजारूढस्तुसाधकः ॥
कुमारीद्वयसंयुक्तोमन्त्रसन्नद्धविग्रहः ॥१४॥
दूरशङ्खादिवाद्यानिविद्ययाद्याभिमन्त्रयेत् ॥
महामायापटंगृह्यउच्छ्रेतव्यंरणाजिरे ॥१५॥
परसैन्यमुखोभूत्वादर्शयेत्तंमहापटं ॥
कुमारीभोजयेत्तत्रपश्चात्पिण्डंचभ्रामयेत् ॥१६॥
साधकश्चिन्तयेत्सैन्यम्पापाणमिवनिश्चलं ॥
निरुत्साहंविभग्नंश्चमुह्यमानंचभावयेत् ॥१७॥
एपस्तम्भोमयाप्रोक्तोनदेयोयस्यकस्यचित् ॥
त्रैलोक्यविजयामायादुर्गैवंभैरवीतथा ॥१८॥
कुलिकाभैरवोरुद्रोनारसिंहपटादिना ॥
इत्याग्नेयेमाहापुराणेयुद्धजयार्णवेमहामारीनाम
सप्तत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ अथचत्वारिंशदाधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ वश्यादियोगाः ॥

॥ ईश्वरउवाच ॥

वश्यादियोगान्वक्ष्यामिलिखेद्द्वाष्टपदेत्विमान् ॥
भृंगराजःसहदेवीमयूरस्यशिखातथा ॥१॥
पुत्रंजीवकृतञ्जलीह्यधःपुष्पारुदन्तिका ॥
कुमारीरुद्रजटास्याद्विष्णुक्रान्ताशितोऽर्कंकः॥२॥
लज्जालुकामोहलताकृष्णधस्तुरसंज्ञिता ॥
गोरक्षःकर्कटीचैवमेषशृङ्गीस्नुहीतथा॥३॥
ऋत्विजो१६वन्हयो३नागाः८पक्षौ२मुनि३मनू१४
शिवः११वसवो८दिक्१०रसा६वेदा४ग्रह९ऋतु६रवि
१२चंद्रमाः१ ॥४॥
तिथयश्च१५क्रमाद्भागाओषधीनांप्रदक्षिणं ॥
प्रथमेनचतुष्केणधूपश्चोद्वर्त्तनंपरं ॥५॥
तृतीयेनाञ्जनंकुर्यात्स्नानंकुर्य्याच्चतुष्कतः ॥
भृंगराजानुलोमाच्चचतुर्द्धालेपनंस्मृतं ॥६॥
मुनयोदक्षिणेपार्श्वेयुगाद्याश्चोत्तराःस्मृताः ॥
भुजगाःपादसंस्थाश्चईश्वरामूर्ध्निसंस्थिताः॥७॥
मध्येनसार्कराशिभिर्धूपःस्यात्सर्वकार्य्यके ॥
एतैर्विलिप्तदेहस्तुत्रिदशैरपिपूज्यते ॥८॥

धूपस्तुषोडशाद्यस्तुगृहाद्युद्वर्त्तनेस्मृत: ॥
युगाद्याश्चाञ्जनेप्रोक्तावाणाद्या:स्नानकर्म्मणि ॥९॥
रुद्राद्याभक्षणेप्रोक्ता:पक्षाद्यापानकेस्मृता: ॥
ऋत्विग्वेदर्त्तुनयनैस्तिलकंलोकमोहनं ॥१०॥
सूर्य्यत्रिदशपक्षैश्चशैलै:स्त्रीलेपतोवशा ॥
चंद्रेन्द्रफणिरुद्रैश्चयोनिलेपाद्वशा:स्त्रिय: ॥११॥
तिथिदिग्गुनवाणैश्चगुटिकातुवशंकरि ॥
भक्ष्येभोज्येतथापानेदातव्यागुटिकावशे ॥१२॥
ऋत्विग्ग्रहाक्षिशैलैश्चशस्त्रस्तम्भेमुखेधृता ॥
शैलेंद्रवेदरंध्रैश्चअङ्गलेपाज्जलेवसेत् ॥१३॥
वाणाक्षिमनुरुद्रैश्चगुटिकात्क्षुत्तृपादिनुत् ॥
त्रिषोडशदिशावाणैर्लेपात्स्त्रीदुर्भगाशुभा ॥१४॥
त्रिदशाक्षिदिशानेत्रैर्लेपात्क्रीडेच्चपन्नगै: ॥
त्रिदशाक्षेशभुजगैर्लेपान्स्त्रीसूयतेसुखं ॥१५॥
सप्तदिङ्मुनिरंध्रैश्चयुतजिह्वस्त्रलेपत: ॥
त्रिदशाक्ष्यब्धिमुनिभिर्ध्वजलेपात्रतौसुत: ॥१६॥
ग्रहाद्रिसर्पत्रिदशैर्गुटिकास्यात्वशंकरी ॥
ऋत्विक्पदस्थितौपथ्या: प्रभाव: प्रतिपादित: १७
इत्याग्नेयेमहापुराणेयुद्धजयार्णवेषोडशपदकानाम
चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्याय: ॥

॥ अथद्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्याय ।

॥ मन्त्रौषधादिः ॥

॥ ईश्वरउवाच ॥

मंत्रौषधानिचक्राणिवक्ष्येसर्व्वप्रदानिच ॥
चौरनाम्नोवर्णगुणोद्विघ्नोमात्राश्चतुर्गुणाः ॥१॥
नाम्नाव्दतेभवेच्छेषश्चौरोऽथजातकंवदे ॥
प्रश्नेयेविषमावर्णास्तेगर्भेपुत्रजन्मदाः ॥२॥
नामवर्णैःसमैःकाणोवामेऽक्षिणविषमैःपुनः ॥
दक्षिणाक्षिभवेत्काणस्त्रीपुन्नामाक्षरस्यच । ३॥
मात्रावर्णाश्चतुर्निघ्नावर्णपिण्डेगुणेकृते ॥
समेस्त्रीविषमेनास्याद्विशेषेचमृतिःस्त्रियाः ॥४॥
प्रथमेरूपशून्येऽथप्रथमेम्रियतेपुमान् ॥
प्रश्नेसुक्ष्माक्षरैर्गर्हाद्रव्यैर्भागेऽखिलेमतम् ॥५॥
शनिचक्रंप्रवक्ष्यामितस्यदृष्टिपरित्यजेत् ॥
राशिस्थःसप्तमेदृष्टिश्चतुर्दशशतेद्विका ॥६॥
एकद्वादृद्वादशम पाददृष्टिश्चतंत्यजेत् ॥
दिनाधिपः प्रहरभाक्शेषायामर्द्धभागिनः ॥७॥
शनिभागन्त्यजेद्यद्वेदिनराहुंवदामिते ॥
रवौपूर्वेऽनिलेमंदेगुरौयाम्येऽनलेभृगौ ॥८॥
अग्नौकुजेभवेत्सौम्येस्थितेराहुर्बुधेसदा ॥

फणिराहुस्तप्रहरमैशेवन्हौचराक्षसे ॥९॥
वायौसंवेष्टयित्वाचशत्रुंहंतीशसन्मुखं ॥
तिथिराहुंप्रवक्ष्यामिपूर्णिमाग्नेयगोचरे ॥१०॥
अमावास्यावायवेचराहुःसन्मुखशत्रुहा ॥
काद्याजान्ताःसन्मुखेस्युःसाद्यादान्ताश्चदक्षिणे ११
शुक्लेत्यजेतकुजगुणान्धाद्यामान्ताश्चपूर्वतः ॥
याद्याहान्ताउत्तरेस्युस्तिथिदृष्टिंविवर्जयेत् ॥१२॥
पूर्वाश्चदक्षिणास्तिस्रोरेखावैमूलभेदके ॥
सूर्यराश्यादिसंलिख्यदृष्टौहानिर्जयोऽन्यथा॥१३
विष्टिराहुंप्रवक्ष्यामिअष्टौरेखास्तुपातयेत् ॥
शिवाद्यमंयमाद्वायुंवायोरिन्द्रंततोऽम्बुपं ॥१४॥
नैर्ऋताच्चनयेचंद्रंचन्द्रादग्निंततोजले ॥
जलादीशेचरेद्राहुर्विष्ट्यासहमहावलः ॥१५॥
ऐशान्यांचतृतीयादौसप्तम्यादौचयाम्यके ॥
एवंकृष्णेसितेपक्षेवायौराहुश्चहन्त्यरीन् ॥१६॥
इन्द्रादीन्भैरवादींश्चब्रह्माण्यादीन्ग्रहादिकान् ॥
अष्टाष्टकंचपूर्वादौयाम्यादौवातयोगिनी ॥१७॥
'यांदिशंवहतेवायुस्तत्रस्थोघातयेदरीन् ॥
दंष्ट्रीकरणमाख्यास्येकण्ठेबाह्वादिधारिता। १८॥

पुष्योभृताकाण्डलक्ष्यंवारयेत्शरपुङ्खिका ॥
तथापराजितापाठाद्वाभ्यांखड्गंनिवारयेत् ॥१९॥
ओं नमो भगवति वज्रशृङ्खले हन२ ओं भक्ष२ ओं खाद ओं अरे रक्तं पिव कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्मांगि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रपाकारांनेचिते पूर्व्वां दिशं बन्ध२ ओं दक्षिणां दिशम्बन्ध२ ओं पश्चिमां दिशम्बन्ध२ उत्तरां दिशम्बन्ध२ नागान् बन्ध२ नागपत्नीर्बन्ध२ ओं असुरान् बन्ध२ ओं यक्षराक्षसपिशाचान् बन्ध२ ओं प्रेतभूतगंधर्वादयो ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्ष२ ओं उर्ध्वं रक्ष२ अधा रक्ष२ ओं क्षुरिक बंध२ ओं ज्वल महाबले घटि२ ओं मोटि२ सटावलिवज्राग्निवज्रप्राकारे हुं फट् ह्रीं हूं श्रीं फट् ह्रीं हः फूं फें फः सर्व ग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्व दुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्ष२ ॥
ग्रहज्वरादिभूतेषु सर्व्वकर्मासु योजयेत् ॥
इत्याग्नेये महापुराणे युद्धजयार्णवे मंत्रौपधादिर्नाम द्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥

सदहु उपरथी एम समजवामां आवशे के तंत्र अने पुराणोनी भाइवांदि छे. सारांश हिंदुस्थानमां साची विद्यानो आरंभ थयो. भाषा, औषधी, ग्रह, तर्क, संबधी शास्त्रोनो विद्वान लोकोए पायो घाल्यो. एटलामा संपत्तिनी अंधाधूंदमां मूळना सत्य शोधक जे विद्वान हता ते गया पछि, तेमनी संतति, तोफानी अने पाखंडी थई. अने तेमणे सत्य खोळवानुं अने दृष्ट पदार्थनो उपयोग जाणवानुं काम छोडी दिधुं. अने असत्य, पाखंड, अने दंभनो डंको वगाडयो. अने जुठा, मंतर जतर, अज्ञानी लोकोने छेतरवाने वास्ते मनकल्पनाथी, लखवानु काम शरु कर्युं, अने ते उपर कोटयावधी ग्रंथ रच्या. तेमां अनेक कल्पित, जुठा, नुतना मंत्र, अने तंत्र, अने पाखंडी क्रिया, बतावी तेथी लोकोनुं मन सत्य अने सृष्ट पदार्थ उपरथी नाशी गयुं. शानु अग्नि स्तंभन ? ए खरु होय तो, विमा करवानी शी जरुर ? उच्चाटन, खरु होय तो, आटला जाहाज अने वाहाणो अने रेलवेनी शि जरुर ? सैन्य स्तंभ--सेनानी स्तंभ, जयवाद, इत्यादि उपायथी सैन्यनो नाश थतो होय, अने जय मळतो होय, तो आटली तोपो, अने बंदुको, अने कवायतो, शावास्ते राखवी पडे ? एक मंत्रशास्त्रीने साथे राखिये तो दश पलटणो नाशी जाय. भारत वैष्णवी ग्रंथ छे, तेमां पण अस्त्र अने मंत्र प्रयोग लख्याछे. त्यारे भारतना पेहेलां ए बद्धो रस्तो चालतो हशे. अने पदार्थ विज्ञान, अने सत्य शोध डुबी गयाथी, घणो काळ गयो, तेथी हिंदु लोकोनी पडती थई. आवा तुफानमां, हिंदुलोक गर्क थया, ते अरसामां अन्यदेशना लोक परमेश्वरनी कृपाथी, सत्य शोध करवा लाग्या, तेमणे यत्रुळयंत्र उत्पन्न

कर्युं, तेथी वाहाणो चालेछे, वणतर, टंकसाळ, खांड करवानुं, पाणी काढवानुं इत्यादिक, मनुष्य शक्तिथी, अने जनावरनी शक्तिथी, न थाय एवां कामों चालेछे. अने तेथी व्यापारनुं रुप फरी गयुं. रोजगार गयो. परदेशनी सामग्रि खाइने, हिंदुलोक हतदर्प, हतलक्ष्मी, हतगर्व, हतराज्य, हतऐश्वय, हतसंपदा थइने, हजारवर्षथी रह्याछे. युद्धनी कुशळता, अने शस्त्रो नवा निकळ्या, तेथी सर्व राजा अपजय पामीने, धूळमां गया. ब्राह्मण, अने मंत्र शास्त्रि, ग्रहणमा अने, मसाणमां जप करता रह्या. अने ओरडिमां देवीनुं पूजन अने ध्यान करता रह्या. लोकोनी अक्कल जति रही, शु मानवु, अने शु न मानवु, तेनो आधार रह्यो नहि. राजा, मंत्रशास्त्रिने खोळता फरेछे सिद्धि हात आवशे ए उमेदथी अनुष्टानो करावेछे, आवा तुफानमा द्रव्यनो व्यय थायछे, त्यारे खरे कामे लगाडवा वास्ते, भाग रह्यो नहि. नवा ग्रंथ लखवाने, पैसो नथी, विद्या भणवाने, पैसो नथी, मोटां यांत्रिक कारखाना करवाने वास्ते पैसो नथी, परदेशमा जवाने, पैसो नथी, सुधारो करवाने पैसो नथी. वरघोडाने वास्ते पैसो छे, वरो करवाने पैसोछे, यात्रा करवानेछे, मंदिरोमां अर्पण करवाने, ब्राह्मण जमाडवा वास्तेछे. राजाने घेर पण एज प्रमाणे निरुपयोगी खर्च करवाने वास्ते पैसोछे, निशाळ स्थापवाने वास्ते, पैसो नथी. सारा माणसने पगार आपवाने पैसो नथी, लुच्चा लुटि खायछे तेमने वास्ते छे. मुर्ख मश्करा, नीच लोकोने वास्ते, छे. ए प्रमाणे सर्व देशनी स्थिति हिमालयथी ते कंन्याकुमारी सुधि एक सरखीछे. ते प्रमाणे दरीद्र थयेछे. त्यारे आपणे शु करवू ? आ पाखाडि, तूतना, ख्याल मुकी देवा. अने सत्य अने प्रमाणथी जे वात सिद्धछे, अने जे पदार्थ जोवामा

आवेछे, तेना अनुभवथी जे गुण मालुम पडे ते खरा, बाकि बद्दु तुफानछे तेनो आश्रो करवो नहि. धर्मशास्त्र पण जे आपणने कनडतु होय ते काढि नाखवूं. लग्न समंधी रीत भात, परदेशमां जवानि रीत, विधवा विशे क्रूर नियम, जेथी लोकोने दुःख थायछे ते काढी नाखवां. अने तेने बदले बीजा करवा. प्राचीन कालथी एम करता आव्याछे. कलियुग चाल्यूं त्यारे केटलाएक नियम फेरवी नाख्या. असलनो धर्म आज एक सोमे भागे चालतो नथी. त्यारे विद्वान विचारवंत लोक ज्यांहां सुधि देशमां हता, त्यां सुधि ए प्रमाणे विधिनो निषेध, अने निषेधनो विधि, करता आव्या पछि मूर्ख थया, त्यारथी एम कहेवा लाग्या, के आपणाथी कशु फेरवाय नहि. एम कहिने बद्दाय बाळक के जनावर जेवा, अटकी रह्याछे. पण हाल विचार वधवा लाग्यो छे, पुस्तको वधवा लाग्यांछे, विद्या वधेछे, सर्वप्राचीन भूलो उपर प्रकाश पडवा लाग्यो छे, तेथि क्रमेकरीने एनी असर थशे, अने सारा दाहाडा आवशे एवी आशाछे. दुराग्रही, तूतपाखडना, अभिमानी मरता जायछे, अने उत्पन्न थोडा थायछे. इंग्रेज सरकारनी छाया तळे विचारनो वृक्ष वधशे, पण देशिराजानु एवु धोरण नथी, कारण केळवणी पामेलां कोई विद्वान् राजा नथी, जे छे ते केवळ अज्ञानी अने दुर्गुणी छे, तेमना तापमा विचार बळिजायछे. विद्यानु ठेकाणु नथी, तो पण आशा छे. आगळ जतां एमने पण भणवानि जरुर पडशे, एमनी संतति पण भणशे..छेक, अंधारु रहशे नहि. बहुकाळनु अंधारु ते तरत जाय नहि. सुर्योदय थतां पण धिरे धिरे, अंधारु जाय छे. त्यारे आखा देशने

वळगी पडेलु अंधारु एकदम केम जाय? पण जेटला प्रकाश थशे तेटला करवा खरा.

हिंदुस्थानमां मोटु जहर एजछे, के विचार समूळदो गयो. केटला एक नियम, केवळ मूर्खाइथी, पाळेछे. तेमां कशो आधार नथी. एवा हजारो नियम माने छे, पण कोइए नियम विषे सत् के असत् छे, तेनो विचार करता नथी. शास्त्रमां कोइ ठेकाणे ए नियमछे, के नहीं एनो तपास करता नथी. रूढी शाथी पडि? ए रूढीथी फल छे के नहि, तेनो विचार करता नथी तेज प्रमाणे अनेक रूढी, अने संप्रदाय, अने रीतभात, चाले छे पण तेनी शोध करता नथी. आंधळानी पेठे हैंडता जायछे. अनेक शंखला पोताने चहाते घडि घडिने बंधन करेलुं एवुं राष्ट्रबीजुं पृथ्वी उपर नथी. परदेशना लक्षावधी लोक आवीने आ देशमां रह्या, अने आ भूमीना खरां वारस ते भिकमागता थया, अने आ देशनी लक्ष्मी, अने संपत्ति, हजार रस्तेथी बाहेर जायछे, तेने अटकाववानी तजवीज के विचार करता नथी एवी प्रेतावस्था, पामेला लोक अन्यत्रछे, एउ जणातु नथी. जे प्रमाणे एक वासणने हजार काणां पडेछे, तेमां जल रेहेतु नथी. ते प्रमाणे हाल आ देशरूपी पात्रने काणां पडयां छे अने तेमांथी धन निकळी जायछे. पण कोई तेने अटकावतुं नथी. हवे केवी हालत जोइए के तेमां आ देश आवे तो जागृत थाय? तेनि कल्पना थति नथी. आ देशमां खरी विद्यानी वृद्धि करवानी घणी छे, खांड खावानुं जाणे छे, पण करवानु जाणता नथी. खाणो खोदवानी घणीछे, लोहोटु, तांबु, कथील, कोयला इत्यादिक उपयोगी प्रदार्थ घणाछे पण तेनो तपास कोइ करतुं नथी. मां-

लग आळसु ते मफतनुं खावानुं शिख्याछे, बीजी नातना लोक अज्ञानी छे, राजा ते करतां अज्ञानीछे, त्यारे उद्योग करवाने कोइ रह्यो नथी. ए प्रमाणे सांप्रत स्थितीछे. ग्रहस्थ लोक, व्यवहारमां जाणेछे. पण ते भट भाईथी दबाई जायछे. एवुं कोइ गाम नथी के जेमां अज्ञानी भट भाईनुं प्राबल्य नथी. ग्रहस्थ लोकोमां, हिंमत नथी. अने भट, वेदिया, शुकलने मान आपेछे, तेथी तेमने आज्ञांकित करेछे, अने पोतानु जोर वधारे वतावेछे. आ भटभाईनुं जोर नाश पामवुं जोइये. अने सद् ग्रहस्थोनुं जोर वधवु जोइए. ए लोकनो जमाव मोटो छे. निरुद्योगी देश तेमां, भिखारी वधारे होय तो, ते आश्चर्य नथी. तेथी ग्रहस्थोने ए लोक खाळेछे के हमे तमारे घेर आविये नहीं, श्राद्ध जमिये नहीं, बाळवामां आविये नहीं, एम कहे तारे ग्रहस्थोने एम लागेछे के आपाणि आवरु जशे ए नागा लोको साथे क्यांहां सुधि पहोंचिये ? माटे गमे ते गोठवण करीने, ग्रहस्थ लोकोये स्वतंत्र थवु जोईए. आवा अज्ञानी लोकोना जोरथी ज्यांहां सुधि ग्रहस्थो परतंत्रछे; त्यांहां सुधि कशो सुधारो थाय नहि. ए पण एक मोटुं कारणछे. युरोपखडना लोक ज्यांहां सुधि धर्माध्यक्ष लोकोना ताबे हता, त्यांहां सुधि कशो सुधारो थयो नहि, पण अज्ञानी अने निर्बळ रह्या. तेज प्रमाणे आ भरखंड घणा वरसथी गांडिया जेवा धर्माध्यक्षने ताबे रह्यू. तेनु फळ आ थयु के, विचार वध्यो नही. मंत्रनु महातम, भूत, पिशाचनी सत्यता, अद्भुत कथा, खोटो भूगोल, खोटुं ज्ञान, जेनो कश्यो ताळ मेळ नथी तेनो फेलावो थयो, साचि वात डुबी. धर्माध्यक्ष सर्व देशमां पोतानो स्वार्थ खोळेछे, बिजूं ए देखता नथी. तेथि एमनी बुद्धि माठी

होयछे. ग्रहस्त, मुठदिनी अकल एमना दावथी वहार पडति नथी. भट भाईनी अक्कल, तो भीखारी जेवी होय. एमने सोबत, के अभ्यास, के देशाटण नथी. शा साधनथी एमनी अकल वधे ? माटे एमनि बुद्धि अति संकोचित रहेछे. एमनामा, राजकारभार करे एवो कोइ नथी, सेनापतिपणु करे एवो नथी, यात्रिक कारखाना चलावे एवो नथी. त्यारे शा कारणथी एमने पूजवा ? माटे ग्रहस्थोना हुकम प्रमाणे एमणे चालवु जोइए. ए वात वाजवीछे. पण ए वात कोइ दाहाडे ए गर्वीष्ट लोक मानवाना नथी. माटे जेमने नुकसान थायछे तेमणे विचार करवो जोइए. सामो विचार करसे ए आशा राखवी नहीं.

तंत्रमां जेवा तोफानो जंत्र मंत्रना छे, ते घाटना पुराणमा पणछे. ज्योतिष वैद्यकना ग्रथमा पण एवा तोफानो घणाछे. कथा इतिहासना ग्रथमा पणछे. एनुं कारण, असलना जेटला धर्म तेमा क्रूरता, निर्दयपणु वधारेछे. अन्य देशना धर्म पण असलना वखतमा एवाज हता. अग्नि बाळि नाखेछे ए जोईने लोकोने एवी भ्राति थई के ए खानार देवछे. अने बीजा देव पण खानाराछे ते एना मुखथी खायछे. अन्य देव पण खाउ खाउ करनारा रुधिरने चाहनारा महा उग्र तेमने जनावरो माणसो आपिने संतुष्ट करवा जोइये. होम करवानो चाल असलथी पडेलो तेनुं कारण देव कोइनो मित्र के बाप नथी पण गाइकवाडि कामदार जेवो लोभि अने नाश करनारो एवो छे तोये तेने आपिने संतुष्ट करवो एवी कल्पनाथी होम चालु थयो. पण होम करवो ए मुर्खाइछे. प्रथम द्रव्य नाश उत्तम पदार्थ बाळि नाखवा अने लोभि भिखारी भक्षक देवनि कल्पना करवी. ए कल्पना अयोग्यछे एवु मालम पडवाथी भूक

तृत करीने देवोनी प्रसन्नता मेळववानो धर्म एटले कर्मकांड मुकीने शुष्क अने लुखा वेदांत उत्पन्न थयो तेथी कायर थयाथी सुंदर रूपनु भंजन उत्पन्न थयु पण खरी कल्पनाथी दुर रह्या. अने अनेक भक्तोने अनेक देव उत्पन्न कर्या. महिमन स्तोत्रमां लख्युछे के:—

रूचीनांवैचित्र्यदृजुकुटिलनानापथजुषां ॥
त्रयीसांख्ययोगंपशुपतिमतंवैष्णवमिति ॥

मुंबई सरकारे बुक नंबर ३९ भाग २ जामां मनुष्यवध अने बाळहत्या विशे सरकारमां काम चालेलुं ते सबधि कागळ पत्र छाप्याछे. तेमां मुंबईना गवरनर साहेब हानरेबल डंकनने कर्नेल वाकर वडोद्राना रेसिडेंट साहेबे तारिख १६ मार्च १८०८नो रीपोर्ट कर्योछे. तेमां कलम २०८ छे तेना ताजा कलममां पाने ३६ मे कराडा ब्राह्मणोनि मनुष्यबळि करवानी चाल विशे सविस्तर लख्युछे. एवि चाल घणे ठेकाणे हिंदुस्थानमां हति, ते बंध करवाने घणो प्रयत्न सरकारे कर्यो छे. नागपूर जबलपूर गुमसुर परगणामां खोंड लोकछे मनुष्यबळी करेछे. ते एम समजेछे के आवो बळी कर्या विना वरसाद पडे नहीं. पाक सारो थाय नही. माणसने बांधिने तेना उपर हजारो माणस हथीयारो लेईने तेना अंगना ककडा काढी लेछे एने मेरियां पूजा कहेछे. सति बाळवानि चाल हति तेना दाखला १८१५थी १८२४ सुधि राख्यो छे. ते उपरथी ए नव वर्षमां ६६३२ विधवा बळि मुइ. मोटां मोटां काम इमारतो बांधतां ते वखत मनुष्य दाटता अने वास्तुना ग्रंथमां पण बळी करवा वास्ते लख्युछे. हिंदुस्थान, ने गुजरात, ने काठियावाड, कछ, इत्यादि प्रांतमां कन्याने दुध पिति करता. केटलेएक ठेकाणे

मारवानो चाल बंध पड्योछे पण छोकरा अर्पण करेछे. पुना पासे जे, जुरीछे तांहां खंडोबा देवछे तेने पुत्र अने पुत्रियो अर्पण करेछे त्यार पछि तेमनु नाम वाघ्या अने मुरळी पाडेछे. ए प्रमाणे कोंकणमां भाविणियो करेछे. तुळजापूरमां भूत्या करेछे. केटलेएक ठेकाणे पडिमरवानि जगा हति सत्यशृंगी देविना डुंगर उपर अने शूल पाणि महादेव पासे डुंगर उपरथी कुदि मरता आ विगेरे एवी जगाओ घणीछे. आज केटलाएक ठेकाणे जिवता दाटेला पुरुषोनि कबरोछे. अमदावादमां भिमनाथमां अने दुधेश्वर पासे वेचराजिमां एवी समाधियोछे. सप्तऋषिना आरा उपर एवी समाधी एक बावाए थोडा वर्ष उपर लिधि ते विशे माजिस्त्रेट आगळ काम चाल्यूं. पण तेनो पत्तो पड्यो नहीं हाल केटलाएक बकरा देवने बतावी माहाजनमां छोडि देछे एवा उत्सर्ग पक्षथी पण बळी करनारा घणा छे. खंडालानो घाट रेलवे कंपनीए बांध्यो ते वखत एवी वात चालती हती के कंपनी माणसना बळी करेछे, ते उपर केटलाएक मजुरदार लोक नाशी गया, देवने बळि जोइए ए सर्व साधारण वातछे केटलेएक ठेकाणे कालुबाइनि स्थापना छे, ते ठेकाणे जिवता पाडाने बांधिने तेनुं काळजु काढीने नैवेद्य करेछे. वाइ तालुका जिल्हा सतारामां मौजे खावलि गाम छे ते ठेकाणे ए प्रमाणे थायछे. पाडानि जातर तो गामो गाम करेछे. कांई पण रोग के अनावृष्टी थाय तो पाडो देवीने अर्पण करेछे. अने हजारो माणस ए जनावरना पछवाडे हथीयार लेईने पडेछे अने जखमी करी करीने तेनु लोही वह्यी शीममां हलके हलके पाडेछे. आ प्रमाणे सांज सुधी ए घायल अने जखमी जनावरने दोडावेछे. आखेर एने मारिने नैवेद्य

करेछे. एनु नाम जातर लक्ष्मीकार्य, विगेरे कहेछे, अने तेथि सर्व देवी अने देव तृप्त थया एम समजीने खुशी थायछे. ए प्रमाणे क्षेत्रवाई, नाशिक इत्यादि ठेकाणे मोटी ब्राह्मण वस्तिछे तो पण जात्रा करेछे. इग्लंडमां असलना धर्माध्यक्ष द्रुइड करीने हता ते मनुष्य बळि करता. तेज प्रमाणे रूममां अने ग्रीस देशमां पण नरमेध हता. घणा लोक एम समजेछे के देव अने देवीयो बहु नडेछे, व्याधि उत्पन करे छे वृष्टि रोकेछे, ते बधू खावाने वास्ते. एमनि तृप्ति अन्यथी यति नथी अन्न माणसनु भक्ष्यछे, पण मांस देवोनो आहारछे, ते आप्या विना तृप्ति थाय नहीं, एवी अज्ञानी अने शास्त्र भणेलानी पए समजण छे.

तंत्र अने पुराण विगेरेमां जेवा जंत्रमंत्र छे, ते प्रमाणे वेदमां पण छे–तेना दाखला थोडा नीचे लख्याछे.

ऐतरेयब्राह्मणअष्टमपंचिकाखंड २८

अथातोब्रह्मणः परिमरोयोहवैब्रह्मणः ॥
परिमरंवेदपर्यनंद्विषंतोभ्रातृव्यःपरिसपत्ना्म्रियंते ॥
यद्यस्यात्समूर्धाद्विषन्भवतिक्षिप्रंहैवैनंस्तृणुतेस्तृणुते॥
इत्यैतरेयब्राह्मणेऽष्टमपंचिकायांपंचमोऽध्यायः ॥

खंड १० पंचिका ८

नयतिहतांसेनांयद्युवाएनमुपधावेत्संग्रामं ॥
तैत्तिरीयेआरण्यक ४ प्रवाठक ३७ अनुवाक्॥
तत्सत्यंयदमुंयमस्यजंभयोः ॥
आदधामितथाहिततूखणूफणूत्रसि ॥

३९ अनुवाक

उत्तुदशिमिजावरी ॥ तल्पेजेतल्पउत्तुद ॥
गिरीङरनुप्रवेशय ॥ मरीचीरुपसन्नुद ॥
यावदितःपुरस्तादुदयातिसूर्यः ॥
तावदितो॒ऽमुन्नाशय ॥ या॒ऽस्मान्द्वेष्टि ॥
यच्चवयंद्विष्मः ॥

अर्थः—ब्रह्मणः परिमर आ अनुष्ठानथी राजाना सर्व शत्रु मरण पामेछे. एना अंग उपर पाषाणनु बखतर होय तोपण ते रहेवानुं नथी.

आ मंत्र जपे तेनो शत्रु सैन्य पराभव थाय अने फतेह मळेछे.

महावीर नामनो यज्ञ करीने शत्रु नाशनार्थ मंत्र भणवो के मारो शत्रु यमना दांतमा जाय.

शमिजावरीनुं झाड शत्रुनी पथारि तळे दाटवु तेथी शत्रु तरत मरि जायछे.

एज प्रमाणे आश्वलायन सूत्रमां श्येन पक्षिनो यज्ञ विघन नामनो यज्ञ लख्योछे, तेने, अभिचार कर्म कहेछे अभिचार एटले शत्रुने मारवा विषे अनुष्ठान. ते सूत्रो निचे लख्याछे.

श्रौत सूत्र अश्वलायन.

अ० ९ कं० ७

श्येना जिराभ्यामभिचरन्यजेत ॥१॥
विघनेनाभिचरन् ॥२२॥

क० ८

अभिचरन्यजत ॥२०॥

अज्ञानी लोकोने प्रथम अनेक देवनी कल्पना थायछे. परमेश्वर सृष्टिनो सर्जनहार एकछे ए निश्चय बहु विचार करतां मात्र थायछे ते प्रमाणे अनेक देवनी उपासना बहु काळ सुधि हिंदु लोकोए करी पछि षड्शास्त्र कर्ता अने उपनिषद बाधनारा थया त्यारे परमेश्वर एकछे, एवो निश्चय थयो. परंतु प्राचीन जथो भारे ते तोडि सक्या नहीं. अनेक देव, अनेक देवियो, अने तेमना वंश विस्तारनु भजन चाल्यू त्यारे ब्राह्मण लोकोए एनूं प्रसिद्ध कर्यूं के ते सर्व देवोना मंत्र अमारे पासेछे. देवोनो स्वभाव एवोछे के ते सर्वदा मत्रना ताबामा रहेछे तेथि पोतानु अद्भुत सामर्थ्य लोकोमा प्रसिद्ध कर्युं. लोकोए ए वात जेम जेम मानी तेम तेम मंत्र गुप्त राख्या. वैदिक हिंसा उत्पन्न थई तेनुं कारण एज के देवोने भक्ष आपवो जोइए. जे लोक अज्ञानी छे ते वेद शिवाय पण प्राकृत रीते हिंसा करेछे. तेमणे जलमा स्थळमां सर्वत्र देवज देव देखायछे सतारामा राजवाडा आगळ राजानि होळी बाळे छे ते मोटी विशाळ करेछे अने तेमा जिवतो बकरो नांखेछे. ए चाल घणा गाममां पण छे. हवे विधितो कशो नथी कोई ठेकाणे एवो सजीव बकरो बाळवानुं लख्युं नथी. पण अज्ञानी लोक एमज जाणेछे के एम करता देव तृप्त थशे. अने आपणुं कल्याण थशे एवी प्राकृत हिंसा घणी छे. जे वखत देवना आगळ बकरो वध करवाने लावेछे ते वखत केटलाएक एम कहेछे के मारता पहेला तेनो जीव देव लेइ जायछे माटे ते मार्यानुं पाप नथी. नाळीएर के कोळु ज्यारे

देय आगळ फोडेछे त्यारे तेने वधेरवु कहेछे एनुं कारण एज छे के जनावरना बदल लोक लज्जाथी ते फोडेछे तोपण जनावरनो ख्याल मुकता नथी माटे वधेरवु आ शब्द बोलेछे, वैदिक हिंसा करनार अने प्राकृत हिंसा करनार ए बन्नेनो विचार एकज छे, फक्त देवना नाम जुदा छे, अने विधानो जुदा छे. एकमा अग्निषोमदेव अने बीजामां मेलडीमाता के कालकामाता आवे, एकमां वैदिक मंत्र अने बीजामां लवारो, पण धोरण एकज छे. ज्यारे एक परमेश्वर छे एम ते माणसना मनमां आवेछे त्यारे भक्ष, आपवानी विगेरे कल्पना रहेती नथी. कारण परमेश्वरनुं ऐश्वर्य सच्चिदानंद पूर्णपर ब्रह्म रुपनुं ध्यान करता भक्षादिकनी कल्पमा समुळगी नाश पामेछे. कारण परमेश्वर आपणो माबाप जेवो कृपाळु अने मित्र एम समजवामां आवेछे. त्यारे नकामा अने क्षुधातुर देवनी कल्पना क्यांथी रहे ?

यंत्र चिंतामणी नामनो ग्रंथ काशीक्षेत्रमां छापीने प्रसिद्ध थयोछे, तेमां पण धूर्तपानो हुनर घणो छे तेमांना केटलाएक प्रकरण नीचे लख्यांछे. तेमां यंत्रनी करामत अद्भुत शक्ति लखीछेः–

एकदादेवदेवेशंदृष्ट्वादेवीशुचिस्मिता ॥
उपगम्यशनैर्वाक्यंप्रोवाचजगदंबिका ॥२॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देवदेवजगन्नाथकरुणाकरशंकर ॥
वर्णाश्रमांश्चधर्मांश्चसंदेहाश्चममप्रभो ॥३॥

श्रुतंसर्वंमयात्वत्तःसर्वज्ञोसियतःस्वयं ॥
मंत्राणांविनियोगस्तुयंत्राणांनिर्णयस्तथा ॥४॥
तथैवागमभेदेषुउदितोहिनसंशयः ॥
एवंद्विजाश्चमंत्रज्ञादृश्यंतेक्लेशभागिनः ॥५॥
पाखंडिभिःपराभूतानास्तिकैर्वेदनिंदकैः ॥
विनामंत्रैर्नपैद्दोमैरक्लेशेनमहाप्रभो ॥६॥
तत्क्षणाज्जायतेसिद्धिः सुसिद्धासर्वकामदा ॥
मारणोच्चाटनाकृष्टौविद्वेषस्तंभनेतथा ॥७॥
अभिचारेषुसर्वेषुकाम्यार्थेषुचसर्वदा ॥
विवादेषुविपादेचरणेवैरिजयेतथा । ८॥
एतत्सर्वंयथादेवसिध्यर्थंसाधकस्यहि ॥
विचार्यदेवदेवेशरहस्यंपरमंवद ॥९॥

॥ श्रीशिवउवाच ॥

देवाचारोमयाप्रोक्तोऋषीणांतुमहात्मनां ॥
शिवधर्मस्तुमुक्तानांवैष्णवानांतुवैष्णवः ॥१०॥
सौरंसांख्यंमयाप्रोक्तंबहूनांसिद्धिमिच्छया ॥
शाक्तंचबहुधाप्रोक्तंभैरवंबहुधाप्रिये ॥११॥
धर्मकामार्थमोक्षाणांज्ञानंचैवप्रकाशितं ॥
रहस्यंगोपितंभद्रेसर्वत्रापिनसंशयः ॥१२॥
रहस्यहीनोमंत्रस्तुध्यानेनापिविशेषतः ॥

नसिध्यतिवरारोहेकल्पकोटिशतैरपि ॥१३॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

प्रसादंकुरुदेवेशसुखोपायंवदस्वमे ॥
रहस्यंसुखबोधंचसद्यःप्रत्ययकारकं ॥१४॥
विनाहोमेनजाप्येनपुरश्चरणसेवया ॥
कलौतुसिध्यतेदेवतथोपायंवदस्वमे ॥१५॥

॥ श्री शिवउवाच ॥

साधुसाधुमहाप्राज्ञेलोकानांहितकारके ॥
इदमित्थंनकेनापिपृष्टोहंपद्मलोचने ॥१६॥
शृणुष्वैकाग्रचितात्वंरहस्यंक्षणसिद्धिदं ॥
कल्पंचिंतामणिंनामगुह्याद्गुह्यतमंमहत् ॥१७॥
एतत्कल्पंसदायस्यलिखितंविद्यतेगृहे ॥
संपूज्यतेप्रतिदिनंप्रभावंतस्यवैशृणु ॥१८॥
अल्पमृत्युभयंनास्तिनास्तिचौरभयंतथा ॥
भूतप्रेतपिशाचानांप्रभावोनैवजायते ॥१९॥
राजवश्यंमहायंत्रंशृणुदेविसुशोभितं ॥
कांस्यभाजनमानीयशुद्धंभस्मादिभिः कृतं ॥२०॥
जातीकाष्ठेनविलिखेद्रोचनाचंदनेनच ॥
साध्यनामलिखेन्मध्येवर्तुलंवेष्टयेत्ततः ॥२१॥
योपिद्वापुरुषोवापिदृत्तानिश्चयसंयुतः ॥

किंकराइवर्ततेसर्वेवशीभूताः सदैवाहि ॥२३॥
अतःपरंप्रवक्ष्यामियंत्रंत्रैबीजसंपुटं ॥
राजवश्यकरंश्रेष्ठंजनवश्यकरंतथा॥२४॥
एकपंक्तौसमालेख्यंह्रींकाराणांचतुष्टयं ॥
ह्रींकारपुटितंपश्चात्साध्यनामलिखेदधः ॥२५॥
तद्यंत्रंमुष्टिमावध्यगछेद्वैराजमंदिरं ॥
तत्कोपंशमयत्याशुवशीकरणमुत्तमं ॥२६॥
अथातः संप्रवक्ष्यामिविवादविजयंनृणां ॥
यंत्रंकुर्यात्प्रयत्नेनसर्वलोकमनोहरं ॥२७॥
मध्येनामलिखित्वातुवर्तुलंवेष्टयेत्ततः ॥
चतुर्दलंसमायुक्तंबीजयुक्तंतुमानवः ॥२८॥
धूपैर्दीपैःसुनैवेद्यैःपुष्पैर्नानाविधैःशुभैः ॥
त्रिलोहवेष्टितंयंत्रंदुग्धमध्येक्षिपेत्ततः ॥२९॥
ततोगछेद्विवादार्थंजयेन्नास्त्यत्रसंशयः ॥
विवादविजयंनामयंत्रंदेवैःप्रपूजितं ॥३०॥
यदामहाबलः शत्रुर्घातकर्तुंहिवांछति ॥
तदात्मानुकूल्यर्थंयंत्रंकुर्वीतकंटकं ॥३१॥
साध्यनामलिखेन्मध्येवर्तुलंवेष्टयेत्ततः ॥
ईकारश्चयकारश्चविसर्गांतश्चतुर्दिशं ॥३२॥
एकैकंतुलिखित्वातुवर्त्तुलंवेष्टयेत्ततः ॥

स्मशानभस्मनालेख्यमर्कपत्रद्वयोपरि । ३३
कंटकाख्यंमहायंत्रंदुष्टमोहनकंपरं ॥
स्वशक्तयादक्षिणांदद्यात्कालरात्रिःसुप्रीयतां ॥३४॥
शृणुदेविप्रवक्ष्यामियंत्रंवन्हिनिवारणं ॥
यस्मिन्गृहेस्थितंयंत्रंतत्रनाग्निभयंक्वचित् ॥३५॥
यस्यहस्तेसदातिष्टेद्यंत्रराजंमनोहरं ॥
स्वप्नेप्यग्निभयंतस्यकदाचिन्नोपजायते ॥३६॥
श्रीखंडरोचनहिमेनतुलेखनायंयंत्रंतुभूर्जे
विधिवतुविस्तृते ॥
नामस्वकीयंतुविलिख्यमध्येसुवेष्टयेद्वृतुंल
रेखयातथा ॥३७॥
अग्नेःसकाशाद्भीतिर्यासास्मात्क्वापिनजायते ॥
ब्राह्मणंभोजयेदेकंयंत्रराजस्यतुष्टये ॥३८॥
अतः परंप्रवक्ष्यामियंत्रंशत्रोस्तुमारणं ॥
एतद्यंत्रंसुसंलेख्यंकपालेतुनरस्यच । ३९॥
स्मशानांगारकंचूर्ण्यधत्तुरकरसेनतु ॥
स्मशानेचैवसंलेख्यंचतुर्दश्यांमहानिशि ॥४०॥
विवस्त्रेणनिः शंकेनएकाकीयंत्रमुत्तमं ॥
मध्येनामलिखित्वातुलिखेत्म्लम्लितथोपरि ४१
उपरिज्वालयेन्नूनंरात्रौरात्रौशुचिस्मिते ॥

एवंकृतेतृतीयेन्हिशत्रोःसंजायतेज्वरः ॥४२॥
क्रमेणैवमहाव्याधिस्ततोवैमरणंभवेत् ॥
एकजीवंबलिंदत्वा उद्धृतेजीवतेहिसः ॥४३॥
नोचेद्यमपुरंयातिनात्रकार्याविचारणा ॥
इतियंत्रचिंतामणौमारणाधिकारेशत्रुमरणं ॥४४॥
अथातः संप्रक्ष्यामिमारणंदूरदेशजं ॥
श्मशानांगारकंघृष्यअंजारकंतथैवच ॥४५॥
विपंचैवतुसंघृष्यलिखेन्नरकपालके ॥
संपुटंचैवसंलेख्यंलेखन्याकाकपिछया ॥४६॥
तस्मिन्नेदक्षणेशत्रोर्मरणंजायतेप्रिये ॥
अनुग्रहेतुपुर्वोक्तंविधानमितिनिश्चितं ॥४७॥
अथातःसंप्रवक्ष्यामिशत्रोरुच्चाटनंपरं ॥
स्वस्थानामिकरकेनभूर्जपत्रेवरानने ॥४८॥
गंगणपतीतिजान्नीहिप्राहितंप्रणवादिकं ॥
एकपंक्तौसमालेख्यंहुंगंनामविलिख्यच ॥४९॥
उच्चाटयेदत्रनसंशयोस्तिदिनैस्तथैकाधिक
विंशकेन ॥
अयंक्रमोलेखनपूजनेचसर्वत्रउच्चाटकृता
धिकारो ॥५०॥
खंडंकृत्वातुतद्यंत्रमुच्छिष्टोदनमिश्रितं ॥

दीयतेभक्षणार्थंचवायसेभ्योतिमेदिने ॥५१॥
शृणुदेविप्रवक्ष्यामित्रैलोक्योच्चाटनंपरं ॥
कृष्णकुक्कुटरक्तेनभूर्जपत्रेलिखेन्नरः ॥५२॥
साध्यनामालिखित्वातुत्रिकोणंवेष्टयेत्ततः ॥
पुनस्त्रिकोणंसंलिख्यद्वितीयंतुवरानने ॥५३॥
परितोवर्तुलंकृत्वापूजयेत्पूर्ववत्पुनः ॥
एवंकृत्वातुतद्यंत्रंभार्याचशुनोगले ।५४॥
यथायथाश्वानजातितथासोपिक्षणेनहि ॥
उच्चाटयेन्नसंदेहस्तत्क्षणात्स्करस्कंदरि ॥५५॥
अथातः संप्रवक्ष्यामिबालानांशांतिकारकं ॥
यंत्रंरक्षाकरंश्रेष्ठंसर्वोपद्रवनाशनं ॥५६॥
पूर्वोक्तविधिनालेख्यंद्रव्यैः पूर्वोदितैः क्रमात् ॥
भूर्जपत्रोपरिदेविपूर्वोक्तविधिनार्चनं ॥५७॥
अथातः संप्रवक्ष्यामिसर्पात्संरक्षणंपरं ॥
सर्पादिभिर्यथाबालः प्रौढोवापिविशेषतः ॥५८॥
मध्येनामलिखित्वातुवर्तुलंतुद्विरेखया ॥
संवेष्टयचदलान्यष्टौहंसः बीजयुक्तान्पृथक् ॥५९॥
प्रमादात्पतितेपादेतिष्ठंतिस्तंभिताध्रुवं ॥
अभदष्टः प्रमादेनविषेनैवाधिरोहति ॥६०॥

सर्पाणांस्तंभनार्थाययंत्रंगरुडभाषितं ॥
इतिशांत्य०सर्पस्तंभनंनाम १० यंत्रं ॥६१॥
अथातःसंप्रवक्ष्यामिडाकिनीत्रासनंपरं ॥
भूतप्रेतपिशाचाद्यैर्डाकिनीब्रह्मराक्षसैः ॥६२॥
यदायस्तोनरःकोपिनारीवाबालकोपिवा ॥
तदायंत्रंप्रकुर्वीतत्रासार्थंभूतरक्षसां ॥६३॥
खडिकयालिखित्वातुखर्परेनूतनेशुभे ॥
चतस्रस्तिर्यगारेखाऊर्ध्वास्ताःपंचरेखिताः ॥६४।
रुदंतंचमहाभूतंवेपमानंपलायते ॥
तत्क्षणाद्बालकंत्यक्त्वादेशत्यागेनगच्छति ॥६५॥
अथातःसंप्रवक्ष्यामिभवबंधविनाशनं ॥
निर्वाणपदयोर्ज्यंहिनिर्वेदपददायकं ॥६६॥
षट्कोणस्यतुमध्येतुसाध्यनामप्रतिष्ठितं ॥
निःसारसंपुटंकृत्वाभूर्जपत्रेसुविस्तृते ॥६७॥
ज्ञानयोगंसमासाद्यमुच्यतेनात्रसंशयः ॥
पितृमित्रकलत्रेपुनिर्मोहःसंप्रजायते ॥६८॥
यंत्रप्रतिष्ठाकर्वैतुदेयंनिष्कचतुष्टयं ॥
तदर्धंतुतदर्धंवायथाविभवविस्तरं ॥६९॥
वित्तसाठ्यंपरित्यज्ययथोक्तफलमाप्नुयात् ।

प्रीणयेन्मंत्रिणंसम्यक्विभवैः प्रतिमानसः ॥७०॥
मंत्रीयदिनसंतुष्येदनर्थोधारणाद्भवेत् ॥
इतियंत्रलेखनपद्धतिः ॥७१॥

इति यंत्र चिंतामणो नाम्नि महा कल्पे प्रत्यक्ष सिद्धे उमा महेश्वर संवादे दामोदर पंडितोधृते अष्टा धिकार समाप्तः ॥

सदरहु प्रमाणे मत्र, तंत्र, अने यत्र इत्यादिक कल्पित जुठा प्रकार छलीने ब्राह्मण, बावा, जति वीगेरे लोकोए आखा देशने धुती लीधो. त्रिकोण यंत्र, पंचकोण यंत्र, छकोण यत्र, आठ पांखडीनुं यंत्र, सोळ पाखडीनुं यंत्र, नव त्रिकोणनुं श्रीयंत्र, इत्यादिक जनावरना लोही थी के गोरु चदनथी लखे अने स्मशानमां तेनी पुजा हवन करे तो माणसने मारी नाखे, बीजे ठेकाणे उडाडी दे, लश्करनो नाश करी नांखे; एटलुंज नहीं, पण मोक्ष जनुं होय तो एक यंत्र लखेतो बसछे. ए प्रमाणे यंत्रचिंतामणीमां लख्युछे. एवा टुचका उपर भोळा लोक बहु श्रद्धा राखेछे. वैरा, श्रावक लोको, राजा, अने ठाकोर लोको पासे कोटे, कम्मरे, अने हाथे तावीजो अने तेमां घालेला यंत्रो घणा होयछे. मंदवाड आवे, के पिरनार नहोय तो यंत्र अने तावीजो खोळता फरेछे. आ सर्व धुनवानी विद्या छे, अने अज्ञानी लोकोने छे तरवाने वास्ते आ विद्या धुनारा लोके मोटा मोटाना नामथी रचीछे.

आ विद्यामां कशुं सत्य नथी एवु तत्ववेत्ता कहेछे. ठग तो एवु बोले नहीं. माटे बधा बावा, जति, इत्यादिक जे मंत्रशास्त्री कहेवाय छे, अने जे वे भमर बचे कुंकुमना शाक्त तिलक विगेरे चिन्हथी ओळखाय छे, ते सर्वनी प्रार्थना बदाय लोकोए एमज करवी घटे छे के महाराज हमे तमारे वास्ते बहु दुःख भोगव्युं. जन्मथी मरण सुधी तमारा घणा आकरा कर भर्या अने भरियेछैए. तमे घणा नीच थई कुकर्ममां सामील थइने हमने छेतरवा वास्ते घणी तजवीज करी. तमारा घरडा लोकोए उपयोगी विद्या थोडी साधन करी, तर्क, व्याकरण, औषधी, ग्रह, नक्षत्रनु ज्ञान हमने आप्युं, ते उपकार वाळवाने वास्ते तमने हरएक टाणे खवरावीए छीए. तमारो आदर सत्कार करीयेछीए. तमारी बरदास्त राखीयेछीए. हमारा उपर तमारी सत्ता स्थापन थइ एम समजीने तमारुं सत्य शोधननुं कर्म तमे मुंकी दीधुं, अने तोफान उठाव्युं. अज्ञान, पाखंड, अने दंभनी वृद्धि करी एवा तमे खराब निकळ्या, अने हजार तरेहथी हमने छेतरोछो, कनडोछो, हमारु ज्ञान वधे एटले तमारा घराक ओछा थशे, एम समजीने हरेक सुधारामां तमे आडा अने आडाज पडोछो. आज सुधी हमे मुर्ख अने तमारा गुलाम हता तो चाल्यु ते ठीकज चाल्युं; पण हवे परदेशना लोके आवीने हमने घणा वाकफगार कर्या, तेथी हमे तमारी छेतरवानी विद्याने ओळखता थया. त्यारे तमे हवे दया करीने हमने मुंकी द्यो, छेतरशो नहीं. जुनी तमारी करेली नकामी विद्या

मुकी द्यो अने हमारी मेळे हमे सारे मार्गे चढीये तो हमने खाळशो नहीं. हमारी अने तमारी वधारे फजेती न करशो एटलुंज तमारी पासे मागीये छैए.



जणाती नथी. श्रीमद् भागवतमां शैवमतनी निंदा छे पण ए पुराण मुख्य पुराणमां गणेलुं नथी माटे तेनो आधार शैवमतना लोक लेता नथी, कदापी एम कल्पना करीए के पुराण पेहेलां थएलां अने त्यारपछी आगम थएला तो तेनी निंदा पुराणमां आवेज नहीं. आगमनो पत्तो शंकराचारजी सुधी लागेछे, त्यारपहेलां आगम हता के नहीं ए संशय रहेछे. दंतकथा एवी छे के शंकराचार्य कौलमतना हता तेथी तेमनी आज्ञा गुजरातमां कोइए मानी नथी. पछी शंकराचार्यना मठमां कौलमतनो बहु विस्तार थयो ते कारणथी रामानुज आचार्य थया तेज प्रमाणे वलभाचार्यना मंदीरमां गोकुल क्रीडा अने रासरंग बहु वध्यो तेथी स्वामिनारायण आचार्य थया तेमणे एवो धारो बांध्यो के स्त्री अडकेतो अपवास करवो, ए प्रमाणे ज्यारे जुनो मत बगडेछे त्यारे तेनो सुधारो करी नवो मत दाखल करवा नवा आचार्यो थायछे. स्वामिनारायणनी शिक्षापत्रीमां एवुं लख्युंछे के बधाय ब्राह्मणे गृह्य सूत्र प्रमाणे आचार पाळवो पण तेमां शुं छे ए ते वखत जाणवामां नहोतुं—ए जाणवामां होततो एम् लखत नहीं. तेज प्रमाणे वेदादिकनी प्रशंसा जे करीछे ते पण तेनो अर्थ तपासीने करेली नहीं. ए तपास शाक्यमुनी जेने बौध्य अवतार कहेछे तेणे मात्र करेलोछे. जेम जेम काळ उतरतो आव्यो तेम तेम विद्वान पण ओछा रह्या. वेदनो अर्थ जोइने कोई बोलतो नथी, जाण्या विना बोलवानी हालना ब्राह्मणोने बहु टेव पडीलेछे.

बधाय एम कहेछे के वेद अमारो धर्म पुस्तक छे. मंत्रशास्त्र खरु छे. भागवतमां पण प्रथम श्लोकमां एम कहेछे के:—

निगमकल्पतरोर्गलितंफलं ॥

एटले वेद वृक्षनुं फल तेज भागवत छे. पण खरू कहिये तो वेदने अने भागवतने घणुं अंतर छे. वेदमां मुख्य धर्म यज्ञयाग छे, तेनी निंदा भागवतमां छे. प्राचिन बर्हिराजाए घणा यज्ञ कर्या, तेने नारदजीए उपदेश कर्यो के हिंसा मिश्रित अनुष्ठानथी कशुं फळ नथी. ए प्रमाणे छतां वेदनुं ब्रह्म भागवत कहेछे. एथि एम जणायछे के, प्राचीन काळथी जे पुस्तक उपर दृढ श्रद्धा थई तेनी निंदा न करता युक्तिथी नवो धर्म चलावो, तेथी ते लोकोने मान्य थशे एवी बुद्धिथी ग्रंथ रचेलाछे. तेज प्रमाणे स्वामिनारायणना वचननो अर्थ समजवो जोइए. एक श्लोकमां गृह्यसूत्र प्रमाणे वर्तवु एम लखेछे. बीजे ठेकाणे लखेछे के हिंसा वर्ज करवी. हवे गृह्यसूत्रमां दस ठेकाणे हिंसानो प्रसंग आवेछे, त्यारे गृह्यसूत्र प्रमाणे आचार करता हिंसा वर्ज केम थशे ? ए बेनो मेळ शो ? आंधळा लोक छे तेने जेम बतावो तेम हा, कहेशे पण जे तपास करीने पुछशे तेने उत्तर शुं आपड ?

शंकराचार्यस्वामीनो अने श्रावकनो सवाद थयो ते निगम प्रकाशमां दाखल छे. शंकरस्वामीए जे निर्णय कह्यो ते खरो अने वेदार्थ प्रमाणे कह्योछे. आ काळना पंडितो ते शंकरस्वामी करता वधारे विद्वान हशे ते गमेतेम कहे पण ते खरु न कहेवाय.

निगम विशे आ तकरार थई पण आगम विशे पण घणी तकरार छे बीजा भागमां जे ग्रंथ दाखल कर्याछे ते एवा खराब छे के कोई शिष्ट माणस पासे एनो अर्थ कराय नही के वंचाय नही, एवु अमंगळने घणु दुट छे; पण घणा ब्राह्मण अग्निहोत्रिशास्त्री, पंडित, ..

आवा ग्रंथने धर्म समजेछे अने गुप्त राखेछे. तेनो स्पष्ट प्रकाश थवाने वास्ते ते वचनो प्रसिद्ध कर्याछे. पुनामां कृष्णेंद्रस्वामी अने रामतीर्थ स्वामी ए बे परमहंस सन १८४४ मां आविने शाक्तमत बहु चलाव्यु अने तेमना बहु शिष्य थया. कृष्णभट गोखले करीने एक वैष्णव ब्राह्मण हतो तेणे वेर बांधिने बधायने ज्ञात बाहेर मुक्या, ते वेर घणा वर्ष सुधी चाल्यु तेमां केटलाएक पंडितो शाक्त मार्गवाळा तरफ रह्या. तेमां मुख्य त्रिंबकशास्त्रि शाळग्राम जेणे सात यज्ञ कर्या हता अने वेद अने श्रौत अने षड्शास्त्र एने सारि पेठे मालुम हता, अने कांई पण शास्त्रार्थ पुछवानो होय तो आखा दक्षणमा एने पुछता. जेवो सुरतमां दीनमणीशंकर नागर गुजरातमां पंकाएलो तेवो ए दक्षणमां हतो तेणे पण ज्ञात बाहेर मुक्यो. पछी ए शास्त्रिने लोके एम कह्युं के आगमशास्त्र खोटुं छे एम तमे लखी आपो, ते वात तेणे मान्य करी नही. ते मरणात लेणे टेक राखी. शिवोक्तशास्त्र छे तेने हुं खोटुं केहेनार नथी एम कहिने जन्म सुधी ज्ञात बाहेर रह्यो. ए वात दक्षणमां प्रसिद्ध छे ते आ ठेकाणे लखीछे. खरु कहिये तो वैदिक धर्ममां केटलीएक क्रियाओ एवी छे के ते क्रिया वाघी के कसई पण करवाने शरमइ जाय अने आगम धर्मनी केटलीएक क्रिया एवी छे के कसबण पण करवाने शरमइ जाय. एज कारणथी आ बन्ने धर्मना पुस्तको गुप्त राखवामां आवेछे: गुप्त राखवाने बीजु कारण जणातुं नथी. बौद्धधर्म उत्पन्न थयो ते दहाडाथी कळी उत्पन्न थयो अने जुना पुस्तको दाबी मुकवानी जरुर पडि. हालना ब्राह्मण ए वात स्पष्ट कबुल करता नथी पण बिजे रिते बोले छे पण ते वात खरी

नथी. एउ, जे पुस्तको तपासिने पोतानी खात्रि करशे तेनी ध्यानमां आवशे. ब्राह्मणोने पुछतां ए वातनो पत्तो पडवानो नथी. कारण के घणाएक ब्राह्मण तो विद्वान नथी, ते पंडचेज समजता नथी, ने घणा ग्रथ ए अवलोकन करता नथी ' अने बीजुं कारण खरी वात कहेता पोतानी निंदा थाय ते करवाने ते चहाता नथी.

आगमशास्त्र विषे केटलाक साधु ग्रंथकार थया तेमनो अभीप्राय नीचे दाखल कर्योछे—कारण के तेओ स्वार्थि नहोता अने स्वतंत्र हता माटे तेमनो अभीप्राय वांचवा लायक छे.

निश्चळदास नामनो एक दादुपंथी साधु दिल्लिप्रांतमां थयो तेने विचारसागर नामनो ग्रंथ हिंदुस्थानी भाषामां कर्यो तेमां सर्व मत संग्रह छे तेना सात तरंग छे. ते ग्रंथ मुबइमां छापिने प्रसिद्ध थयोछे तेना सातमा तरंगना २१८ मा पानाथी शाक्त धर्मनुं वर्णन कर्युंछे ते नीचे लख्युंछे ते उपरथी तेनो अभिप्राय जणाशे.

परंतु देवीकी उपासना के बोधक ग्रंथनमैं दो संप्रदायहैं॥ एक दछिण संप्रदाय दूसरी उत्तर संप्रदायहै॥ उत्तर संप्रयायकूं वाम मार्गकहैहै॥ तिनमैं दछन संप्रदायकी रीति सैंजिन ग्रंथमैं देवीका उपासना है॥ सोतो धर्मसास्त्रकै अंतरभुतहै॥ और वाममार्ग जिन ग्रंथनमैंहै॥ सो धर्मसास्त्रसैं विरुद्धहै॥ यातैअ प्रमाणहै॥ यद्यपि वामतंत्र शिवनै कीयाहै॥ तथापि सकल साश्र औ वेदसें विरुद्धहै प्रमान नहीं॥ जैसैंविष्णुके

बुद्ध अवतारनै नास्तिक ग्रंथ कियेहै॥ सो वेद विरुद्ध हैयातैं प्रमान नही॥ तैसैं शिवकृत वामतंत्र वी अत्यंत विरुद्धहै॥ मदिरादिक अत्यंत असुद्ध पदार्थ नकातामैं ग्रहण लिप्याहै॥ और उत्तम पदार्थनके जो नाम है॥ सोई मलिन पदार्थनके नाम लोक वंचनकै निमित क हैहै॥ मदीराका नाम तीर्थ॥ मांसका नाम शुद्ध॥ मदिरा पात्रका नाम पद्मा॥ प्याजका नाम व्यास॥ लसुनकानाम सुकदेव॥ मदिराकारी कलालका नाम दीछीतक हैहै॥ तैसैं वेस्या सेवी चर्मकारी आदिक चांडाली सेवीकूं प्रागसेवीका सीसेकहैहै॥ और भैरवी चक्र मैंस्थित जो चांडालादिकहै॥ तिनकूं ब्राह्मण क- हैहै। औ अत्यंत व्यभिच्यारिणी कूयोगिनी औव्यभि चारीकूंयोगीक्त हैहैं॥ अैसैं अनेक प्रकारसैं निषिद्ध तिनका व्यवहारहै।। पूजनकैं समै अनेक दोपवती स्त्री कूं उत्तम सक्ति कहैहै॥ जातिकी चांडाली अति व्य- भिचारिणी॥ रजस्वला स्त्रीकूं देवी बुद्धिसैं पूजनकरैहै ताका उछिष्ट मदिरापान करैहै॥ और अधिक मदि- रा पानसैं जो वमन करिदेवो। ताकूं पृथिवीमैं नहीगिर नैदवैहै॥ किंतु आचार्य सहित दूसरे सावधान भक्षन करैहै। वमनकूं भैरवी कहैहैं॥ और स्त्रीकी योनिमैं

जिव्हा लगायकै मंत्रनका जप करैहै ॥ मदिरा१ मांस२ मत्स्य ३ मुद्रा ४ मंत्र ५ इनपंचमकारनकूं भोग मोछनिमित सेवन करैहै॥ प्रथमा द्वितीयादिक तिन मकारके अप्रसिद्धना मनतैंव्य वहारकरैहै॥ इसतै आदिलेकै वामतंत्रका सकल व्यवहार॥ इसलोकतै परलोकतै भ्रष्ट करैहै॥ इसी कारणतै कर्णछेदी योगीऔ अवधूत गुसाई॥ तैसैं अनेक संन्यासी॥ औ ब्राह्मणादिक वाममार्गकूं सेवन करैहै॥ तौबी लोक वेदनिंदत जानिकै गुप्त रावैहै॥ अधिकक्यकहै वामतंत्रकी रीति सुनिकै॥ म्लेछकै वीरोमांच होयजावै॥ ऐसा निंदत वामतंत्रहै॥ सर्वंगीजो अभछन करैहै॥सो सारे निंदित मार्ग वामतंत्रमैं कहैहै॥ अति नीच व्यवहार लिपनै योग्य नहीं॥यातैं विशेप प्रकार लिप्या नही॥ सर्वथा वामतंत्र त्यागनै योग्यहै॥तैसैं नास्तिक मत वीत्यागनै यौग्यहै ॥

तुकारामबाबा करीने एक कुणबी साधु पुना पासे देहुगाम छे ते ठेकाणे थयो तेणे अभग रच्याछे ते दक्षणमां बहु मान्यछे ते अभगनो मत मुंबइमां गणपत कृष्णजीना छापखानामां छापीछे तेना पहेला पुस्तकना २७६ मा पाना उपर शाक्त धर्म विशे अभगछे तेमाना १२३८, १२३९, १२४०, १२४१, १२४२, १२४३ ए नंबरना अभंग नीचे लख्याछे ते उपरथी ए साधुनो अभिप्राय जाणवामां आवशे.

ऐकाकलीचेंहेंफळ ॥ पुढेंहोईलब्रह्मघोळ ॥१॥
चारीवर्णअठरायाती ॥ भोजनकरितीयेकेपंक्तीं ॥२॥
पूजीतीआसुरीरांडा ॥ मद्यप्राशीतीलंडा ॥३॥
वामकवळमार्जन ॥ जनजाइलअधःपतन ॥४॥
तुकाहरिभक्तिकरी ॥ शक्तिपाणीवाहेघरीं ॥५॥

शाक्तगधडाजयेदेशीं ॥ तेथेंराशीपापाच्या ॥१॥
सुक्ताचाउद्दोकेला ॥ गोंधळघालाईंद्रीयें ॥२॥
क्रोधरूपेंवसेकाम ॥ तिचेंनामजपतसे ॥३॥
मद्यभक्षणमांगिणयाती ॥ विटाळचित्तींसांठवीला ॥४॥
खउनियांपूजीरांड ॥ नलगेभांडदाढीसी ॥५॥
तुकाम्हणेभगवंति ॥ नेइलअंतींआपणायें ॥६॥

राजाप्रजाद्वाडदेश ॥ शाक्तवासकरीतितो ॥१॥
अधर्माचेंउघडपीक ॥ धर्मरंकतेगांवीं ॥२॥
नपीकेभूमिकांपेभारे ॥ मेघवारेपीतील ॥३॥
तुकाम्हणेअवर्षादुःखे ॥ येतिमुखेंवस्तीसी ॥४।

ऐसेकलियुगाच्यामुळें ॥ झालेंकर्माचेंवाटोळें ॥१॥
सांडुनीयांरामनाम ॥ ब्राह्मणम्हणतीदोमदोम ॥२॥
शिवोनयेतीनिर्ळी ॥ वस्त्रेंपांघुरतीकाळीं ॥३॥
तुकाम्हणेवृत्ती ॥ सांडुनिगदामागतजाती ॥४॥

अन्यापापेंभडलायेक ॥ उपासकन्याकीचा ॥१॥
त्याचावीटाळनकोअंगा ॥ पांडुरंगामाझिया ॥२॥
कामक्रोधमयाअंगीं ॥ रंगलारंगींअवगुणी ॥३॥
करितांपापनधरीशंका ॥ म्हणेतुकाकोणीही ॥४॥
वारितांवळेंधरितांहातीं ॥ जुलुमेंजातीनरकामधीं ॥१॥
रंडिदासाप्रतीकांहीं ॥ उपदेशतोहीचालेना ॥२॥
जन्मगेलावाताहत ॥ घोरघातयेठाईं ॥३॥
तुकाम्हणेपंढरिनाथा ॥ तुझीकथादूषिती ॥४॥

आगम प्रकाश ग्रंथ अमदावादना बे शास्त्रीने तपासवा वास्ते आप्यो हतो तेमणे शाक्त धर्म विशे विस्तार पूर्वक खंडन कर्युं नथी. पण टुंकामां पोतानो अभिप्राय लख्योछे ते पण निचे दाखल कर्योछे.

आ ग्रंथना पहेला अने बीजा भागमां जे ग्रंथना श्लोक लखीने बतलाव्या छे, ते केवळ अधर्म छे ए पाखड छे, ने सत्पुरुषने आचरण करवा योग्य नथी, ने कोई सारा माणसने ए आचरवुं नहीं. ए केवळ दुष्ट नरकमां पडवानुं साधन छे.

लि० शास्त्री. सेवकराम रामनाथ,
दस्कत पोताना.

जे सेवकराम शास्त्री लखेछे ते मतने हु सर्व रीते मळतो छुं.

लि० शास्त्री. गंगाशंकर जयशंकर,
दस्कत पोते.

भाग ४ थो सपूर्ण.

अनुक्रमणिका.

भाग २ जो.

कौलार्णव.

श्यामारहस्य.

देवीरहस्य.

कालि सहस्रनाम.

उत्तर ज्ञानार्णव तंत्र.

रासोल्हास तंत्र

कौलरहस्य.

कुल चांद्रिका.

रुद्रयामल.

भाग ३ जो.

परिशिष्ट.

उड्डामर तंत्र.

दत्तात्रेय तंत्र.

अग्निपुराण.